ॐ

राम-वर्षा

भाग १

—:o:—

प्रकाशक

श्री रामतीर्थ प्रतिष्ठान,

(सन् १९६० के ऐक्ट २१ के अन्तर्गत पंजीकृत)

१४, मारवाड़ी गली

लखनऊ

—:o:—

१९७८

राम-वर्षा

भाग १

प्रकाशक

श्री रामतीर्थ प्रतिष्ठान, लखनऊ
(सन् १८६० के ऐक्ट २१ के अन्तर्गत पंजीकृत)

**१४, मारवाड़ी गली,
लखनऊ**

१६७८

[सप्तम संस्करण, संख्या २०००]

मूल्य ६.२५ पैसे

प्रकाशक :
रामतीर्थ प्रतिष्ठान,
१४–मारवाड़ी गली,
लखनऊ–१

मुद्रक
लखनऊ पब्लिशिंग हाउस,
लखनऊ

सप्तम् संस्करण की भूमिका

राम बादशाह के भजनों का संग्रह रामवर्षा भाग (१) का सप्तम् संस्करण राम प्रेमियों की सेवा में प्रस्तुत है। इसमें स्वामी जी की कविताओं और पदों के अतिरिक्त उन्हीं के चुने हुए अन्य महात्माओं की रचनाएं भी सम्मिलित हैं––यों कहा जा सकता है कि भक्ति भाव तथा भगवत् प्रेम की मदिरा से लबालब यह प्याले हैं जिनको पान कर हर व्यक्ति सहज ही में अध्यात्मिक प्यास मिटा सकता है और अनमोल निधि का अधिकारी हो सकता है।

जिज्ञासुओं के लिए वेदान्त की इससे बढ़कर विचारोत्तेजक तथा सुन्दर और सरल व्याख्या कदाचित अन्यत्र सुलभ नहीं। सारांश यह कि इन पदों के पठन-पाठन तथा मनन और चिन्तन के द्वारा जन साधारण ज्ञान की वृद्धि के अतिरिक्त आध्यात्मिक सुख और खुदमस्ती का आनन्द लाभ कर सकते हैं।

पिछले संस्करण में जो अशुद्धियाँ थीं उनको ठीक करने का प्रयास किया गया है––काग़ज़, आर्ट पेपर, कार्ड कवर के दामों तथा छपाई से सम्बंधित अन्य ख़र्चों की निरन्तर वृद्धि के कारण हमें पुस्तक के मूल्य बढ़ाने के लिये विवश होना पड़ा–जिसके लिये खेद है। आशा है कि पाठकगण इन कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए इसे सहर्ष अपनाकर अनुग्रहीत करेंगे।

रामकृष्ण लाल
सहायक मन्त्री

१५–७–७८
रामतीर्थ प्रतिष्ठान
१४, मारवाड़ी गली
लखनऊ

चतुर्थ संस्करण की भूमिका

आत्मा के केवल परोक्ष ज्ञान से हृदय में शान्ति और निजानन्द की प्राप्ति नहीं होती, किन्तु उसके अपरोक्ष ज्ञान अर्थात् आत्मसाक्षात्कार से ही होती है। और यह आत्मसाक्षात्कार केवल पुस्तक-अध्ययन या वाद-विवाद से प्राप्त नहीं होता, किन्तु उसी आत्मज्ञान के श्रवण, मनन और निदिध्यासन के नित्य जारी रखने से स्वतः प्राप्त होता है। इसीलिये श्रुति बार-बार इस भाव को स्पष्ट रूप से ऐसे कहती है—

"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।"

अर्थ—आत्मा साक्षात्कार करने योग्य, सुनने योग्य, मनन करने योग्य और निदिध्यासन करने योग्य है।

इस आत्मज्ञान के श्रवण, मनन और निदिध्यासन का सुगम और सरल उपाय तत्त्व-विचार तथा निजानंद के भजनों का नित्य सुनना व गाना है। प्रथम तो भजन की मधुर ध्वनि ही गाने वाले और श्रोता के चित्त की वृत्तियों को बाहर से हटाकर अन्तरमुख व एकाग्र कर देती है। दूसरे यदि ध्वनि के साथ-साथ भजन के अर्थ भी स्मरण होते जायँ तो चित्तवृत्ति स्वतः आत्मध्यान में लीन वा परमानन्द से पूर्ण हो जाती है। बिना भजन के अन्य विधि से उक्त फल शीघ्र और सुगमता पूर्वक प्राप्त नहीं होता। बल्कि कहना पड़ता है कि पूर्व ऋषियों व ब्रह्मवेत्ताओं को प्रायः इसी विधि से शीघ्र आत्मानुभव प्राप्त हुआ था। यही कारण है कि वेद, शास्त्र, रामायण, गीता, ग्रंथ साहिब, इत्यादि अनेक ग्रंथ, जो मस्त पुरुषों द्वारा उच्चारण हुए व लिखे गये हैं, सबके सब छन्दों, पद्यों, स्वरों, रागों, और भिन्न-भिन्न प्रकार की ध्वनियों से पूर्ण हैं।

मस्तपुरुषों के उपदेशों का छन्दों, मन्त्रों, पद्यों, स्वरों और गीतों में बहना वा लिखे जाना इसलिए भी है कि बड़ा फैला हुआ ख्याल कविता या मंत्र में थोड़ी जगह घेरता है, मानों समुद्र एक कूजा में बन्द हो जाता है। पर यह हाल गद्य का नहीं है। इसलिए सरल इबारत से कही बात दिल पर वैसी चोट नहीं करती जैसी की कविता वा गीत।

चूंकि तत्वचिन्तन के भजनों और स्वर भरे रागों और छन्दों के गायन से चित्त पर भारी प्रभाव पड़ता है, जिससे चित्तवृत्ति आत्म-ध्यान में शीघ्र लीन हो जाती है, इसलिए ऐसे रागों व भजनों से पूर्ण पुस्तक की अत्यावश्यकता समझ कर सबसे पहले एक पुस्तक "रामवर्षा" के नाम से उर्दू भाषा में रची गई थी, जिसके तीन संस्करण आज तक निकल चुके हैं और चौथा इस वर्ष निकलने वाला है। उसी पुस्तक का उल्था हिन्दी अक्षरों में करके सबसे पहले सन् १९११ में श्रीनाथजी नाथू भाई, प्लीडर व मालिक गणात्रा यन्त्रालय, राजकोट (काठियावाड़) द्वारा छपाया गया। तत्पश्चात् उसका दूसरा संस्करण सन् १९२१ में परमहंस श्री स्वामी रामतीर्थ जी महाराज के भक्तों से स्थापित संस्था "श्री रामतीर्थ प्रतिष्ठान लखनऊ" द्वारा प्रकाशित किया गया। और ईश्वर को धन्यवाद है कि इसी बीच तीसरा संस्करण समाप्त होने पर इसी पुस्तक के चौथे संस्करण को प्रकाशित करने का भी सौभाग्य इस प्रतिष्ठान को प्राप्त हुआ। यदि पाठक गण, विशेषतः रामप्यारों में, इस संस्करण का वितरण जोर से हुआ, तो आशा है कि बहुत शीघ्र ही संस्करण समाप्त हो जायगा, और प्रतिष्ठान फिर इससे भी बढ़-चढ़-कर पांचवा संस्करण निकालने का प्रयत्न करेगा।

इस संस्करण में परमहंस स्वामी रामतीर्थजी महाराज के वैराग्य व मस्ती भरे समस्त भजन दिये गये हैं। इनके अतिरिक्त अन्य लेखकों के अनेक भजन भी हैं जो स्वामी जी महाराज की नोट बुकों में पाये गये या गुरु ग्रन्थ साहिब इत्यादि प्रसिद्ध पुस्तकों से उद्धृत हैं। इन भजनों में से जो भजन स्वामी रामतीर्थजी महाराज की अपनी लेखनी से बहे हुये हैं उनके आरम्भ में ऐसा चिन्ह * दे दिया गया है, जिससे पाठकों को पता लग जाय कि अमुक भजन स्वामी राम का है और अमुक अन्य का। कठिन-कठिन भजनों का पंक्ति-वार अर्थ भी साथ दे दिया गया है जिससे पाठक गण को कठिन भजनों के समझने में दिक्कत न हो।

यह संस्करण दो भागों में विभक्त हैं। प्रथम भा

गाने वाले भजन हैं, और दूसरे भाग में वेदान्त के भिन्न-भिन्न विषय ग्रन्थों में पिरोये हुये हैं, जो प्रायः कविता के रूप में हैं। प्रथम भाग के भजन आठ अध्यायों अर्थात् १ मंगलाचरण, २ गुरुस्तुति, ३ उपदेश, ४ वैराग्य, ५ भक्ति, ६ आत्मज्ञान, ७ ज्ञानी और ८ त्याग में विभक्त हैं। दूसरे भाग के भजन विविध विषयों के पाँच प्रकरणों (१ वेदान्त २ माया ३ शरीर और वर्ण, ४ निजी अनुभव और ५ भारतवर्ष) में विभक्त है । दूसरे भाग में पहले तीन प्रकरणों के भजन तो सबके सब स्वामी रामजी की लेखनी से बहे हुये हैं। और पिछले दो प्रकरणों के भजन सबके सब दूसरे लेखकों के हैं। देश-भक्ति के प्रचारार्थ और देशभक्तों के उत्साहार्थ इस संस्करण के अन्त में भारतवर्ष विषयक बहुत से भजन भी दे दिये गये हैं।

स्वामी राम के प्रेमियों को ऐसी धार्मिक पुस्तकों के छपवाने और जनता तक पहुँचाने में पहले बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। पर जबसे राम प्रेमियों ने इसी कार्य के लिये अपनी एक संस्था "श्री रामतीर्थ प्रतिष्ठान" के नाम से लखनऊ में स्थापित कर ली है, तबसे बहुत सी कठिनाइयाँ दूर हो गई हैं, तभी से स्वामी राम के सब लेख व उपदेश हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू भाषा में क्रमानुसार निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं।

प्रतिष्ठान के उद्देश्य और संक्षिप्त नियम ये हैं :—

उद्देश्य—(क) विशेषतः ब्रह्मलीन श्री स्वामी रामतीर्थ जी के लेखों व्याख्यानों तथा जीवन चरित्र की ।

(ख) सामान्यतः उनके अनुकूल अन्य ग्रन्थों को भी भिन्न-भिन्न भाषाओं में उत्तम शैली और मनोहर रूप में, विषयों की विशुद्धता और मौलिकता की संरक्षा करते हुए प्रकाशित करना और उन्हें यथा-सम्भव सस्ते दाम पर बेचना।

नियम :—श्री स्वामी रामतीर्थ के उपदेशों के अनुयायी, अथवा उनसे सहानुभूति रखने वाले सज्जन इस प्रतिष्ठान के आजन्म संरक्षक

१०००) रुपया देने पर, आजन्म सदस्य २००) रुपया देने पर और संसर्गी २५) रुपया देने पर होंगे ।

शेष नियम प्रतिष्ठान की नियमावली मंगाकर पढ़िये

यदि राम प्यारों ने इस धार्मिक संस्था में शीघ्र प्रविष्ट होकर इसकी तन, मन, धन से सहायता की, तो हमें पूर्ण आशा है कि यह संस्था अपने उद्‌देशों को भली-भाँति पूर्ण करते हुए जनता की सेवा में पूर्णतया सफल होगी ।

ईश्वर करे पाठकों के हृदय प्रतिष्ठान की प्रकाशित पुस्तकों के अध्ययन से प्रफुल्लित, प्रसन्न और हर्षित हों, जिससे वे अपना सर्वस्व इस अति उपयोगी संस्था में अर्पण करने योग्य और उत्सुक हों । तथास्तु ।

र० स० नारायण स्वामी
(ग्रन्थ रचयिता)

पंचम संस्करण की भूमिका

स्वामी राम के मस्ती भरे भजनों की वृष्टि करके रामप्यारों के हृदय में शान्ति और निजानन्द की भावना को अंकुरित तथा पुष्पित और पल्लवित करनेवाली "राम वर्षा" का यह पांचवाँ संस्करण उपस्थित है। तीसरे व चौथे संस्करण की सब पुस्तकें खत्म हो गई थीं और छपने का आर्डर प्रेस को दे दिया गया था पर इस बीच इतनी मांग हुई कि पूरी पुस्तक एक जिल्द में न छपवाकर इसे दो भागों में विभक्त कर देने का निश्चय करना पड़ा। अतः पहले भाग में केवल आठ ही अध्याय अर्थात् (१) मंगलाचरण, (२) गुरु स्तुति, (३) उपदेश, (४) वैराग्य, (५) भक्ति, (६) आत्मज्ञान, (७) ज्ञानी और (८) त्याग दिये गये हैं। पर टिप्पणियाँ पहले से बहुत विस्तृत करके कठिन विषयों को सरल शब्दों में अच्छी तरह समझा दिया गया है। पिछले संस्करण में श्री स्वामी राम के भजनों के पहले यह चिन्ह × दिया गया था जिससे पाठकों को पुस्तक में दिये हुए अन्य महात्माओं के भजनों से राम के भजनों को अलग समझने में सहूलियत हो। पर इस बार ऐसा नहीं हुआ है। इस बार तो प्रायः सभी भजनों में राम का नाम अन्त में आ गया है। दूसरा भाग अभी प्रेस में है यदि राम की कृपा हुई तो उसे भी शीघ्र ही पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जायेगा। एक बात विशेष रूप से यह कहनी है कि कागज़ की महंगी और पुस्तक छपाई सम्बन्धी सभी चीज़ों के तिगुने चौगुने मूल्य हो जाने के कारण हमें भी रामवर्षा तथा प्रतिष्ठान से प्रकाशित होने वाली प्रायः सभी पुस्तकों का मूल्य पूर्वापेक्षा कुछ अधिक बढ़ाने के लिये विवश हो जाना पड़ा। आशा है पाठक हमारी इस विवशता के लिये क्षमा करेंगे और इसके कारण अपने राम-प्रेम में किसी प्रकार की कमी न आने देंगे।

भवदीय—रामेश्वर

विषय-सूची

मंगलाचरण

गुरु स्तुति

उपदेश

वैराग्य

भक्ति इश्क़

आत्म-ज्ञान

फ़कीरी (त्याग)



मंगलाचरण

(१)

दोहरा, राग विभास

नारायण सब रम रह्या, नहीं द्वैत की गन्ध ।
वही एक बहु[1] रूप है, पहिला बोलूं छन्द ॥१॥
कृपा सद्गुरु देव से, कटी अविद्या फन्द ।
में तो पूरन ब्रह्म हूं, द्वितीया बोलूं छन्द ॥२॥
स्वः[2] स्वरूप राम को लखूं, एक सच्चिदानन्द ।
वह मेरो है आत्मा, तृतीया बोलूं छन्द ॥३॥
स्वांस-स्वांस अनुभव करूं, राम कृष्ण गोविंद ।
सो मैं ही, कोई भिन्न ना, चौथा बोलूं छन्द ॥४॥
सा[3] स्वरूप सा मैं लख्यों, निज आनन्द मुकन्द ।
सो आनन्द में एक रस, पंचम बोलूं छन्द ॥५॥

---

१. अनेक, नाना २. सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान ३. वोही ।

(२)

राग पीलू, ताल दीप चन्दी

रफ़ीक़ों[1] में गर है मुरव्वत[2] तो तुझ से ।
अज़ीज़ों[3] में गर है मुहब्बत तो तुझ से ॥१॥

ख़ज़ानों में जो कुछ है दौलत तो तुझ से ।
अमीरों में है जाहो-सौलत[4] तो तुझ से ॥२॥

हकीमों में है इल्मो-हिकमत[5] तो तुझ से ।
ये रौनक़ जहाँ[6] की, व बरकत तो तुझ से ॥३॥

है रो कर यह तकरारे-उलफ़त[7] तो तुझ से ।
कि इतनी हो यह मेरी क़िस्मत तो तुझ से ॥४॥

मेरे जिस्मो-जाँ[8] में हो हरकत तो तुझ से ।
उड़े मा-मनी[9] की वह शिरकत[10] तो तुझ से ॥५॥

मिले सदक़ा[11] होने की इज़्ज़त तो तुझ से ।
सदा एक होने की लज़्ज़त तो तुझ से ॥६॥

उड़े टेढ़ी बाँकी यह चालाकियाँ सब ।
सिपर[12] फेंक, ढूंढूं सलामत[13] तो तुझ से ॥७॥

---

१. मित्रों, २. शील, ३. प्यारों ४. पद, मान और वैभव, ५. विद्या और बुद्धि, ६. संसार की शोभा, ७. प्रेम के झगड़े और विवाद, ८. देह और प्राण, ९. अहंकार, मैं और मेरा, १०. संयोग, ११. अर्पण, बलिदान, १२. ढाल अर्थात् रक्षा के साधन, १३, सलामती अर्थात् रक्षा ।

(३)

राग शाम कल्याण

क्या क्या रचे है भगवन् सामान[१] ! तेरी क़ुदरत ।
बदले है रंग क्या क्या, हर आन[२] तेरी क़ुदरत ॥१॥
सब मस्त हो रहे हैं, पहचान तेरी क़ुदरत ।
तीतर पुकारते हैं, सुबहान[३] तेरी क़ुदरत ॥२॥
कोयल[४] की कूक[५] में भी तेरा ही नाम हैगा ।
और मोर[४] की ज़टल[५] में, तेरा पयाम[६] हैगा ॥३॥
यह रंग सोहल्ड़े[७] का जो सुबहो-शाम[८] हैगा ।
यह और का नहीं है, तेरा ही काम हैगा ॥४॥
बादल हवा के ऊपर, घंघोर नाचते हैं ।
मेंढक उछल रहे हैं, और मोर नाचते हैं ॥५॥
बोलें बये[४] बटेरें[४], क़ुमरी[४] पुकारें कू कू[५] ।
पी पी[५] करे पपीहा[४], बगुले[४] पुकारें तू तू[५] ॥६॥
क्या फ़ाख़तों[४] की हक़ हक़[५], क्या हुदहुदों[४] की हू हू[५] ।
सब रट रहे हैं तुझको, क्या पंख[९] क्या पखेरू[९] ॥७॥
जंगल सब अपने तन पर हरयाली सज रहे हैं ।
गुल फूल झाड़ बूटे कर अपनी धज रहे हैं ॥८॥

---

१. माया, प्रकृति, २. समय, ३. पवित्र, धन्य, ४. पक्षियों के नाम, ५. पक्षियों की बोलियाँ, ६. पैगाम, संदेशा, ७. शफक, प्रातः और सायंकाल की आकाश में लाली, ८. प्रातः सायं, ९. पक्षी छोटे व बड़े ।

बिजली चमक रही है बादल गरज रहे हैं ।
अल्लाह के नक़ारे नौबत के बज रहे हैं ॥९॥
सब्ज़ों की लहलहाहट कुछ अब्र की सियाही ।
और छा रहीं घटायें सुर्ख़ औ सफ़ेद काही ॥१०॥
सब भीगते हैं घर घर ले माह ताबमाही[१] ।
ये रंग कौन रंगे तेरे सिवा इलाही ॥११॥

(४)

मुसद्दस राग बुढहँस अथवा राग बरवा ताल तीन

कहीं कैवां[२] सितारा हो के अपना नूर[३] चमकाया ।
ज़ुहल[४] में जा कहीं चमका, कहीं मिर्रीख़[५] में आया ॥
कहीं सूरज हो क्या क्या तेज़ जल्वा[३] आप दिखलाया ।
कहीं हो चाँद चमका और कहीं ख़ुद बन गया साया ॥
तू ही बातिन[६] में पिनहाँ[७] है, तू ज़ाहिर हर मकाँ पर है ।
तू मुनियों के मनों में है, तू रिंदों की ज़ुबां पर है (टेक) ॥१॥
त्यरा ही हुक्म है इन्दर, जो बरसाता है यह पानी ।
हवा अठखेलियाँ करती हैं तेरे ज़ेरे[८]-निगरानी ॥
तजल्ली[१] आतशे-सोज़ां[२] में तेरी ही है नूरानी[३] ।
पड़ा फिरता है मारा मारा डर से मर्गे-हैवानी[१०] ॥ तूही० २॥

---

१. स्वर्ग से पाताल तक, २. सातवें या सबसे ऊँचे आकाश का तारा, ३. प्रकाश, ४. शनिश्चर तारा सातवें आकाश का, ५. मंगल तारा, ६. अन्दर ७. छिपा हुआ, ८. देखभाल, आज्ञाधीन, ९. जलती हुई अग्नि, १०. पशु समान मरते समय ।

तू ही आंखों में नूरे-मर्दुमक[1] हो आप चमका है।
तू ही हो अक्ल का जौहर सिरों में सबके दमका है।।
त्यरे ही नूर का जलवा है क़तरे में जो नम[2] का है।
तू रौनक़ हर चमन[3] की है, तू दिलबर[4] जामे-जम[5] का है।।तूही०३।।
कहीं ताऊस[6] ज़र्रीं[7] बाल बनकर रक्स[8] करता है।
दिखाकर नाच अपना मोरनी पर आप मरता है।।
कहीं हो फ़ाखता[9] कू कू कि सी आवाज़ करता है।
कहीं बुलबुल ही खुद है बाग़बाँ फिर उससे डरता है ।।तूही०४।।
कहीं शाही[9] बना शहपर[9], कहीं शिकरा[9] है मस्ताना।
शिकारी आप बनता है, कहीं है आब[10] और दाना।।
लटक से चाल चलता है कहीं माशूक़े-जानाना[11]।
सनम[12] तू, ब्राह्मण, नाक़ूस[13] तू खुद, तू है बुतख़ाना[14] ।।तूही०५।।
तू ही याक़ूत[15] में रौशन, तू ही पुखराज[15] और दुर[16] में।
तू ही लाले[15] बदख़शां में, तू ही है खुद समुन्दर में।।
तू ही कोहसार[17] व दरिया में, तू ही दीवार में, दर[18] में।
तू ही सहरा[19] में आबादी में तेरा नूर नय्यर[20] में ।। तूही०६।।

---

१. आँख की पुतली की रौशनी, २. तरी, ३. बाग, ४. मनमोहन, ५. ईरान के राजा जमशेद ने पहले पहल प्याला बनाया जिसका नाम 'जाम' हुआ, ६. मोर, ७. सुनैहरे बालों वाला, ८. नृत्य, नाच, ९. पक्षियों के नाम, १०. पानी दाना, ११. प्रिया स्त्री की तरह, १२. मूर्ति, १३. शंख, १४. मंदिर, १५. रत्नों के नाम, १६. मोती, १७. पर्वत, १८. द्वार, १९. जंगल, २०. सूर्य।

(५)

राग बरवा ताल तीन

अजब हैरान हूं भगवन्! तुम्हें क्योंकर रिझाऊं मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं ॥१॥
करूं किस तरह आवाहन कि तुम मौजूद हो हर जा[1]।
निरादर है बुलाने को अगर घंटी बजाऊं मैं ॥२॥
तुम्हीं हो मूर्ती में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान् को भगवान् पर कैसे चढ़ाऊं मैं ॥३॥
लगाना भोग कुछ तुमको, यह इक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को, उसे कैसे खिलाऊं मैं ॥४॥
तुम्हारी ज्योति से रौशन है, सूरज चाँद और तारे।
महा अंधेर है तुम को, अगर दीपक दिखाऊं मैं ॥५॥
भुजाएं हैं न सीना[2] है न गर्दन है, न पेशानी[3]।
तू है निर्लेप नारायण, कहाँ चन्दन लगाऊं मैं ॥६॥

(६)

राग हिंडोल

तेरी कुदरत तू ही जाने और न दूजा जाने।
जिसनूं कृपा करे तू प्यारे सोई तुझे पिछाने ॥१॥

---

१. हर जगह, प्रत्येक स्थान, २. छाती, ३. मत्था।

तेरी सेवा तुझ से होवे और न दूजा करता ।
भगत त्यरा सोई तुध[1] भावे जिसनूं तू रंगधरता[2] ॥२॥
तू बड़[3] दाता, तू बड़ दाना और न कोई दूजा ।
तू समरथ स्वामी मेरा, हौं[4] क्या जानूं तेरी पूजा ॥३॥
तेरा महल अगोचर मेरे प्यारे ! बिखम[5] तेरा है भाना[6] ।
कहो नानक ढह[7] पिया द्वारे, रख लेव मुगध आजाना ॥४॥

(७)

हे अच्युत ! हे पार ब्रह्म ! अविनाशी अघनाश[8] ।
हे पूरन ! हे सर्वमय ! दुख भंजन गुण तास[9] ॥१॥
हे संगी, हे निरंकार, हे निर्गुण सब टेक ।
हे गोविन्द, हे गुण निधान, जाके सदा विवेक ॥२॥
हे अपरम्पर हरहरे, है भी, होवनहार ।
हे सन्ताँ के सदा संग, निर्धारा आधार ॥३॥
हो ठाकुर हौं[10] दासड़ों, मैं निर्गुण गुण नहिं कोय ।
नानक दीजे नाम दान राखो हिय[11] पियोय ॥४॥

(८)

श्लोक

ऊंचा अगम अपार प्रभु, कथन न जाय अकत्थ[12] ।
नानक प्रभु शरणागती, राखन को समरत्थ[13] ॥१॥

---

१. तुझे, २. हृदय को रंगता है, ३. बड़ा, ४. मैं, ५. कठिन, ६. भान करना जानना, ७. गिर पड़ा, ८. पाप के नाशक, ९. उसका, १०. मैं ११. हृदय में पिरोकर, हृदय के साथ, १२. अकथनीय, १३. समर्थवान ।

वासुदेव सर्वत्र में ऊन[1] न कतहूं[2] ठाय[3] ।
अन्दर बाहर संग है नानक काय[4] दुड़ाय[5] ॥२॥
लाल गोपाल गोविन्द प्रभु, गहिर, गंभीर अथाह ।
दूसर नाहि अवर क्वइ, नानक बेपरवाह ॥३॥
रूप न रेख न रंग कुछ, त्रैगुण ते प्रभु भिन्न ।
तिसहि बुझाये[6] नानका, जिस होवे सुप्रसन्न ॥४॥

(६)

राग तिलंग (महल्ला ५)

तुध[7] बिन दूजा नाहिं कोय ।
तू करतार करें सो होय ॥
तेरा जोर तेरी मन टेक[8] ।
सदा सदा जप नानक एक ॥१॥
सब ऊपर पार ब्रह्म दातार ।
तेरी टेक तेरा आधार ॥
है तू, है तू होवनहार ।
अगम अगाध उच्च अपार ॥
जो तुध सेवे तिन भव दु:ख[9] नाहिं ।
गुरुप्रसाद नानक गुण गाहिं ॥२॥

---

१. खाली न्यून, २. कहीं भी ३. स्थान, जगह, ४. क्यों, ५. दौड़ रहा है, परेशान हो रहा है, ६. उसे दर्शन देता या अनुभव करता है जिस पर वह स्वयं प्रसन्न होता है, ७. तेरे, ८. आश्रय, ९. संसार का दु:ख ।

जो दीसे[1] सो तेरा रूप ।
सगुण निधान गोबिन्द अनूप ।।
सिमिर सिमिर सिमिरे जन सोई ।
नानक करम[2] परापत होई ।।३।।
जिन जपया तिसको बलिहार ।
जिसके संग तरे संसार ।।
कहो नानक प्रभु लोचन पूर[3] ।
संत जनों की बाछों[4] धूर ।।४।।

(१०)

राग बरवा ताल तीन

है आरिफ़ों[5] के दिल में, भगवन् ! मुक़ाम तेरा ।
और वेद पाठियों के, लब[6] पर है नाम तेरा ।।१।।
काशी के बुतकदों[7] में, कुछ तू ही नहीं मुक़ैयद[8] ।
हर जा[9] है तेरा मन्दिर, हर जी है धाम तेरा ।।२।।
जपते हैं तुमको प्यारे, दुनिया के जीव सारे ।
हस्ती[10] का तेरी शाहिद[11], हर एक काम तेरा ।।३।।
दिल साफ़ कर लिया है, दुनिया की मल[12] से जिसने ।
वह देखता है दिल में दर्शन मुदाम[13] तेरा ।।४।।

---

१. दीखे, दिखाई दे २. बख़शिश, कृपा, ३. पूर्ण रूप में देखा, ४. चारों, ५. आत्मज्ञानियों, ६. ओष्ठ पर, मुख पर, ७. मंदिरों, ८. परिच्छिन्न, कैद में, ९. स्थान, देश, १०. अस्तित्व, मौजूदगी, ११. साक्षी, १२. मैल, कीचड़, १३. नित्य सर्वदा ।

आज़ाद को सिखा दो प्रीति की रीति अपनी ।
जिससे अमर हो पी के अमृत का जाम[1] तेरा ॥५॥

(११)

तरज ठुमरी राग कुमाच, ताल तीन

जो तुम हो सो हम हैं प्यारे, जो तुम हो सो हम हैं। (टेक)
पर्वत में तुम, नदियन में तुम, चहुंदिशि तुम ही हो बिस्तारे ।
वृक्षलता में तुमहि बिराजो, सूरज चन्द्र तुम ही हो तारे ॥१॥
देश भी तुम हो, काल भी तुम हो, तुम ही हो सबके आधारे ।
अलख ब्रह्म है नाम तिहारो, माया से तुम नित्य हो न्यारे ॥२॥
रूप नहीं, नहीं गुण है तुम में, वस्तु क्रिया से दूर सदा रे ।
तीनों लोक में तुम ही व्यापो, तबहूं उनते हौ तुम न्यारे ॥३॥
जो ध्यावे सो वह ही पावे, तुम उनके चैतन हौ प्यारे ।
रामानन्द अब जान लेहु यों, आनन्द चैतन नहीं दो न्यारे ॥४॥*

---

१. प्याला ।

* नोट—उक्त भजन राम भक्त स्वर्गवासी रायबहादुर लाला बैजनाथ साहब जज का है जो उन्होंने स्वामीजी को अपने पत्र द्वारा लिखकर भेजा था ।

ॐ

गुरु-स्तुति

(१२)

राग पीलू ताल दीप चन्दी

तेरी मेरे स्वामी ! यह बाँकी अदा[1] है ।
कहीं दास है तू, कहीं खुद खुदा है ।।१।।
कहीं कृष्ण है तू, कहीं राम है तू ।
कहीं संगी है तू, कहीं तू जुदा है ।।२।।
पिलाया है जब से, मुझे जाम[2] तू ने ।
तेरी आँख में क्या नया गुल[3] खिला है ।।३।।
निरे इश्क़ के बह्[4] में मस्त हूं मैं ।
बक़ा[5] में फ़ना[6] है, फ़ना में बक़ा है ।।४।।
मुनज्ज़ह[7] तिरी ज़ात[8] तशबीह[9] से फ़ारग़[10] ।
मगर रंगे तशबीह तुझ पर चढ़ा है ।।५।।

---

१. छबि, २. प्रेम रस का प्याला, ३. अद्भुत दृष्टि, ४. प्रेम सागर ५. अमृत, अस्तित्व, ६. मृत्यु, नाश, ७. शुद्ध, पवित्र, ८. स्वरूप, ९. प्रमाण, दृष्टांत, १०. रहित ।

नज़ारा[1] तेरा 'राम' हर जा पै देखूं ।
हर एक नग़मा[2] ऐ जान! तेरी सदा[3] है ।।६।।

(१३)

सवैया राग घनाक्षरी

वाँकी ग्रदायें[4] देखो चन्दा सा मुखड़ा पेखो । (टेक)
बादल में, बहते डल में, वायु में तेरी लटकें ।
तारों में, नाज़नीं[5] में, मोरों में तेरी मटकें ।।१।।
चलना ठुमक-ठुमककर, बालक का रूप धर कर ।
घूंघट ग्रबर[6] उलट कर, हंसना यह बिजली बनकर ।।२।।
शबनम[7] गुल[8] ग्रौर सूरज, चाकर हैं तेरे पद के ।
यह ग्रानबान सजधज, ऐं, राम,! तेरे सदक़े[9] ।।३।।

(१४)

राग एमन कल्याण तरज बलोचां जालिमान्

लखूं क्या ग्रापको ऐ ग्रब प्यारे !
ग्रविनाशी कब बाचक शब्द तुम्हारे ।। (टेक)
जहाँ गति रूप की, नै नाम की है ।
वहाँ गति हाँ हमारे राम की है ।।२।।

---

१. दृश्य, दर्शन, २. गीत, राग, ध्वनि, ३. ग्रावाज, ध्वनि, ४. बें, ५. सुन्दरियों, ६. बादल का घूंघट, ७. ग्रोस, ८. पुष्प, ९. न्योछावर ।

वहीं इक रूप से पी प्रेम-शरबत ।
नदी जंगल में जा देखे हैं पर्वत ।।३।।
वही इक रूप से नगरों में फिरता ।
किसी की खोज में डगरों में फिरता ।।४।।
अजब माया है तेरी शाहे -दुनिया ।
कि जिससे है मेरी, तेरी यह दुनिया ।।५।।
न तुझ को पा सका कोई जहाँ में ।
न देखा जिसने तुझको हर मकाँ में ।।६।।
तुझे समझा किये सौ कोस अब तक ।
नहीं समझा मगर अफ़सोस अब तक ।।७।।
तु ही है 'राम' और तूही है यादव ।
तु हीं स्वामी, तु ही है आप माधव ।।८।।

(१५)

ईशावास्योपनिषद् के आठवें मन्त्र का भावार्थ

हैं मुहीतो[२]-मनज़्ज़:[३] -बे अबदाँ[४] ।
रगो पै[५] है कहाँ ? हमा-बी[६], हमाँ-दाँ[७] ।।१।।
वह बरी[८] है गुनाहों[९] से, रिन्दे-ज़माँ[१०] ।
बदो-नेक[११] का उसमें नहीं है निशाँ[१२] ।।२।।

---

१. संसार के स्वामी, ईश्वर, २. सर्वव्यापक, ३. शुद्ध, ४. देह रहित, ५. नाड़ी, पट्टा, ६. सर्वदृष्टा, ७. सर्वज्ञ, ८. निर्लिप्त, ९. पाप, १०. पूर्ण मस्त, जीवन मुक्त, ११. पुण्य पाप, १२. पता ।

वह बुजुर्ग-बुजुर्गा[1] है राहते-जाँ[2] ।
वह है बाला[3] से बाला व नूरे-जहाँ[4] ॥३॥
वही खुद[5] है जिनाँ[6] व बरूं-जे-बयाँ[7] ।
दिये उसने अज़ल[8] में हैं रंगतो-शाँ[9] ॥४॥
यही 'राम' है दीदों[10] में सब के निहाँ[11] ।
यही 'राम' है बह्र[12], ओ बर[13] में अयाँ[14] ॥५॥

(१६)

राग पीलू ताल दीप चन्दी

जो तू है, सो मैं हूं, जो मैं हूं, सो तू है ।
न कुछ आरज़ू[15] है, न कुछ जुस्तजू[16] है ॥ (टेक)
बसा राम मुझमें, मैं अब राम में हूं ।
न इक है, न दो है, सदा तू ही तू है ॥१॥
उठा जब कि माया का परदा यह सारा ।
किया ग़म खुशी ने भी मुझ से किनारा ॥३॥
जुबाँ को न ताक़त न मन को रसाई[17] ।
मिली मुझ को अब अपनी ही बादशाही ॥४॥*

१. सर्वोपरि श्रेष्ठ, २. प्राणों को सुख देने वाला, ३. ऊँचा से ऊँचा, ४. संसार का प्रकाश, ५. स्वयं, ६. स्वर्ग, ७. वर्णन से परे, ८. अनादि काल, ९. नाना नाम रूप, १०. नेत्रों में, ११. छिपा हुआ, १२. समुद्र, १३. पृथ्वी, १४. विद्यमान, प्रकट, १५. इच्छा, १६. जिज्ञासा, १७. पहुँच।
*नोट—यह कविता स्वर्गवासी रायबहादुर लाला बैजनाथ की है जो उन्होंने अपने गुरु स्वामी राम महाराज को एक पत्र के रूप में लिखकर भेजी थी।

(१७)

साकी या सवैया

बैठत राम ही, उठ्ठत राम ही, बोलत राम ही, राम रह्यो है ।
खावत राम ही, पीवत रामही, धामही रामही राम गह्यो है ॥
जागत रामही, सोवत रामही, जोवत रामही, राम लह्यो है ।
देतहु रामही, लेतहु रामही, सुन्दर राम ही, राम रह्यो है ॥

(१८)

राग देव गंधारी (महाल्ला)

माई, गुरु चरणी चित्त लाइये । (टेक)
प्रभु होय कृपाल कमल प्रकाशे, सदा सदा हर ध्याइये ॥१॥
अन्तर एको, बाहर एको,[1] सब में एक समाइये ।
घट[1] अवघट रमिया सब ठाईं[2], हर पूरन ब्रह्म दिखाइये ॥२॥
उस्तत[3] करें सेवक मुनि केते[4], तेरा अन्त न कतहूं[5] पाइये ।
सुखदाते दुःखभंजन स्वामी, जन नानक सदबलि[6] जाइये ॥३॥

(१९)

श्लोक (महल्ला १)

बलिहारी गुरु अपने, द्योहाँड़ी[7] सदवार ।
जिन मानस[8] से देवते कीये, करत न लागी बार ॥१॥

---

१. अन्दर, बाहर, २. जगह, ३. स्तुति, ४. कितने, ५. कहीं भी, कभी भी, ६. सौ बार न्यौछावर जाइये, ७. दिन भर सौ बार, ८. मनुष्य योनि से ।

जे[1] सौ चन्दा[2] उग्गवे[3], सूरज चढ़ें हज़ार ।
एते[4] चानन[5] हूंदियाँ, गुरु बिन घोर अंधार ।।२।।

(२०)

पौड़ी

जिन अन्तर[6] हृदय सुधि है, तिस जनको सभी नमस्कारी । नम० ।
जिस अन्दर नाम निधान[7] है, तिस जनको हौं[8] बलिहारी ।।१।।
जिस अन्दर बुद्धि विवेक हैं, हरि नाम मुरारी ।
सो सतगुरु सबनाँ[9] का मित्र है, तब तिसहि प्यारी ।।२।।
सब आत्म-राम पसरिया गुरु-बुद्धि विचारी ।

१.अगर, २.सौ चन्द्रमाँ, ३. चढ़ें उदय हों, ४.इतने, ५. प्रकाश होने पर भी, ६. अन्दर, ७. राम नाम का खजाना, निधि, ७. मैं, ८.हूं, ९. सबका ।

उपदेश

(२१)

झिंजोटी, ताल दादरा

(केनोपनिषद् के पाँच मन्त्रों का तात्पर्य)

चक्षु जिन्ह देखें नहीं, चक्षू की अंख[1] जान ।
सो परमातम देव तू, कर निश्चय, नहीं आन[2] ।। १ ।।
जाको वाणी ना जपे, जो वाणी की जान ।
सो परमातम देव तू, कर निश्चय नहीं आन ।। २ ।।
श्रोत्र जाको ना सुनें, अरू जो श्रोत्र के कान ।
सो परमातम देव तू, कर निश्चय नहीं आन ।। ३ ।।
प्राणों कर जीवत नहीं, जो प्राणों के प्राण ।
सो परमातम देव तू, कर निश्चय नहीं आन ।। ४ ।।
मन बुद्धि जाको ना लखें, परकाशक पहचान ।
सो परमातम देव तू, कर निश्चय नहीं आन ।। ५ ।।

---

१. नेत्र, २. अन्य, दूसरा ।

(२२)

राग पहाड़ी, ताल चलन्त

साधो ! दूर दुई[1] जब होवे, हमरी कौन कोई पत[2] खोवे (टेक)
ऐसा कौन नशा तुम पीया, अबलौं[3] आप सही[4] नहीं कीया ॥१॥
सिन्ध[5] विषे रञ्जक सम देखें, आप नहीं पर्वत सम पेखें ॥२॥
चमके नूर तेज सब तेरा, तेरे नैनन काहे[6] अंधेरा ? ॥३॥
तू ही राम भूप पति राजा, तू ही तीन लोक को साजा ॥४॥

(२३)

राग देश, ताल दादरा

ज़िन्दा रहो रे जिया ! ज़िन्दा रहो रे । (टेक)
तू सदा अखंड चिदानन्दघन, मोह भय शोक क्यों करो रे ॥१॥
(ज़िन्दा०)
आया ही नहीं तो जायगा कौन गृह, सोया ही नहीं तो कहाँ जागे ?
उपजा ही नहीं तो बिनसेगा किस तरह ? ब्रह्म और शोक सब हरो रे ॥२॥
(ज़िन्दा०)
तू नहीं देह बुद्धि प्राण मन, तेरा नहीं मान अपमान जन ।
तेरा नहीं नफ़ा नुक़सान धन, राम चिन्ता डर खौफ़ को तरो रे ॥३॥
(ज़िन्दा०)

---

१. द्वैत, २. मान, बड़ाई, ३. अब तक, ४. अपने आपको ठीक नहीं पहिचाना अर्थात् अनुभव नहीं किया, ५. समुद्र में छोटे से मोती के तो ढूंढ़ रहा है पर अभी तक अपने भीतर जो पर्वत के समान भारी रत्न (अपना स्वरूप) है उसका तू अनुभव नहीं करता, ६. किस लिए, क्यों ।

जाग रे लालन जाग रे! घर तेरे सदा सुहाग रे।
सूर्यवत् उगरे भाग रे! सब फ़िक्र को परे कर धरो रे ॥४॥
(ज़िन्दा०)

है, राम, तो सदा ही पास रे! हँस खेल क्यों हुआ उदास रे।
आनन्द की शिखर पर बास रे, हर श्वास में सोहं[1] को भरो रे ॥५॥
(ज़िन्दा०)

(२४)

मरे न टरे न जरे[2] हरे[3] तम[4], परमानन्द सो पायो।
मङ्गल मोद भर्यो घट भीतर, गुरु श्रुति ब्रह्म त्वमेव[5] बतायो ॥१॥
टूटी ग्रन्थि अविद्या नाशी, ठाकुर सत राम अविनाशी।
लय मुझमें सब गयो रे बाक़ी, वासुदेव सोहं कर झांकी ॥२॥
अहनिश[6] का सूरज में नाश, अहं प्रकाश, प्रकाश, प्रकाश।
सूरज, को ठंडक लगे, जल को लगे प्यास?
आनन्द घन मम राम से, क्या आशा को आस ॥३॥*

१. वह ईश्वर वा परमात्मा मैं हूँ, २. घटे, ३. नाश करे, ४. अंधकार, ५. तू ही ब्रह्म है, ६. दिन रात, ७. समीपता।

*तात्पर्य—जैसे दिन रात सूर्य में लय हो जाते हैं वैसे ही मुझ प्रकाश स्वरूप आत्म देव में पाप और पुण्य सब लय हो जाते हैं। सम्भव है सूर्य को ठंडक और जल को प्यास लगे परन्तु मुझ आनन्द घन राम को किसी प्रकार की आशा नहीं हो सकती।

(२५)

गजल भैरवी

शाहंशाहे-जहान[1] है, साइल[2] हुआ है तू ।
पैदाकुने-जमान[3] है, डाइल[4] हुआ है तू ।।१।।
सौ बार गरज़ होवे तो धो धो पियें क़दम[5] ।
क्यों चरख़ो[6]-मिहरो[7]-माह[8] पै माइल[9] हुआ है तू ।।२।।
खञ्जर की क्या मजाल[10] कि इक जख्म कर सके ।
तेरा ही है ख़याल कि घाइल हुआ है तू ।।३।।
क्या हर गदा[11]-ओ-शाह का राज़िक[12] है कोई और।
इफ़लासो[13] तंगदस्ती का क़ाइल[14] हुआ है तू ।।४।।
टाइम[15] है तेरे मुजरे के मौक़े[16] की ताक में ।
क्यों डर से उसके मुफ़्त में ज़ाइल[17] हुआ है तू ।।५।।
हम बग़ल[18] तुझसे रहता है हर आन[19] 'राम' तो।
बन परदा अपनी वस्ल[20] में हाइल[21] हुआ है तू ।।६।।

---

१. चक्रवर्ती राजा, २. भिखारी, मंगता, ३. समय का उत्पन्न कर्ता ४. घड़ी का dial अर्थात् समय नापने का यन्त्र, ५. चरण, ६. आकाश, ७. सूर्य, ८. चन्द्रमा, ९. मोहित, १०. समर्थ, शक्ति, ११. फकीर, (भिखारी) और राजा, १२. अन्नदाता, १३. निर्धनता और तंगी, १४. मारने वाला, अधीन, १५. (time) काल, १६. अवसर की प्रतीक्षा में, १७. भागता जाता, १८. बगल में अर्थात् अपने साथ, १९. हर समय, २०. मिलाप, साक्षात्कार, २१. दो के बीच आच्छादित या रुकावट डालने वाला ।

(२६)

राग नट नारायण, ताल दादरा

मनुवा[1] रे नादान ! ज़री मान, मान मान। (टेक)
आतम गङ्ग सङ्ग जङ्ग, विष्ठा में ग़लतान[2] ।।१।। मनुवा रे०
शाहंशाही छोड़ के, तू क्यों हुआ हैरान ।।२।। मनुवा रे०
शंकर शिव स्वरूप त्याग, शव[3] न बन री जान ।।३।। मनुवा रे०
उदय अस्त राज तेरा, तीन लोक साज तेरा, फेंक दे अज्ञान ।।४।। म०
हाय ब्रह्मघात करके, करे तू खान पान ।।५।। मनुवा रे०
तू तो रवि रूप 'राम', शोक मोह से काहे काम
तिमिर की संतान ।।६।। मनुवा रे०

(२७)

राग नट नारायण, ताल दादरा

मनुवा वे मदारिया ! निशंग बाज़ी ला। (टेक)
निशंग[4] बाज़ी ला बे-निहंग[5] बाज़ी ला ।। मनुवा[6] वे०
महल अरु माड़ी उच्च अटारी दम भर दे बिच ढा[7] ।। मनुवा वे०
झगड़े झांजे सब कर कोता:[8], अपने आप में आ ।। मनुवा वे०

---

१. रे मन !, २. सना हुआ ३. मृतक, मुर्दा, ४. निर्भयता से, निडर होकर, ५. शर्म रहित होकर, ६. ऐ मदारी जादूगर मन, ७. गिरा दे, ८. छोटे या कम कर अर्थात् फैसल कर दे।

(२८)

राग नट नारायण, ताल दादरा

(१) गंजे-निहां के क़ुफ़्ल[1] पर, सिर ही तो मोहरे-शाह[2] है ।
तोड़ के क़ुफ़्लो-मोहर को गंज[3] को खुद न पाये क्यों ।।१।।
(२) दीदा-ए-दिल[4] हुआ तो वा[5], खुप गया[6] हुसने दिलरुबा[7] ।
यार खड़ा हो सामने, आँख न फिर लड़ाये क्यों ।।२।।
(३) जब वह जमाले-दिलफ़रोज़[8], सूरते-मिहिरे-नीमरोज़[9] ।
आप ही हो नज़ारा सोज़[10], परदे में मुंह छुपाये क्यों ? ।।३।।

पंक्तिवार तात्पर्य (२८)

(१) गुप्त कोश (आत्म देव) जो प्रत्येक प्राणी के भीतर है उसके ताले पर प्रजापति की मोहर अहंकार रूपी सिर है । इन ताले और मोहर को तोड़कर भीतर के ख़जाने (आत्मा) को क्यों न लेवें ?

(२) हृदय की आँखें जब खुली तब प्यारे का सौन्दर्य भीतर धस गया । जब अपना प्यारा (प्रियतम) सामने खड़ा हो तो फिर उससे आँख क्यों न लड़ावें ?

(३) जब वह हृदय को प्रकाशित करने वाला सौन्दर्य मध्यान्ह काल के सूर्य की भाँति आप ही प्रकाशमान हो तो पर्दे में मुख क्यों छिपावें ?

---

१. गुप्त कोश, २. महाराजा की मोहर, ३. खजाना, गुप्त रत्न, ४. हृदय का नेत्र, दिव्य चक्षु, ५. खुल गया, ६. धस गया, ७. प्यारे का सौन्दर्य ८. हृदय को प्रकाशित करने वाला सौन्दर्य, ९. मध्यान्ह काल के सूर्य के रूप में, १०. प्रकाशमान हो वा दृष्टि को प्रकाशित करे ।

(४) दशना-व-गमज़ा जाँसिताँ[1], नावके नाज़े-बे पनाह[2]।
तेरा ही अक्सेरुख[3]-सही, सामने तेरे आये क्यों ? ।।४।।

(५) आप ही डाल साये को, उसको पकड़ने जाय क्यों ?
साया जो दौड़ता चले, कीजिये वाये वाये क्यों ? ।।५।।

(६) अह्लो-अयालो[4]-मालो-ज़र[5], सबका है बार[6] राम पर।
अस्प[7] पै साथ बोझ धर, सिर पर उसे उठाये क्यों ? ।।६।।*

---

(४) यह प्राण हरने वाली नैन-कटारी, यह अथाह नख़रे का तीर, यह तो तेरे ही मुख का प्रतिबिम्ब है, पर तेरे सामने क्यों आवे ? अर्थात् मोहने-वाली यह तेरी माया तेरी छाया होकर तेरे (स्वप्न के) सामने आकर तुझे क्यों ठकती या मोहती है ?

(५) आप ही अपनी छाया डालकर तू उसको पकड़ने क्यों दौड़ता है ? और छाया को पकड़ने के लिए दौड़ते समय जब वह भी आगे दौड़ती चली जाती है (जो कि उसका स्वभाव है) तो हे प्यारे ! तू तब हाय हाय क्यों करता है ?

(६) घर बार (बालबच्चे) और धन दौलत सबका बोझ जब एक राम भगवान् पर है, तो तू भोले जाट* के समान घोड़े पर अपने साथ बोझ रख कर उसको व्यर्थ अपने सर पर क्यों उठाता है ?

---

१. नैन कटारी, या प्राण हरने वाला कटाक्ष, २. अथाह नखरे का तीर, ३. मुख की छाया वा प्रतिबिम्ब, ४. बालबच्चे, ५. धन दौलत, ६. बोझ, ७. घोड़े पर।

---

*एक भोला जाट अपने साथ घोड़े पर असबाब रख कर अपने ग्राम को जा रहा था। घोड़े के साथ उसका अत्यन्त मोह था। समय मध्यान्ह काल का था। ग्रीष्म ऋतु थी। असबाब घोड़े की पीठ पर रख कर उस

(२६)

राग शंकराभरण, ताल कैरवा

फ़क़ीरा ! आपे अल्लाह हो। (टेक)
आपे लाड़ा[१], आपे लाड़ी[२], आपे मापे[३] हो ॥१॥ फ़क़ीरा०
आप बधाइयाँ, आप स्यापे[४], आप अलापे[५] हो ॥२॥ फ़क़ीरा०

भजन नम्बर २६ का पंक्तिवार अर्थ

(१) आप ही तू स्वयं पति, आप ही पत्नी और आप ही माता पिता हैं। इसलिए ऐ प्यारे ! तू आप ही ईश्वर है, अर्थात् वस्तुतः अपने आप को ही तू ईश्वर निश्चय कर।

(२) आप ही तू बधाई (आशिर्वाद) है, आप ही स्यापा और आप ही तू रोने पीटने का आलाप है । इसलिए ऐ प्यारे ! तू अपने आप को ही प्रभु अनुभव कर।

---

१. पति, २. पत्नी, ३. माता पिता, ४. पंजाब में मनुष्य के मरने पर स्त्रियाँ खड़े होकर नियमबद्ध अलाप से जो रोती पीटती है, उसे स्यापा कहते हैं, ५. उस स्यापे में जिस शब्द की टेक से पीटा जाता है उसे अलाप कहते हैं।

पर आप सवार था। जब कुछ काल तक सवार रहने से (उसके और असबाब के बोझ से) घोड़े की पीठ पर पसीना आ गया, तो मारे मोह के असबाब को उसने पीठ पर से अलग कर दिया। नंगी पीठ पर आप स्वयं सवार हो गया, और उस असबाव को अपने सिर पर रख लिया, जिससे बोझ घोड़े पर तो उतना ही रहा, पर व्यर्थ में अपनी गर्दन बोझ से तोड़ ली। (इसी प्रकार सब जगत का बोझ ईश्वर रूपी घोड़े पर है, पर जो मूर्खता से उस बोझ को अपने सिर पर डाल देता है, वह अपनी गर्दन व्यर्थ में तोड़ लेता है, बोझ तो तब भी ईश्वर पर वैसे का वैसा ही रहता है)।

राँझा[1] तूहीं, तूही राँझा, भूले हीर[2] न बेले[3] रो ।।३।। फ़कीरा०
तेरे जिहां[4] सानूं[5] इथे उथे[6], कोई न जापे[7] ओ ।।४।। फ़क़ीरा०
घुण्ड[8] कड के, क्यों चन[9] मोंह, उते ओले[10] रह्यों खड़ा ।।५।। फ़क़ीरा०
तू ही सब दी जान पियारी, तैनू[11] ताना[12] लगे न को ।।६।। फ़०
बोली ताना, यारी सेवा, जो देखें तूं सो ।।७।।
सूली सलीब[13] ज़हर दे मुक्के[14], कदे न मुकदा जो ।।८।।

---

(३) वास्तव में तू ही राँझा (प्रेमी) और तू ही हीर (प्रिया) है, अपने आप को भूल कर तू हीर (प्रिया) की खातिर बन में व्यर्थ मत रुदन कर।

(४) तेरे जैसा यहां वहाँ हमें कोई नहीं दीखता, तू अपने आप को देख ।

(५) अपने चन्द्र-मुख पर घूंघट काढ़ कर तू ओट में क्यों खड़ा हो रहा है ? अपने को साक्षात कर ।

(६) तू ही सबकी प्यारी जान है, तुझे कोई बोली ठठोली नहीं लग सकती है । अपने को सबका स्वामी निश्चय कर।

(७) बल्कि बोली ठठोली, मित्रता सेवा इत्यादि जो दिखाई देते हैं, वह सब तू ही है ।

(८) सुली सलीब और ज़हर के अन्त होने पर जो कदापि नहीं मरता, वह तू है।

---

१. एक प्रेमी (आशिक) का नाम है, २. राँझा की प्रिया का नाम है, ३. बन, ज़ंगल, ४. समान, ५. हमें, ६. वहाँ वहाँ, ७. जँचता या दीखता ८. घूंघट, ९. चन्द्र मुख पर, १०. ओट में, ११. तुझे, १२. बोली ठठोली, १३. एक प्रकार की सूली, १४. खतम होने पर ।

बुक्कल[1] बिच वड़ यार जो सुत्ते आवे[2] तेरी लो[3] ॥९॥
तूं ही मस्ती बिच्च शरावाँ, हर गुल[4] दी खुशबो ॥१०॥
राग रङ्ग दी मिट्टी सुर तूं, लई कलेजा[5] टो ॥११॥
लाह[6] लीड़े, यूसुफ घुट मिल लै, दूई दे पट ढो[7] ॥१२॥
आठवें अर्श[8] तेरा नूर चमकदा, होर[9] भी उंच्च हो ॥१३॥
यह दुन्या तेरे नौंहा[10] दे बिच, हथ[11] गल ते रख न रो ॥१४॥
जे रब भाल वाहिर किधरे, एस[12] गल्लों मुंह धो ॥१५॥

---

(९) प्यारे की बगल में प्रवेश होकर, जब हम सोये, तो वहाँ तेरा ही प्रकाश पाया।
(१०) शराब में मस्ती और पुष्प में गंध तू है, इसीलिए अपने आप का तू अनुभव कर।
(११) कलेजे में चुटकियाँ भरने वाली जो राग रंग की मीठी स्वर है वह तू है।
(१२) द्वैत के वस्त्र उतार कर तू अपने प्यारे यूसुफ (आत्मा) से घुट कर मिल।
(१३) आठवें आकाश पर तेरा ही प्रकाश है, और तू इससे भी ऊपर है।
(१४) यह संसार तेरे नाखूनों का खेल है, तू गाल पर हाथ रख कर मत रो।
(१५) यदि तू अपने से बाहिर कहीं ईश्वर को ढूंढ़ना चाहता है, तो इस बात से तू रो।

---

१. बगल, २. वहाँ, ३. प्रकाश, ज्योति, ४. पुष्प, ५. चित्त में चुटकियां भरता है, ६. अपने प्यारे, ७. वस्त्र उतार कर, ८. आकाश, ९. और, १०. नाखून, ११. हाथ, १२. इस बात से।

तू मौला नहीं बन्दा चन्दा, झूठ दी छड़ दे खो[१] ॥१६॥
पवन इन्दर तेरी पण्डा[२] ढोंदे, क्यों तैनूं किते न ढों ॥१७॥
काहनूं[३] पाया खेड़ना हैं भौं[४], भौं बिलयां, बैठ निचल्ला हो ॥१८॥
तेरे तारे सूरज थई थई नचदे, तूं बेह जाकर चौं[५] ॥१९॥
पचे न तैनूं सुख वे ओड़क, एहो गिरनी[६] खो ॥२०॥
दुःखहर्त्ता तें सुखकर्त्ता, तैं नूं ताप गये कद[७] पोह[८] ॥२१॥
चोर न पाये, तैनूं भूत न चमड़े, होर[९] गया क्यों हो ॥२२॥

---

(१६) तु स्वयं मालिक व प्रभु है, नौकर चाकर तू नहीं है। अपने आपको बुद्ध जीव मानने को जो तेरा झूठा स्वभाव है उसे तू छोड़।

(१७) पवन और इन्द्र देवता तो तेरा बोझ उठाते हैं, फिर तेरी सेवा क्यों नहीं करते ?

(१८) प्यारे को इधर उधर ढूंढ़ने को जो घूमन घेरी खेल हैं, उस खेल को व्यर्थ तू क्यों खेलना है। स्थिर होकर बैठ और अपना अनुभव कर।

(१९) तेरे आश्रय तारे और सूर्य थई थई नाच रहे हैं। तू स्वयं शौक से स्थिर होकर बैठ।

(२०) तुझे अनन्त सुख पचता नहीं है, इस वदहजमी को तू दूर कर।

(२१) तू स्वयं दुखहर्त्ता और सुख कारक है, तुझे कब तीनों ताप तपा सकते हैं ?

(२२) तुझे चोर नहीं पकड़ते और न भूत प्रेत तुझे चिमट सकते हैं, फिर तू अपने से इतर क्यों रहा है ?

---

१. स्वभाव, २. बोझ उठाते, ३. किसलिए, ४. घूमन घेरी खेल, ५. शौक से, ६. वदहजमी दूर कर, ७. कब, ८. सताने लगे, ९. दूसरा।

तूं साक्षी केडी[1] कईयां मारें, हुन[2] थक कर चल्लियाँ हैं सौ ।।२३।।
खुल्लियाँ तैनूं[3] भऊ[4] न खान्दे, लुक लुक क़ैद न हो ।।२४।।
वहदत[5] नूं कर कसरत[6] देखें, गयों भैङ्गा[7] किधारों[8] हो ।।२५।।
ताज तखत छउ टट्ठी[9] मल्ली एस[10] गल्लों तू रो ।।२६।।
छड के घर दियाँ खण्डां खीरां, की लोड़[11] चबावें तो[12] ।।२७।।
तेरे घर बिच राम बसेन्दा, हाय कुट कुट भर न भा[13] ।।२८।।

---

(२३) तू साक्षी कौन सी कसियाँ मार रहा है अर्थात् कौन सा परिश्रम कर रहा है, जो अब थक कर सोने लगा है ।

(२४) मुक्त (आजाद) होने में तुझे कोई राक्षस इत्यादि तो नहीं खाते, इसलिए छिप छिप कर वद्ध मत हो :

(२५) एकता को तू बहुत करके देखता है । भैंगे नेत्रवाला तू कहाँ से हो गया है ।

(२६) निजी राज्य का ताज और तख़त छोड़कर छोटी सी कुटिया तू ने ले ली है, इस मूर्खता पर तू रुदन कर और अपने स्वरूप का अनुभव कर

(२७) निज घर के स्वादिष्ट भोजन को छोड़कर छिलके व तूड़ी को तू क्यों चबा रहा है ?

(२८) तेरे घट में जब राम (निर्गुण ब्रह्म) बस रहा है । हाय वहाँ भुस कूट कूट कर मत भर ।

---

१. कौन सी, २. अब, ३. तुझे, ४. हव्वा, शैतान, ५. अद्वैत, ६. द्वैत, बहुत, ७. भेंगा जो एक को दो देखता है, ८. कहाँ से, ९. छोटी कुटिया, १०. इस बात से, ११. क्या जरूरत, १२. तूड़ी, भूसी, १३. भुसी ।

राम रहीम सब बन्दे तेरे, तैथों[1] बड़ा न कोय ।।२६।
आप भगीरथ, आपही तीरथ, बन गंगा मल्ल धो ।।३०।
पर्दे फ़ाश होवीं रब करके, नंगा सूरज हो ।।३१।
छड मौहरा[2], सुन 'राम' दुहाई, अपना आप न को[3] ।।३२।

(३०)

गजल

आँख होवे तो देख बदन के परदे में अल्ला[4] ।
परदे में अल्ला, क़लब[5] को साफ़ करो बल्ला[6] ।।टेक।।
जप तप दान यज्ञ तीरथ से यही काम भल्ला[7] ।
अन्त समय पर मित्र ! साथ न जाये इक छल्ला ।।१।। आँख०
भव सागर से पार लंघाने को सतगुर मिल्ला ।
झूठा है दारा[8] सुत[9] मित्र मुफ़त का है रल्ला[10] ।।२।। आँख०

---

(२६) राम रहीम (सगुण ईश्वर) सब तेरे बन्दे (सेवक) हैं, तुझसे बड़ा कोई नहीं है।

(३०) श्रीगंगा को स्वर्ग से लाने वाला राजा भागीरथ तू आप है और आप ही तू तीर्थ है, स्वयं गंगा रूप होकर तू सब मल धो ।

(३१) ईश्वर करे तेरे सब पर्दे खुलें, और सूर्यवत् नितान्त नंगा हो ।

(३२) तु विषय भोग रूपी विष को त्याग, तुझे राम की सौगन्ध और अपने आप को व्यर्थ नष्ट मत कर अर्थात् आत्म-घात मत कर।

---

१. तुझसे, २. विषय रूपी माहुर या विष छोड़, ३. कोसना, शाप देना, आत्मघात करना, ४. ईश्वर, ५. अन्तःकरण, हृदय, ६. राम दुहाई या ईश्वर की कसम, ७. अच्छा, ८. स्त्री, ६. पुत्र, १०. झगड़ा, शोर।

"तू तेरा," "मैं मेरा" स्वप्ने का सा है हल्ला[१] ।
निज-आतम जान, सुखी हो जा, है यही नेक सल्ला[२] ।।३।। आँख०
अज[३] अविनाशी आतम जाने होये खैर[४] सल्ला ।
निर्भय ब्रह्म रूप निज जाने हुआ पाक[५] पल्ला ।।४।। आँख०

(३१)*

जागो रे संसारी प्यारे ! अब तो जागो मेरे प्यारे ।।टेक।।
घोर अविद्या के वश होकर, स्वामी से तुम भये हो किंकर ।
विषयन के कीचर में फंसकर, स्मृत[६] नहीं हो तुम संभारे ।।१।। जा०
ज्ञान बड़ाई खोई है तुमने, झूठी विद्या पढ़ी है तुमने ।
माया को नहीं चीन्हा[७] तुमने, अब तो सोचो टुक मेरे प्यारे ।।२।।जा०
जिनको नित्य उठ तुम हो गावो मूरत जिनकी होत बनावो ।
शिक्षा उनकी चित्त में लावो, देखो उनकी ओर निहारे[८] ।।३।। जा०
शिव संकादिक जिसको ध्यावें, नेति नेति से वेद लखावें ।
मन बुद्धि जा का पार न पावें, वह तुमही हो मित्र पियारे ।।४।। जा०
विष्यन से अब चित्त को खेंचो, प्रेम के जल से हिय[९] को सींचो ।
ज्योति से मम नैंनन[१०] मींचो, तुम ज्योतन के ज्योत हो प्यारे ।।५।। जा०

---

१. शोर, २. उत्तम सम्मति, ३. जन्म से रहित, ४. उत्तम, भला, ५. शुद्ध पवित्र, ६. होश, अपने स्वरूप का स्मरण, ७. जाना, पहिचाना, यहाँ मुराद है काबू (वश) करने से, ८. गौर से देखो, सोच-विचार कर, ९. हृदय, १०. चक्षु, यहाँ दिल की आँख से अभिप्राय है।

*नोट—यह कविता राम स्वामी के भक्त रायबहादुर लाला बैजनाथ जी की है।

महावाक्य[1] को मन में गावो, अहंब्रह्म यह नित उठ गावो ।
ओंकार से अलख जगावो, आनन्द से नहीं तुम हो न्यारे ।।६।। जा०

(३२)

राग पीलू, ताल धमार

शशि[2] सूर[3] पावक[4] को करे, परकाश सो निजधाम[5] वे ।
इस चाम[6] से त्यज[7] नेह[8] तूं, उस धाम कर विश्राम[9] वे ।।१।।
इक दमक तेरी पाय के सब चमकदा संसार वे ।
टुक[10] चीन्ह ब्रह्मानन्द को, जगनीर[11] से ह्वे पार वे ।।२।।
मंसूर[12] ने सूली सही, पर बोलता वही बयन[13] वे ।
बन्दा[14] न पायो खल्क[15] में, जब देखियो निज[16] नयन वे ।।३।।
आशिक़ लखावे सैन[17] जो, लख[18] सैन को कर चैन वे ।
तू आप मालिक ख़ुद ख़ुदा, क्यों भटकदा दिन रैन[19] वे ।।४।।
भाखे[20] ज्ञानी सुनरे गियानी, नीर[21] न, धर धीर वे ।
आपा[22] भुलायो जग बनायो, सब आपनी तक्सीर[23] वे ।।५।।

१.वेद वाक्य अर्थात् अहं ब्रह्मास्मि इत्यादि, २.चन्द्रमा, ३. सूर्य, ४.अग्नि ५.अपना असली घर, परम धाम, अर्थात् आत्मस्वरूप, ६. चमड़ा अर्थात् देह, ७. छोड़, ८. प्रीति, आशक्ति, ९. आराम, चैन, १०. जरा अनुभव कर, ११. भवजल, जगत् रुपी समुद्र से पार हो, १२.एक मस्त ब्रह्मज्ञानी का नाम है, १३. कलमा अनल हक, १४. जीव, दास, १५. सृष्टि, जगत् १६. अपने नेत्र, १७.इशारा, संकेत, १८.समझ, पहचान, १९.रात्रि, २०.कहे, २१.जल २२.अपना स्वरूप, २३. दोष, अपराध, (अहं ब्रह्मास्मि) ।

(३३)

झिंजोटी, ताल दादरा

ग़फ़लत से जाग देख क्या, लुतुफ़ की बात है ।
नज़दीक यार है मगर नज़र न आत है ।। (टेक)
दूई की गर्द से, चशम[१] की रौशनी गई ।
महबूब[२] के दीदार[३] की ताक़त नहीं रही ।।
इसी बात से दुन्या के तू फंदे में फात[४] है ।। गफ़लत० १
बिसियार[५] तलब[६] है अगर तुझको दिदार की ।
मुर्शिद[७] के सखुदन[८] से चलो गली विचार की ।।
जिससे पलक में फन्द सभी टूट जात हैं ।। गफ़लत० २
जिसके जुलूस[९] से तेरा रौशन वजूद[१०] है ।
खिलक़त[११] की सभी खूबियों का भी जो खूब है ।।
सोई है तेरा यार यह सब वेद गात है ।। गफ़लत० ३
कहते हैं ब्रह्मानन्द नहीं तेरे से जुदा ।
वह ही है तो कुरान में, लिक्खा है जो ख़ुदा ।।
जिगर में लेक[१२] समझना मुश्किल की बात है ।। गफ़लत० ४

---

१. नेत्र, २. प्यारा भगवत, ३. दर्शन, ४. आसक्त, फंसा हुआ, ५. अधिक, बहुत, ६. जिज्ञासा, ढूंढ़, चाह, ७. गुरू, ८. उपदेश, नसीहत, ९. उपस्थिति अर्थात् अस्ति से, १०. अस्ति, ११. सृष्टि, १२. किन्तु ।

(३४)

झिंजोटी, ताल दादरा

गाफ़िल ! तू जाग देख क्या तेरा स्वरूप है ।
किस वास्ते पड़ा जनम मरण के कूप[1] है ।। (टेक)
यह देह गेह नाशवान है नहीं तेरा ।
वृथाभिमान जाति में फेरे कहाँ घेरा ।।
तू तो सदा विनाश से परे अनूप[2] है ।। गाफ़िल तू० १
जब भेद-दृष्टि कीन तभी दीन हो गया ।
स्वभाव अपने से ही आप हीन हो गया ।।
विचार देख एक तू भूपों[3] का भूप है ।। गाफ़िल तू० २
तेरे प्रकाश से शरीर चित्त चेतता[4] ।
तू देह तीन[5] दृश्य को सदा है देखता ।।
द्रष्टा नहीं होता कभी तू दृश्यरूप है ।। गाफ़िल तू० ३
कहते हैं ब्रह्मानन्द, ब्रह्मानन्द पाइये ।
इस बात का विचार सदा दिल में लाइये ।।
तू देख जुदा करके जैसे छाया धूप है ।। गाफ़िल तू० ४

(३५)

झिंजोटी, ताल दादरा

अजी मान, मान, मान, कहा मान ले मेरा ।
जान, जान, जान, रूप जान ले तेरा[6] ।। (टेक)

---

१. कुआँ, गड़हा, २. अद्वितीय आनन्द धारा, ३. स्वामी, राजा, ४. हरकत करता, चिन्तवन करता, ५. स्थूल, सूक्ष्म, कारण, ६. अपना ।

जाने बिना स्वरूप, न जावे है ग़म कभी ।
कहते हैं वेद बार बार बात यह सभी ।।
हुशियार हो आज़ाद बार[१] डार मैं मेरा ।। मान० १

जाता है देखने जिसे काशी ओ द्वारका ।
मुक़ाम है बदन में तेरे उस ही यार का ।।
लेकिन बिना विचार किसी ने नहीं ह्यरा[२] ।। मान० २

नयनन[३] के नयन जो है बैनन[४] के बैन है ।
जिसके बिना शरीर में, न पलक चैन है ।
पिछान ले बखूब[५] सो स्वरूप है तेरा ।। मान० ३

ऐ प्यारी जान ! जान तू भूपों की भूप है ।
नाचत प्रकृति है सदा मुजरा अनूप है ।
संभाल अपने को, वह तुझे करे न घेरा ।। मान० ४

कहते हैं **ब्रह्मानन्द** ब्रह्मानन्द तू सही ।
बातें, यही पुराण वेद ग्रन्थ ने कही ।।
विचार देख, मेट जन्म मरण का फेरा[६] ।। मान० ५

(३६)

राग भैरवी, ताल ठुमरी

दिलवर पास वसदा, ढूंडन किथे[७] जावना । (टेक)

---

१. भार, २. पाया, ३. चक्षु, आँखें, ४. वाक्य इन्द्री अथवा जो नेत्रों को देखने की शक्ति और जिह्वा को बोलने की शक्ति देने वाला है वो तेरा स्वरूप है, ५. अच्छी तरह से, ६. आवागमन का चक्कर, ७. कहाँ ।

गली ते[1] बाजार ढूंडो, शहर ते दयार[2] ढूंडो ।
घर घर हजार ढूंडो, पता नहीं पावना ।। दिलवर० ४
मक्के ते मदीने जाइये, मत्थे चा मसीत[3] घिसाईये ।
उच्ची कूक बांग सुनाइये, मिल नहीं जावना ।। दिलवर० २
गंगा भावें[4] जमुना न्हावो, काशी ते प्रयाग जावो ।
बद्री केदार जावो, मुड़[5] घर आवना ।। दिलवर० ३
देश ते दसौर ढूंडो, दिल्ली से पशौर ढूंडो ।
भावें ठौर ठौर ढूंडो, किसे न बतावना ।। दिलवर० ४
बनो जोगी ते बैरागी, सन्यासी जग त्यागी ।
प्यारे से न प्रीति लागी, भेष की बटावना ।। दिलवर० ५
भावें गले माला डाल, चंदन लगावो भाल ।
प्रीति नहीं साईनाल, जगत नूं दिखावना ।। दिलवर० ६
मोमनांदी[6] शकल बनावें, काफ़रा दे कम्म कमावें ।
मत्थे ते मेहराब[7] लगावे, मौलवी कहावना ।। दिलवर० ७

(३७)

राग भैरवी, ताल तीन

बराये नाम[8] भी अपना न कुच्छ बाक़ी निशां रखना ।
न तन रखना, न मन रखना, न जी रखना, न जां रखना ।।१।।

---

१. से, २. देश, ३. मसजिद, ४. चाहे, ५. वापिस, ६. दीन ईमान या धर्म वालों की, ७. मसजिद में जो काबे की ओर एक धनुष समान ताक़ होता है जिधर मुंह करके मुसलमान नमाज पढ़ते हैं, ८. नाम मात्र भी, ९. चित्त ।

तग्रल्लुक़[1] तोड़ देना छोड़ देना उसकी पाबन्दी[2] ।
खबरदार अपनी गर्दनन पर न यह बारे-गरां[3] रखना ।।२।।
मिलेगी क्या मदद तुझको मददगाराने-दुनियाँ[4] से ।
उमेदे-यावरी[5] उनसे न याँ रखना, न वाँ रखना ।।३।।
बहुत मज़बूत घर है आक़िबत[6] का दारे-दुनियाँ[7] से ।
उठा लेना यहाँ से अपनी दौलत और वहाँ रखना ।।४।।
उठा देना तसव्वुर[8] गैर[9] की सूरत का आँखों से ।
फ़क़त सीने के आयीने[10] में नक़्शे-दिलस्तां[11] रखना ।।५।।
किसी घर में न घर कर बैठना इस दारे-फानी[12] में ।
ठिकाना बे ठिकाना, और मकाँ बर लामकाँ[13] रखना ।।६।।

(३८)

राग सोहनी, ताल तेवरा

कलजुग नहीं करजुग है यह, याँ दिन को दे अरु रात ले ।
क्या खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले ।। १ टेक
दुनियाँ अजब बाजार है, कुछ जिन्स[14] यां की साथ ले ।
नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात ले ।।

---

१. सम्बन्ध, २. कैद, मजबूरी, विवशता, ३. भारी बोझ, ४. संसार के सहायकों वा सेवकों, ५. फल की आशा, ६. परलोक, ७. संसार के घर से, ८. भ्रम, ख्याल, ९. द्वैत भावना, अनात्मा का, १०. अन्तःकरण के दर्पण में, ११. चित्त हरनेवाले (आत्मा) की सूरत (का ध्यान) रखना १२. मृत्युलोक, नाशवान संसार, १३. देशातीत वा स्थान रहित, १४. वस्तु, चीज़ ।

मेवा खिला, मेवा मिले, फल फूल दे, फल पात ले।
आराम दे, आराम ले, दुख दर्द दे, आफ़ात[1] ले॥
काँटा किसी को मत लगा, गो मिस्ले-गुल[2] फूला है तू।
वह तेरे हक़[3] में तीर है, किस बात पर झूला है तू॥
मत आग में डाल और को, क्या घास का पूला है तू।
सुन रख यह नुकता[4] बेख़बर, किस बात पर भूला है तू॥

कलजुग नहीं० ॥२॥

शोखी शरारत मकरो-फ़न[5] सबका बसेखा[6] है यहाँ।
जो जो दिखाया और को, वह खुद भी देखा है यहाँ॥
खोटी खरी जो कुछ कही, तिसका परेखा[7] है यहाँ।
जौ जौ पड़ा तुलता है मोल, तिल तिल का लेखा है यहाँ॥

कलजुग नहीं० ॥३॥

जो और की बस्ती[8] रखे, उसका भी बसता है पुरा।
जो और के मारे छुरी, उसके भी लगता है छुरा॥
जो और की तोड़े घड़ी, उसका भी टूटे है घड़ा।
जो और की चेते[9] बदी उसका भी होता है बुरा॥

कलजुग नहीं० ॥४॥

जो और को फल देवेगा, वह भी सदा फल पावेगा।
गेहूं से गेहूं, जौ से जौ, चाँवल से चाँवल पावेगा॥

---

१. कष्ट, मुसीबत, २. पुष्प की तरह, ३. तेरे वास्ते, तेरे लिए, ४. रहस्य, ५. दग़ा-फरेब, धोखा, ६. बसेरा, रहने की जगह, घर ७. परखना, जाँचना, ८. नगरी, ९. दिल में लाए, विचार करे।

जो आज देवेगा यहाँ, वैसा ही वह कल पावेगा ।
कल देवेगा कल पावेगा, फिर देवेगा फिर पावेगा ।।
कलजुग नहीं० ।।५।।

जो चाहे ले चल इस घड़ी, सब जिंस यहाँ तैयार है ।
आराम में आराम है, आज़ार में आज़ार[1] है ।।
दुनियाँ न जान इसको मियाँ, दरया की यह मंझधार है ।
औरों का बेड़ा पार कर, तेरा भी बेड़ा पार है ।।
कलजुग नहीं० ।।६।।

तू और की तारीफ़ कर, तुझको सनाख्वानी[2] मिले ।
कर मुश्किल आसां औरों की तुझको भी आसानी मिले ।।
तू और को मेहमान कर, तुझको भी मेहमानी मिले ।
रोटी खिला रोटी मिले, पानी पिला पानी मिले ।।
कलजुग नहीं० ।।७।।

जो गुल[3] खिलावे और का, उसका ही गुल खिलता भी है ।
जो और का कीले[4] है मुंह, उसका ही मुंह किलता भी है ।।
जो और का छीले जिगर, उसका जिगर छिलता भी है ।
जो और को देवे कपट, उसको कपट मिलता भी है ।।
कलजुग नहीं० ।।८।।

कर चुक जो कुछ करना है अब, यह दम तो कोई आन[5] है ।
नुक़सान में नुक़सान है, एहसान में एहसान है ।।

---

१. दुख, २. तारीफ़, स्तुति, ३. फूल, पुष्प, ४. कीले, अर्थात् किसी को बोलने न दे, ५. घडी पल ।

तोहमत में याँ तोहमत मिले, तूफ़ान में तूफ़ान है ।
रैहमान[1] को रैहमान[2] है, शैतान को शैतान है ।।
कलजुग नहीं० ।।६।।

यहाँ ज़ह्र दे तो ज़ह्र ले, शक्कर में शक्कर देख ले ।
नेकों को नेकी का मज़ा, मूज़ी[3] को टक्कर देख ले ।।
मोती दिये मोती मिले, पत्थर में पत्थर देख ले ।
गर तुझको यह बावर[4] नहीं, तो तू भी करके देख ले ।।
कलजुग नहीं० ।।१०।।

अपने नफ़े के वास्ते मत और का नुक़सान कर ।
तेरा भी नुक़सां होवेगा, इस बात पर तू ध्यान कर ।।
खाना जो खा सो देखकर, पानी पिये सो छानकर ।
यां पाँवों को रख फूंककर, और खौफ़ से गुज़रान कर ।।
कलजुग नहीं० ।।११।।

गफ़लत की यह जग्हा नहीं, तू साहिबे-इदराक[5] रह ।
दिल शाद[6] रख दिल शाद रह, ग़मनाक रख ग़मनाक रह ।।
हर हाल में भी तू नज़ीर[7] अब हर कदम की ख़ाक रह ।
यह वह मकाँ है ओ मियाँ ! याँ पाक[8] रह बेबाक[9] रह ।।
कलजुग नहीं० ।।१२।।

---

१. दयावान, २. दयालू, भगवास, ३. सतानेवाला, दुःख देने वाला, ४. निश्चय, यक़ीन, ५. तीव्र द्रष्टा, तेज समझ वाला पुरुष, ६. प्रसन्न चित्त, ७. कवि का नाम है, ८. शुद्ध, पवित्र, ९. निडर, भय रहित ।

(३६)

राग सोहनी, ताल तेवरा

कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और अद्लपरस्ती[1] है । टेक
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यहाँ सौदा दस्त बदस्ती है ।।
दुनिया है जिसका नाम मियाँ ! यह अजब तरह की हस्ती[2] है ।
मँहगों को तो यह मँहगी है और सस्तों को यह सस्ती है ।
यहाँ हरदम झगड़े उठते हैं, हर आन[3] अदालत बस्ती है ।
गर मस्त करे तो मस्ती है और पस्त[4] करे तो पस्ती है ।।
जो और किसी का मान रखे, तो उसको भी अरु मान[5] मिले ।
जो पान खिलावे पान मिले, जो रोटी दे तो नान[6] मिले ।।
नुक़सान करे नुक़सान मिले, एहसान करे एहसान मिले ।
जो जैसा जिसके साथ करे, फिर वैसा उस को आन मिले ।।
कुछ देर नहीं अन्धेर० ।।२।।
जो और किसी की जाँ बख़शे, तो हक़[7] उसकी भी जान रखे ।
जो और किसी की आन[8] रखे, तो उसकी भी हक़ आन रखे ।।
जो यां का रहनेवाला है, यह दिल में अपने ठान रखे ।
यह तुरत फुरत[9] का नक़शा है, उस नक़शे को पहचान रखे ।।
कुछ देर नहीं अन्धेर० ।।३।।

---

१. न्याय, २. वस्तु है, ३. हर वक्त, हर दम, ४. घटावे कम करे, अर्थात झगड़े बढ़ावे तो उसके वास्ते बाजार गर्म है और जो लड़ाई-झगड़ों को घटाना चाहे तो उसके वास्ते घटा हुआ बाजार है, ५. अधिक, ६. रोटी, ७. ईश्वर, ८. इज्जत, मान, ९. जल्दी, फौरन अर्थात् अदले का बदला फौरन ही मिल जाता है ऐसा दुनियाँ का नक्शा है ।

जो पार उतारे औरों को, उसकी भी नाव उतरनी है।
जो गर्क़ करे फिर उसको भी, याँ डुबकूं डुबकूं करनी है ।।
शमशेर, तवर, बन्दूक, सिनां[1] और नश्तर तीर निहरनी[2] है।
याँ[3] जैसी जैसी करनी है, फिर वैसी वैसी भरनी है ।।
कुछ देर नहीं अन्धेर० ।।४।।

जो और का ऊंचा बोल[4] करे, तो उसका बोल भी बाला[5] है।
और दे पटके तो उस को भी, कोई और पकटने वाला है।
बेजुर्म-ख़ता जिस ज़ालिम[7] ने मज़लूम[8] ज़िबह[9] कर डाला है।
उस ज़ालिम के भी लोहू का फिर बहता नदी ओ नाला है ।।
कुछ देर नहीं अन्धेर० ।।५।।

जो मिसरी और के मुंह में दे, फिर वह भी शक्कर खाता है।
जो और के तईं अब टक्कर दे, फिर वह भी टक्कर खाता है।
जो और को डाले चक्कर में, फिर वह भी चक्कर खाता है।
जो और को ठोकर मार चले, फिर वह भी ठोकर खाता है ।।
कुछ देर नहीं अन्धेर० ।।६।।

जो और किसी को नाहक़ में कोई झूठी बात लगाता है।
जो कोई ग़रीब बिचारे को नाहक़ ही लूट ले जाता है ।।

---

१. भाला, नाखून गीर वा नाखून काटने का औजार, इस पंक्ति में सब हथियारों का नाम है, २. इस जगह, इस दुनियाँ में, ४. नामवरी इज्जत, ५. ऊँचा, ६. बिना दोष वा अपराध के, ७. जुल्म करने वाला, या बिना अपराध के पीड़ा वा दु:ख देने वाला, अन्यायी, ८. जिसके साथ अन्याय किया गया हो, ९. गला छुरी से काट डाला है ।

वह आप भी लूटा जाता है और लाठी मुक्के खाता है ।
वह जैसा जैसा करता है फिर वैसा वैसा पाता है ।।
कुछ देर नहीं अन्धेर० ।।७।।

है खटका उसके साथ लगा, जो और किसी को दे खटका ।
वह गैब[1] से झटका खाता है, जो और किसी को दे झटका ।।
चीरे[2] के बदले चीरा है, पटके[3] के बदले है पटका ।
क्या कहिये और नज़ीर आगे, यह तो है तमाशा झटपट[4] का ।।
कुछ देर नहीं अन्धेर० ।।८।।

(४०)

लावनी

नाम राम का, दिल से प्यारे, कभी भुलाना ना चहिये । टेक
पा कर नर का बदन रतन को, खाक मिलाना ना चहिये ।।
सुन्दर नारी देख पियारी, मन को लुभाना ना चहिये ।
जलती अग्नि में जान पतंग समान समाना ना चहिये ।।
जाने बिना परिणाम काम को हाथ लगाना ना चहिये ।
दिल में अपने ख्याल कपट का जाल बिछाना ना चहिये ।। नाम १
यह माया बिजली का चमका, मन में लाना ना चहिये ।
बिछड़ेगा संयोग भोग का रोग लगाना ना चहिये ।।

---

१. अव्यक्त, दैवयोग से अर्थात् ईश्वर से वह चोट खाता है, २. एक प्रकार की सुन्दर पगड़ी का नाम है, ३. जो कपड़ा कमर मे बांधा जाता है, ४. इसी समय (तुरन्त) बदला देने वाला ।

लगे हमेशा रंग, संग दुर्जन के जाना ना चहिये।
नदी नाव की रीति किसी से प्रीति लगाना ना चहिये ।। नाम २
बांधव[1] जन के हेत[2] पाप का खेत जमाना ना चहिये।
अपने पावों पर अपने कर[3] से चोट लगाना ना चहिये ।।
अपनी करनी भरनी दोष किसी पर लाना ना चहिये।
अपनी आँख है मंद, चंद को दो बतलाना ना चहिये ।। नाम ३
करना जो शुभ काज आज कर देर लगाना ना चहिये।
कल जाने क्या हाल काल को दूर पिछाना ना चहिये ।।
दुर्लभ तन को पा कर फिर विषयों में गंवाना ना चहिये।
भवसागर में नाव डाल चक्कर में डुबाना ना चहिये ।। नाम ४
दारादिक[4] सब घेर फेर तिन में अटकाना ना चहिये।
करी वमन[5] के ऊपर फिर से दिल ललचाना ना चहिये ।।
जान अपानो रूप कूप[6] गृह में लटकाना ना चहिये।
पूरे गुरु को खोज धरम का बोझ उठाना ना चहिये ।। नाम ५
वचना चाहे पापन से तो मौत भुलाना ना चहिये।
जो है सुख की लाग, तो कर सब त्याग, फसाना ना चहिये ।।
जो चाहे तू ज्ञान, विषय के बाण चलाना ना चहिये।
जो है मोक्ष की आश[7], संग की पाश[8], बढ़ाना ना चहिए ।। नाम ६
परमेश्वर है तन में, बन में खोज लगाना ना चहिये।
कस्तूरी है पास मृगी के, घास सुंघाना ना चहिये।

१. सम्बन्धी, २. कारण, ३. हाथ, ४. स्त्री इत्यादि, ५. क़ै की हुई या उलटी, ६. घर रूपी कुंआ, ७. आशा, ८. फाँसी, जाल।

कर सत्संग, विचार, निहार, कभी बिसराना ना चहिये ।
आतम-सुख को भोग, भोग में फिर भटकाना ना चहिये ।। नाम ७

(४१)

लावनी

चेतो चेतो जल्द मुसाफ़िर गाड़ी जाने वाली है । टेक०
लाइन किलियर लेने को तैयार गार्ड बनमाली है ।।
पाँच धातु की रेल है जिसको, मन अंजन ले जाता है ।
इन्द्रीगण के पहियों से, वह खूब ही तेज़ चलाता है ।।
मील हज़ारों चलने पर भी थकने वह नहीं पाता है ।
कठिन वज्र लोहे जैसा हो पर चंचल दिखलाता है ।।
बड़े गार्ड बनमाली से होती इसकी रखवाली है ।।१।। चेतो०
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती तुरिया चार मुख्य स्टेशन हैं ।
आठ पहर इनही में बिचरे रेल सहित जो अंजन है ।।
कर्म, उपासन, ज्ञान टिकट घर लेता टिकट हर इक जन है ।
फ़र्स्ट, सैकंड, अरु थर्ड क्लास ले जितना पल्ले शुभ धन है ।।
बैठ न पावे हरगिज़ वह नर जो इस ज़र[1] से खाली है ।।२।। चेतो०
रहगीरों के ललचाने को नाना रूप से सजती है ।
तीन घटिका बाल, तरुण और जरा[2] की इसमें बजती है ।।
तीसरी घंटी होने पर झट जगह को अपनी तजती है ।
आते जाते सीटी देकर रोती और चिल्लाती है ।।
धर्म सनातन लाइन छोड़ के निपट[3] बिगड़ने वाली है ।।३।। चेतो०

---

१. धन, २. बुढ़ापा, ३. जल्द ।

पाप पुण्य के भार का बंडिल अक्सर साथ ही रखते हैं ।
काम क्रोध लोभादिक डाकू खड़े राह में तकते हैं ।।
स्टेशन स्टेशन पर अनेक रोगादिक रिपू[१] भटकते हैं ।
पुलिसमैन सद्गुरु उपदेशक रक्षा सबकी करते हैं ।।
निर्भय वह ही जाता है जो होवे पूरा ज्ञानी है ।।४।। चेतो०

(४२)

तर्ज़ लैली मजनूं

प्रभु प्रीतम जिसने बिसारा, हाय जनम अमोलक बिगाड़ा ।। टेक०
धन दौलत माल खज़ाना, यह तो अन्त को होवे बेगाना ।
सत्य धर्म को नहीं बिचारा, भूला फिरता है मुग्ध[२] गंवारा ।।१।। प्रभू०
झूठे मोह में तन मन दीना, नाहीं भजन प्रभू का कीना ।
पुत्र पौत्र और परिवारा[३], कोई संग न चल्लन हारा ।।२।। प्रभू०
भ्रातृ भाव न प्रीति परस्पर, कपट छल है भरा मन अन्दर ।
कुछ भी किया न पर उपकारा, खोटे कर्मों का लिया सहारा ।।३।। प्रभू०
तेरा यौवन और जवानी, ढलती है ज्यों बर्फ़ का पानी ।
मीठी नींद में पांव पसारा, चिड़ियां चुग गई खेत तुम्हारा ।।४।।प्रभू०
धोके बाज़ी के दाम[५] बिछाये, बिषय भोग के चैन उड़ाये ।।
पुण्य दान से रहा नियारा, ऐसे पुरुषों को धिक्कारा ।।५।। प्रभू०
जो कुछ शास्तर वेद बखानें[६], मूरख उलटा उनको जाने ।
जीवन खोया खेल में सारा, सत्संगत से किया किनारा ।।६।। प्रभू०

---

१. शत्रु, २. मूर्ख, आवारह गर्दा, ३. कुटुम्ब, ४. ठेका, ५. जाल, ६. उपदेश करे ।

ऐसे जीने पै तू अभिमानी, टीला रेत का ज्यों बिच पानी ।
क्यों ना गुण अरु कर्म सुधारा, मानुष जन्म ना बारम्बारा ।।७।।प्रभू०
तेरे कर्म हैं नाव[1] समाना, जिसमें बैठा तू अन्जाना ।
गैहरी नदिया दूर किनारा, कोई दम में तू डूबन हारा ।।८।। प्रभू०
अपने दिल में जाग रे भाई, कुछ तो करले नेक कमाई ।
संग न जाये सुत औ दारा[2], सत्य धर्म ही तेरा सहारा ।।९।। प्रभू०

(४३)

राग भिभास, ताल तीन

तू कुछ कर उपकार जगत में, तू कुछ कर उपकार । टेक०
मानुष जनम अमोलक तुझको मिले न बारम्बार ।।१।। तू०
सुकृत[3] अपना कर धन संचय, यह वस्तू है सार ।
देश उन्नती अरू, जन सेवा, गुणियन का सत्कार ।।२।। तू०
शील, सन्तोष, पर स्वारथ रति, दया क्षमा उर धार ।
भूखे भोजन, प्यासे पानी, दीजे यथा अधिकार ।।३।। तू०
कठिन समय में होंगे साथी, तेरे श्रेष्ठ आचार ।
इसीलिये कर इनका संग्रह[5], सुख हो सर्व प्रकार ।।४।। तू०
होय अज्ञानी बन्दा गन्दा, तिसको है धिक्कार ।
ज्ञान ही औषधि सब अवगुण की, कहते वेद पुकार ।।५।। तू०

---

१. नाओ, बेड़ी, किश्ती, २. स्त्री, पुत्र, ३. पुण्य कर्म रूपी धन, ४. परस्वार्थ में लग्न या सुख, ५. एकत्र, ६. कसूर, पाप, बेवकूफियाँ ।

(४४)

राग धुन, ताल तीन

काहे शोक करे नर मन में, वह तेरा रखवारा है रे ।। टेक०
गर्भवास से जब तू निकला दूध स्तनों में डारा है रे ।
वालकपन में पालन कीनों, माता ममता द्वारा है रे ।।१।। काहे०
अन्न रचा मनुषों के कारण पशुओं के हित चारा है रे ।
पक्षी बनमें पान फूल फल, सुख से करत अहारा है रे ।।२।। काहे०
जल में जलचर रहत निरंतर, खावें मांस करारा है रे ।
नाग बसैं भूतल के मांही, जीवें बरष हजारा है रे ।।३।। काहे०
स्वर्ग लोक में देवन के हित, वहत सुधा की धारा है रे ।
ब्रह्मानन्द फ़िकर सब तज के, सिमरो सिर्जन हारा है रे ।।४।। काहे०

(४५)

राग भूपाली, ताल दादरा

विश्वपती के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन ।
क्यों न हो उसको शान्ती, क्यों न हो उसका मन मगन ।।
काम क्रोध लोभ मोह यह हैं सब महाबली ।
इनके हनन[1] के वास्ते जितना हो तुझसे कर यतन ।। १ ।। विश्व०
ऐसा बना स्वभाव को चित्त की शान्ती से तू ।
पैदा न ईर्षा की आंच[2] दिल में करे कहीं जलन ।। २ ।। विश्व०
मैत्री भाव सब से रख, त्याग दे वैर भाव को ।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को, ठीक कर अपना तू चलन ।। ३ ।। विश्व०

---

१. मारने, जीतने, २. आग ।

उससे अधिक न है कोई, जिसने रचा है यह जगत ।
उसका ही रख तू आश्रा, उसकी ही तू पकड़ शरन ।।४ ।। विश्व०
छोड़ के राग द्वेष को, मन में तू अपने ध्यान कर ।
तौ निश्चय तुझको होयगा, यह सब हैं मेरे आत्मन् ।। ५ ।। विश्व०
जैसा किसी का हो अमल[1], वैसा ही पाता है वह फल ।
दुष्टों को मिलता कष्ट है सुष्ठों[2] का होता दुख हरन ।। ६ ।। विश्व०
आप ही सब तू रूप है अपना ही कर तू आश्रा ।
दूजा न हो कोई सहाय[3], छेदे जो तेरे दुःख कठिन ।। ७ ।। विश्व०

(४६)

राग जंगला

नाम जपन क्यों छोड़ दिया, प्यारे (टेक)
झूठ न छोड़ा, क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ।। १ नाम
झूटे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ।। २ नाम
कौड़ी को तो ख़ूब संभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ।। ३ नाम
जिहिं सुमिरन ते अति सुख पावे सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ।। ४ नाम
खालिस इक भगवान् भरोसे, तन मन धन क्यों न छोड़ दिया ।। ४ नाम

(४७)

रागनी पीलू, ताल तीन

नेक कमाई कर ले प्यारे ! जो तेरा परलोक सुधारे । टेक
इस दुन्या का ऐसा लेखा[4] जैसा रात को स्वप्ना देखा ।।१।। नेक०

---

१. कर्म, करनी, आचरण, २. श्रेष्ठ पुरुष, धर्मात्मा या शुभ आचरण वालों, ३. मददगार, साथी, ४. हिसाब, बर्ताव, तरीका ।

ज्यों स्वप्ने में दौलत पाई, आंख खुली तो हाथ न आई ।।२।। नेक०
कुटुम्ब क़बीला काम न आवे, साथ त्यरे इक धर्मही जावे ।।३।। नेक०
सब धन दौलत पड़ा रहेगा, जब तू यां से कूच करेगा ।।४।। नेक०
तोशा[1] कुच्छ नहीं सफ़र है भारी, क्योंकर होगा भला गुज़ारा ।।५।।ने०
अबतक ग़ाफ़िल रहा तू सोया, वक़्त अनमोल अकारथ[2] खोया ।।६।।ने०
टेढ़ी चाल चला तू भाई, पग पग पर है ठोकर खाई ।।७।। नेक०
खूब सोच ले अपने मन में, समय गंवाया मूरखपन में ।।८।। नेक०
यदि अब भी ना यत्न करेगा, तो पछताना तुझे पड़ेगा ।।९।। ने०
कर सत्संग अरु विद्याध्यैन[3], तब पावै तू सुख और चैन ।।१०।। ने०
एक प्रभू बिन और न कोई, जिसके सुमरे मुक्ती होई ।।११।। नेक०
उसी का केवल[4] पकड़ सहारा, क्यों फिरता है मारा मारा ।।१२।। ने०

(४८)

सोरठ ताल दादरा वा जैजयवंती (महल्ला ९)

राम सिमर, राम सिमर, यही तेरो काज[5] है ।। टेक०
माया को संग त्याग, प्रभू जी की शरण लाग ।
जगत सुख मान मिथ्या, झूठो ही सब साज है ।।१।। राम०
स्वप्ने जैसा धन पहचान, काहे पर है करत मान ।
बालू की सी भित्त[6] जैसे वसुधा[7] को राज है ।।२।। राम०
नानक जन कहत बात, विनस जायो तेरो गात[8] ।
छिन्न छिन्न कर गयो काल, तैसे जान आज है ।।३।। राम०

---

१. रास्ते का भोजन आदि, २. बेफायदा, व्यर्थ, ३. ब्रह्म-विद्या का पढ़ना, ४. सिर्फ, कवि का नाम भी है, ५. फर्ज, काम, ६. रेत का घर या रेत की दीवार, ७. धन दौलत, ८. अंग बल ।

(४९)

राग जयजयवंती (महल्ला ९)

राम भज, राम भज, जनम सिरात[1] है। (टेक)
कहूं कहा बार बार, समझत न क्यों गंवार।
बिनसत न लागे बार, ओरे[2] सम गात[3] हैं ॥१॥ (राम)
सगल[4] भरम डार दे, गोविन्द को नाम ले।
अन्त बार संग तेरे, यही एक जात है ॥२॥ (राम)
विषया[5] विष ज्यों विसार, प्रभु को यश हिय[6]-धार।
नानक जन कह पुकार, अवसर[7] बिहात[8] है ॥३॥

(५०)

राग तिलंग (महल्ला ९)

चेतना है तो चेत ले, निश-दिन[9] में प्राणी (टेक)
छिन छिन अवधि[10] बिहात[11] है फूटे घट ज्यों पानी ॥१॥
हरिगुण काहे न गावहीं, मूरख अज्ञाना।
झूठे लालच लाग के, नहीं मरण पिछाना ॥२॥
अजहूँ कुछ बिगड़ियों नहीं, जो प्रभु गुण गावे।
कहो नानक तिह[12] भजन से निर्भय पद पावे ॥३॥

---

१. गल रहा, बीत रहा है, २. ओले, ३. शरीर, ४. सारे, ५. विषयों को विष या जहर समझकर, ६. हृदय में धारण कर, ७. समय, आयु, ८. बीती जाती हैं, ९. रात दिन, १०. आयु, ११. बीती जाती है, १२. इसके।

(५१)

गाड़ी (महल्ला ६)

साधो ! मन का मान त्यागो (टेक)
काम क्रोध संगति दुर्जन की ताते[1] इह[2]-निश भागो ॥१॥
सुख-दु:ख दोनों सम कर जाने, और मान अपमाना ।
हर्ष शोक से रहे अतीता, तिन जग-तत्त्व पिछाना ॥२॥
उस्तति[3] निन्दा दोऊ त्यागे, खोजे पद निर्वाणा ।
जन नानक यह खेल कठिन है, किन्हू[4] गुरुमुख जाना ॥३॥

(५२)

राग गौड़ी वा धनासरी, ताल धुमाली (महल्ला ६)

साधो ! गोविन्द के गुण गावो । (टेक)
मानुष जन्म अमोलक पायो, बिरथा[5] काहे गंवावो ॥१॥ (साधो)
पतित पुनीत दीन बंधु हरि, शरण ताहि तुम आवो ।
गज[6] को त्रास[7] मिट्यो जहि सिमरत, तुम काहे बिसरावो ॥२॥ साधो)
तज अभिमान मोह माया पुनि[8], भजन राम चित्त लावो ।
नानक कहत मुक्ति-पंथ यह, गुरुमुख होय तुम पावो ॥३॥ (साधो)

(५३)

राग रामकली (महल्ला ६)

प्राणी ! नारायण सुधि ले । (टेक)

---

१. उससे, २. दिन-रात, ३. स्तुति, ४. किसी-किसी ने, ५. व्यर्थ, ६. हाथी, ७. भय, ८. फिर, पुनः ।

छिन छिन अवध[1] घटे निशवासर[2] वृथा जात है देह ।।१ ।। (टेक)
तरुनापो विषयन संग खोयो, बालपना[3] अज्ञाना ।
वृद्ध भयो अजहों नहीं समझे, कौन कुमति उरझाना ।।२।। (टेक)
मानुष जन्म दियो जिस ठाकुर, सो तैं[4] क्यों बिसरायो ।
मुक्ति होत नर जाके सिमरे, निमष[5] न ताको गायो ।।३।। (टेक)
माया को मद कहा[6] करत है, संग न काहू जाई ।
नानक कहत चेत चिन्ता मनि होत है अन्त सहाई ।।४।। (टेक)

(५४)

राग बिलाबल (महल्ला ६)

जा[7] में भजन राम को नाहिं (टेक)
तैं[8] नर जन्म अकारथ खोया, यह राखो मन मांहि ।।१।। (टेक)
तीरथ करे, व्रत पुनि राखे, न मनुआ बश जाको ।
निष्फल धर्म तांहि तुम मानो, साच कहत मैं या को ।।२।। (टेक)
जैसे पाहन[9] जल में राख्यो, भेदे[10] नहि तेहि[11] पानी ।
तैसे ही तुम तांहि पिछानो, भक्तिहीन जो प्राणी ।।३।। (टेक)
कलु[12] में मुक्ति नाम ते पावत, गुरु यह भेद बतावे ।
कहो नानक सोई नर गरुवा[13], जो प्रभु के गुण गावे ।।४।। (टेक)

---

१. आयु, २. रात-दिन, ३. युवावस्था, ४. तूने, ५. एक पलक भर, ६. क्या, ७. जिसमें, ८. वह, ९. पत्थर, १०. छेदे, ११. उसको, १२. कलियुग, १३. श्रेष्ठ, बड़ा ।

(५५)

राग रामकली (महल्ला ९)

रे मन ! ओट[1] लेओ हरि नामा । (टेक)
जाके सिमरन दुर्मति नासे, पावें पद निर्वाणा ।।१।। (टेक)
बड़ भागी[2] तेहि[3] जन को जानो, जो हरि के गुण गावे ।
जन्म जन्म के पाप खोये के, पुनि बैकुण्ठ सिधावे ।।२।। (टेक)
अजामील को अन्त काल में, नारायण सुधि आई ।
जा गति को योगी सुर[4] बांछत[5], सो गति छिन में पाई ।।३।। (टेक)
नाहीं गुण नाहीं कुछ विद्या, धर्म कौन गज[6] कीना ।
नानक विरद[7] राम का देखो, अभय दान तैं दीना ।।४।। (टेक)

(५६)

श्लोक महल्ला ९

गुण गोविन्द गायो नहीं, जन्म अकारथ[8] कीन ।
कहो नानक हरिभज मना, जहि विधि जल को मीन[9] ।।१।।
विषयन[10] स्यों काहे रुच्यो, निमष[11] न होत उदास ।
कहो नानक भज हरि मना, पड़े न यम की फास ।।२।।
तरुनापो[12] यूं ही गयो, लियो जरा तन[13] जीत ।
कहो नानक भज हरि मना, अवध[14] जात है बीत ।।३।।

---

१. आश्रय, २. बड़ा भाग्यवान् ३. उस, ४. योगी और देवता अथवा योगीश्वर, ५. चाहे हैं, ६. हाथी, ७. महिमा, वादा, ८. व्यर्थ किया, ९. जल की मच्छी जैसे जल बिना नहीं जीती है वैसे नाम बिना जीना कठिन हो जाय, १०. विषयों के साथ, ११. पलक भर भी, १२. युवावस्था, १३. बुढ़ापा, १४. आयु ।

वृद्ध भयो सूझे नहीं, काल पहुंचयो ग्रान ।
कहो **नानक** नर बावरे ! क्यों न भजे भगवान् ।।४।।

धन दारा संपति सगल, जिन ग्रपनी कर मान ।
इनमें कुछ संगी नहीं, **नानक** साची जान ।।५।।

पतित उधारन, भयहरन, हरि ग्रनाथ के नाथ ।
कहो **नानक** तहि[1] जानिये, सदा बसत तुम हाथ ।।६।।

तन धन जहि[2] तो को दियो, तास्यो[3] नेह[4] न कीन ।
कहो **नानक** नर बावरे ! ग्रब क्यों डोलत दीन ।।७।।

तन धन सम्पति[5] सुख दियो, ग्ररु जहि[6] नीके[7] धाम ।
कहो **नानक** सुन रे मना ! सिमरत काहे न राम ।।८।।

सब दुख दाता राम है, दूसर नाहि न कोय ।
कहो **नानक** सुन रे मना ! तहि सिमरत गति होय ।।९।।

जहि सिमरत गति पाइये, तहि भज रे तै मीत[8] ।
कहो **नानक** सुन रे मना ! ग्रवध घटत है नीत[9] ।।१०।।

पाँच तत्त्व को तन रच्यो, जानहु चतुर सुजान ।
जिह ते उपाज्यो **नानका** ! लीन ताहि में मान ।।११।।

घट घट में हरि जू बसे, सन्तन कह्यो पुकार ।
कहो **नानक** तिह भज मना ! भवनिधि[10] उतरे पार ।।१२।।

---

१. उसे, २. जिसने, ३. उसके साथ, ४. प्यार, प्रीति, ५. संपत्ति, ६. जिसने, ७. ग्रच्छे स्थान, ८. ऐ मित्र, ९. नित्य, १०. संसार समुद्र ।

सुख दुःख जिह परसे[1] नहीं, लोभ मोह अभिमान ।
कहो नानक सुन रे मना ! सो मूरत भगवान ।।१३।।

उस्तति[2] निन्दा नाहि जिहिं, कंचन लोह समान ।
कहो नानक सुन रे मना ! मुक्ति ताहि[3] ते जान ।।१४।।

हर्ष शोक जाके नहीं, बैरी मीत समान ।
कहो नानक सुन रे मना ! मुक्ति ताहि ते जान ।।१५।।

भय काहू को देत नहीं, नहीं भय मानत आन[4] ।
कहो नानक सुन रे मना ! ज्ञानी ताहि बखान[5] ।।१६।।

जिहि विषया[6] सगली तजी, लियों भेष बैराग ।
कहो नानक सुन रे मना ! तिह नर माथे भाग ।।१७।।

जिहि माया ममता तजी, सब से भयो उदास ।
कहो नानक सुन रे मना ! तिह घट ब्रह्म निवास ।।१८।।

जिहि प्राणी हौं[7] मैं तजी, कर्त्ता राम पछान ।
कहो नानक वह मुक्त नर, यह मन साँची जान ।।१९।।

भय नासन दुर्मति हरन, कलि में हरि को नाम ।
निश-दिन जो नानक भजे, सफल होय तिह काम ।।२०।।

जिह्वा गुण गोविन्द भजो, करन सुनो हरि नाम ।
कहो नानक सुन रे मना ! पड़े न भय के धाम ।।२१।।

---

१. स्पर्श न करे, २. स्तुति, ३. इसी से, ४. दूसरे का, ५. कहो, जानो, ६. विषय वासनाएं, ७. अहंकार, ममत्व ।

जो प्राणी ममता तजे, लोभ मोह अहंकार ।
कहो नानक आपन[1] तरे, औरन लेत उद्धार ।।२२।।
ज्यों स्वप्ना अरु पेखना[2], ऐसे जग को जान ।
इन में कछु सांचो नहीं, नानक बिन भगवान् ।।२३।।
निश दिन माया कारणे, प्राणी डोलत नीत[3] ।
कोटन में नानक कोऊ नारायण जहिं चीत[4] ।।२४।।
जैसे जल से बुदबुदा, उपजे बिनसे नीत ।
जग रचना तैसे रची, कहो नानक सुन मीत ।।२५।।
प्राणी कछू न चेतई[5], मद माया के अन्ध ।
कहो नानक बिन हरि भजन, पड़त ताहि यम फंद ।।२६।।
जो सुख को चाहें सदा, शरण राम की ले ।
कहो नानक सुन रे मना ! दुर्लभ मानुष देह ।।२७।।
माया कारण धावहिं[6], मूरख लोग अजान ।
कहो नानक बिन हरि भजन, बिरथा जनम् सिरान[7] ।।२८।।
जो प्राणी निशि दिन भजे, रूप राम तिहिं[8] जान ।
हरिजन, हरि अन्तर नहीं, नानक सांची मान ।।२९।।
माया मन में फंस रह्यो, बिसर्यो गोविन्द नाम ।
कहो नानक बिन हरि भजन, जीवन कौने[9] काम ।।३०।।

---

१. अपने आप, २. देखना, ३. नित्य, ४. चित्त में, ५. चितवन करे, ६. दौड़ते हैं, ७. बीता जा रहा है, ८. उसे राम का रूप जान ९. किस काम का ।

प्राणी ! राम न चेतई, मद माया के अन्ध ।
कहो **नानक** हरि-भजन बिन, पड़त ताहि यम-फन्द ।।३१।।

सुख में बहु संगी भये, दुःख में संग न कोय ।
कहो **नानक** हरि भज मना ! अन्त सहाई होय ।।३२।।

जन्म-जन्म भरमत फिर्यो, मिट्यो न मन को त्रास[1] ।
कहो **नानक** हरि भज मना ! निर्भय पावें बास ।।३३।।

यत्न बहुत मैं कर रह्यो, मिट्यो न मन को मान ।
दुर्मति स्यों **नानक** फंधयो, राख लेयो भगवान ।।३४।।

बाल, जवानी, अरु वृद्ध पुनि, तीन अवस्था जान ।
कहो **नानक** हरि भजन बिन, बिरथा सब ही मान ।।३५।।

करनो हुतो[2] सो ना कियो, पड्यो लोभ के फन्ध ।
नानक समयो रम गयो, अब क्यों रोवत अन्ध ।।३६।।

मन माया में रम रह्ययो, निकसत नाहि न मीत ।
नानक मूरत चित्र ज्यों, छोड़त नाहि न भीत[3] ।।३७।।

नर चाहत कछु और, औरे की औरे भई ।
चितवत रहयो ठगौर[4], **नानक** फाँसी गल पड़ी ।।३८।।

यत्न बहुत सुख के किये, दुःख को कियो न कोय ।
कहो **नानक** सुर रे मना ! हरि भावे सो होय ।।३९।।

---

१. भय, २. करने के योग्य जो था, ३. दीवार को जैसे चित्र नहीं छोड़ता, वैसे माया को मन नहीं छोड़ रहा है, ४. चित्त के भीतर ठगपन ।

जगत भिखारी फिरत है, सब को दाता राम ।
कहो **नानक** मन सिमर तिहि, पूरण होवें काम ।।४०।।

झूठे मान कहां करे, जग स्वप्ने ज्यों जान ।
इन में कछु तेरो नहीं, **नानक** कह्यो बखान ।।४१।।

गर्व करत है देह को, बिनसे छिन में मीत ।
जिहि प्राणी हरि यश कह्यो, **नानक** तिहि जग जीत ।।४२।।

जिहि घट सिमरन राम को, सो नर मुक्ता जान ।
तिहि नर हरि अन्तर नहीं, **नानक** सांची मान ।।४३।।

एक भक्ति भगवान, जिहि प्राणी के नाहि मन ।
जैसे सूकर[1] स्वान[2], **नानक** मानो ताहि तन ।।४४।।

स्वामी को गृह ज्यों सदा, स्वान तजत नहीं नित्त[3] ।
नानक यह विधि हरि भजो, इक मन होय इक चित्त ।।४५।।

तीरथ, व्रत अरु दान कर, मन में धरे गुमान ।
नानक निष्फल जात तिह, ज्यों कुंजर[4] असनान ।।४६।।

सिर कम्पया, पग डगमगे नैन[5] जोत से हीन ।
कहो **नानक** यह विधि भई, तऊ न हर रस लीन ।।४७।।

निज कर देखियो जगत में, कोऊ काहू को नाहिं ।
नानक थिर[6] हरि भक्ति है, तिहि[7] राखो मन मांहि ।।४८।।

---

१. सूअर, २. कुत्ता, ३. नित्य, ४. हाथी जैसे स्नान के बाद धूल अपने ऊपर फेंक लेता है वैसे ही अहंकारी पुरुष के तीर्थ व्रत इत्यादि निष्फल होते हैं, ५. नेत्र प्रकाश रहित, ६. स्थिर, ७. उसे ही ।

जग रचना सब झूठ है, जान लियो रे मीत ।
कहो नानक थिर ना रहे यों बालू की भीत ।।४६।।

राम गयो, रावण गयो, जाको बहु परिवार ।
कहो नानक थिर कछु नहीं, स्वप्ने ज्यों संसार ।।५०।।

चिंता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय ।
यह मारग संसार को, नानक थिर नहिं कोय ।।५१।।

जो उपज्यो सो विनशिंहे, पड़ो आज कि काल ।
नानक हरि गुण गाय ले, छाड़ सगल[1] जंजाल ।।५२।।

बल छुटियो बंधन पड़े, कछु न होत उपाय ।
कहो नानक अब ओट[2] हरि गज ज्यों हो असहाय ।।५३।।

*बल होवा बंधन छुटे, सब किछू होत उपाय ।
नानक तुम्हरे साथ सब, तुम ही होत सहाय ।।५४।।

संग सखा सब तज गये, कोउ न निभयो साथ ।
कहो नानक यह विपद में, टेक[3] एक रघुनाथ ।।५५।।

*नाम रह्यो, साधू रह्यो, रह्यो, गुरु गोविन्द ।
कहो नानक यह जगत में, किन जपयो गुरुमन्त ।।५६।।

*राम नाम उर[4] में गह्यो[5], जाके सम नहीं कोय ।
जिहि सुमिरत संकट मिटें, दरश तुहारो होय ।।५७।।

---

१. सारा, २. आश्रय, ३. सहारा, ४. हृदय, ५. ग्रहण करो, धसयो चित्त में खचित हुआ ।

*यह गुरु गोविन्द सिंह जी के उत्तर हैं ।

(५७)

राग ताल

रे प्राणी ! क्या तेरा मेरा, जैसे तरवर पंख बसेरा ।
जल की भीत पवन का थम्बा रक्त बन्धु का गारा ।।
हाड़ मांस नाड़ी का पिञ्जरा, पंछी बसे बिचारा ।
राखो कन्ध, उसारो नीमाँ, साढ़े तीन हाथ तेरी सीमाँ ।।
वाँके बाल, पाग सिर टेढ़ी, यह तन होगा भस्म की ढेरी ।
ऊंचे मन्दिर, सुन्दर नारी, राम नाम की बाज़ी हारी ।।
मेरी जाति कमीना, बुद्धि हीना, ओछा जन्म हमारा ।
तुमरी शरणागत मैं प्रभु जी, कहे रवीदास चमारा ।।

(५८)

राग ताल

वैरागिन भूली आप में और जल में खोजे राम (टेक)
जल में खोजे राम जाय कर तीरथ छाने ।
ढूण्ढ फिरी चहुं खूट, नहीं सुध अपनी आने ।।१।।
फूल माँहि ज्यों वास, काठ में अग्नि समानी ।
खोदे बिना नहीं मिले, रहे धरती में पानी ।।२।।
जैसे दूध में घृत छिपा, छिपी मेंहदी में लाली ।
ऐसे पूरण ब्रह्म, कहूं तिल भर नहीं खाली ।।३।।
पलटू[1] कर सतसंग, बीच में कर ले अपना काम ।
वैरागिन भूली आप में और जल में खोजे राम ।।४।।

---

१. कवि का नाम ।

(५९)

राग सिन्दौरा, ताल दीपचन्दी*

गुज़ारी उम्र झगड़ों में बिगाड़ी अपनी हालत है ।
हुआ खारिज अपील अपना, अजायब यह वकालत है ।।१।।
मुक़द्दमे गैर लोगों के हज़ारों कर दिये फ़ैसल ।
न देखा मिसल अपनी को, अजायब यह अदालत है ।।२।।
दलीलें दे के गैरों पर किया साबित उसूल अपना ।
दिल अपने का न शक टूटा, अजायब यह दलालत है ।।३।।
बहुत पढ़ने पढ़ाने से हुआ सब इल्म में कामिल ।
न पाया भेद रब्बी[1] का अजायब यह कमालत है ।।४।।
बना हाफ़िज़[2] पढ़े मसले, सुनाये दूसरों को भी ।
वले टूटा न कुफ़्र अपना अजायब यह मसालत है ।।५।।
तू कर फ़ैसल हिसाब अपना, तुझे औरों से क्या गोबिन्द ।
न क़िस्सा तूल दे इतना, फ़ज़ूल ही यह तलावत है ।।६।।

(६०)

राग धनासारी, ताल धुमाली

अजहों तोहे मन ! समझ न आई । (टेक)
कियो न कुछ शुभ कर्म देह धर, हरि की सुध बिसराई ।।१।।

---

१. तू ही रब या ब्रह्म है, २. कुरान (धर्म पुस्तक) को कण्ठाग्र कर देता है ।

*नोट--यह कविता स्वामी रामजी के शिष्य स्वामी गोविन्दा की है ।

दिन खोवत झूठे झगड़ों में, सोवत रैन बिताई ।
देख विचार बहुरि[1] नहिं पैहै, यह अवसर सुखदाई ।।२।।
छल प्रपंच फैलाये जगत में, नाना स्वाँग बनाई ।
परधन, परतिया[2] में चित्त राखत, चाहत मान बड़ाई ।।३।।
अजहु त्याग **बलदेव** नींद को, आजा प्रभु शरणाई ।
परम पिता इक वही अगोचर, सब विधि करत सहाई ।।४।।

(६१)

राग गौरी, ताल धुमाली

मनुवा ! मोह निद्रा त्याग । (टेक)
नाम रूप मय यह जग स्वप्ना, क्या सोवे है जाग ।।१।।
जिन विषयों को भोग रह्यो अब, कल वह स्वप्न समान।
इसमें कहां भयो रत मूरख, अजहुं अचेत अजान ।।२।।
माया का सुख आदि अन्त वत, या में क्यों भरमाया ।
ब्रह्मानन्द अनन्त अनादी, वाको क्यों बिसराया ।।३।।
मानुष जन्म **मेहर** अति दुर्लभ, बार बार नहीं पावे ।
उठ स्वरूप चिन्तन कर जा रे, बहुरि यहाँ नहीं आवे ।।४।।

(६२)

राग गौरी, ताल धुमाली

हरि पर रखो भरोसा भाई । (टेक)
काहे सोच करो दिन राती, रहो चरणन लौ[3] लाई ।।१।।

१. बार-बार यह समय नहीं है, २. पर दारा, ३. लग्न प्रीति ।

गर्भ में ली सुधि, अब भी लीहे, जब गही[1] बाँह[2] सो अब भी गहे[3] है।
दाँत दिये जिन अन्न भी देहै, कब सुधि है बिसराई ॥२॥
मूरख ! कहा सोच से लेगा, और ताप सन्ताप गहेगा[4]।
तन जिन दिया, वह घर धन देगा, रीति सदा चली आई ॥३॥
तोहे सोच बस अपनो एक का, हरि रक्षक ब्रह्माण्ड अनेक का।
विरला चले मार्ग विवेक का, धीरज मिहर उपजाई ॥४॥

(६३)

राग धनासरी, ताल धुनाली

मनुवा ! तू क्यों भयो दीवाना। (टेक)
छल प्रपंच करत नित मूरख, दुःख को सुखकर माना ॥१॥
माया मोह जन्म के ठगिया, तिनके हाथ बिकाना।
मुख ते धर्म धर्म कहरावत, कर्म करत मन माना ॥२॥
जो प्रभु घट घट की सब जाने, ताते करत बहाना।
तेंहीं ते तू पूछे मारग, आप ही जौन[5] भुलाना ॥३॥
या मनुवा के पीछे चल के, सुख का कहां ठिकाना।
जो प्रताप सुखद[6] को चीन्हे, सोई परम स्याना ॥४॥

---

१. पकड़ी, २. भुजा, ३. अब भी पकड़े है, ४. सहेगा अर्थात सन्तापित या दुखी होगा, ५. जो स्वयं भूले हुए हैं उनसे तू मार्ग पूछ रहा है, ६. जो सुख देने वाले या सुख स्वरूप परमात्मा को पहचाने हैं वही बुद्धिमान है।

(६४)

गजल

तू को इतना मिटा कि तू न रहे
और तुझ में दूई[1] की बू न रहे ।।१।।
जुस्तजू[2] भी हिजाबे - हसना[3] है ।
जुस्तजू है कि जुस्तजू न रहे ।।२।।
आर्ज़ू[4] भी विसाले[5]-परदा है ।
आर्ज़ू है कि आर्ज़ू न रहे ।।३।।

(६५)

राग जंगल रागनी पीलू, ताल तीन

दिन नीके बीते जाते हैं। (टेक)
सुमरिन कर हरि नाम, तज विषय भोग और काम ।
तेरे संग ना जाय एक दाम जो देते हैं सो पाते हैं ।।१।।
कौन तुम्हारा, कुटुम्ब कबीला, किसके हो तुम, कौन तुम्हारा।
तू किसका और कौन तुम्हारा, सब जीते जी के नाते हैं ।।२।।
लख चौरासी भरम के आया, बड़े भाग से नर-तन पाया ।
ता पर भी नहीं करे कमाई, फिर पीछे पछताते हैं ।।३।।
जो तू चाहे विषय-अभिलाषा, मूरख फंसियो मौत की फाँसा।
क्या देखे स्वासन की आशा, गये फेर नहीं आते हैं ।।४।।

---

१. द्वैत, २. जिज्ञासा, ३. पतला पर्दा, सूक्ष्म आवरण, ४. इच्छा
५. मिलने अर्थात् साक्षात्कार में आवरण ६. अच्छे ।

(६६)

ग़ज़ल

आदमी को चाहिये दुनिया में रहना किस तरह ?
जिस तरह तालाब के पानी में रहता है कमल ।।१।।
साहिबे-ज़र मुफ़लिसों पर ज़र लुटायें किस तरह ?
जिस तरह सूखी ज़मीं पर अब्र बरसाता है जल ।।२।।
पाके दौलत है बशर को रहना वाजिब किस तरह ?
जिस तरह झुक कर रहे वह शाख आये जिसमें फल ।।३।।
आदमी अपने इरादे का हो पक्का किस तरह ?
जिस तरह क़ानून है तक़दीरे-क़ुदरत का अटल ।।४।।
रंजो-ग़म दुनिया के इन्साँ भूल जाये किस तरह ?
जिस तरह वह शख्स जिसके ज़ेहन में आये खलल ।।५।।
आदमी जाये मुसीबत के मुक़ाबिल किस तरह ?
जिस तरह है शेर जाता सैल[1] में सीने के बल ।।६।।

(६७)

ग़ज़ल ताल ३

हरि को सुमर तू प्यारे ! आयू विहा[2] रही है ।
दिन दिन घड़ी घड़ी और छिन छिन में जा रही है ।। (टेक)
दीपक की जोत जावे, नदियों का नीर[3] धावे[4] ।
जाती नज़र न आवे, चंचल समा रही है ।।१।। हरि०

---

१. नदी-जल का वेग, २. गुज़र (बीत) रही है, ३. जल, ४. दौड़े अर्थात् बहे ।

पिछली थी जो कमाई, मानुष्य देह पाई ।
नहिं प्रभु के हित[1] लगाई, बिरथा गमा रही है ।।२।। हरि०
घर माल मीत नारी, दुनिया की मौज[2] भारी ।
होवे पलक में न्यारी, दिल को फंसा रही है ।।३।। हरि०
क्या नींद में पड़ा है, सिर काल आ खड़ा है ।
उठ दिन ये चढ़ रहा है, रजनी[3] बता रही है ।।४।। हरि०

(६८)

लावनी लंगड़ी

सुन दिल प्यारे ! भज निज स्वरूप तू बारंबारा । (टेक)
इस दुनिया में एक रतन[4] है, मिलता बारंबार नहीं ।
जैसे फूल गिरा डाली से फिर होता गुलज़ार नहीं ।।
उसकी क़ीमत है बड़भारी, जानत लोग गंवार नहीं ।
परमेश्वर के मिलने का फिर, उसके बिना दुआर नहीं ।।
काँच ख़रीद करे बदले में उसको देकर मति-मारा[5] ।। सुन० १।।
इस दुनिया में इक पुतली[6] ने, ऐसा भारी जाल रचा ।
स्वर्ग लोक पाताल ज़मीं पर, कोई न उसके हाथ बचा ।।
क्या योगी क्या पीर पैग़म्बर सब को उसने दिया नचा ।
फंसा नहीं जो उस बन्धन में, सोई है गुरुदेव सचा ।।
मोक्ष मारग के जाने में, सो ठग जानो लूटनहारा ।। सुन० २।।

---

१. कारण (अर्थात् प्रभु के लिए), २. तरंग, लहर, ३. रात, ४. मनुष्य-देह से मुराद है, ५. बेवकूफ़ जिसकी बुद्धि नहीं, ६. माया से मुराद है।

इस दुनिया में एक अचंभा, हमने देखा है जो बड़ा ।
एक छोड़ कर चला ज़मीं को, दूजा करता है झगड़ा ।।
वह नहीं मन में समझे मूरख, मैं भी जावनहार खड़ा ।
घड़ी पलक का नहीं ठिकाना, किसके भरोसे भूल पड़ा ।।
पर आगे जाने का सामां कोई बिरला करता है प्यारा ।। सुन० ३।।

इस दुनिया में एक कूप[1] है, जिसका पार न कोई पावे ।
तिसके भरने कारण प्राणी, देश देशांतर को जावे ।।
ध्यान भजन चिंतन् ईश्वर का, उसके कारण बिसरावे ।
दीन भया पर घर में जाकर, सेवा कर कर मर जावे ।।
वही जो ध्यावे निज स्वरूप को, शोक फ़िकर तज दे सारा ।।सुन० ४।।

इस दुनिया में एक वृक्ष[2] पर, पक्षी करत बसेरा है ।।
साँझ पड़े जब सब मिल जावें, बिछड़े होत सवेरा है ।
चार घड़ी के रहने कारण, करते मेरा मेरा हैं ।।
ऐसी बात न मन में लावें, बस बस गये बड़ेरा हैं ।
क्या ले आया क्या ले जासी, वृथा करत हैं हंकारा ।। सुन० ५ ।।

इस दुनिया के बीच निरन्तर, एक नदी[3] चलती भारी ।
दिन दिन पल पल छिन छिन, उसका बेग बड़ा है बलकारी ।।
पशु पक्षी नर देव दनुज[4], उसमें बहती दुनिया सारी ।
जमे न उसमें पैर किसी का, करके यतन सब पचहारी ।।
निज स्वरूप बिन जाने प्यारे, कभी न होगा निस्तारा ।। सुन० ६ ।।

---

१. कुआँ, यहाँ मुराद पेट से है, २. यहाँ मुराद घर से है, ३. यहाँ मुराद काल से है, ४. दानव ।

इस दुनिया में एक अंधेरा[1], सबकी आँखों में छाया ।
जिसके कारण सूझ पड़े नहीं कौन हूं मैं कैसे आया ।।
कौन दिशा में जाना मुझको किसे देखकर ललचाया ।
कौन मालिक है दुनिया का किसने रची है यह माया ।।
निजानन्द पाये बिन कबहूं मिटे नहीं यह संसारा ।। सुन० ७।।

(६९)

राग धनासरी, ताल धुमाली

हरि से लग्न कठिन है भाई । (टेक)
जैसे पपीहा प्यासा बूंद का, पिया पिया रट लाई ।
प्यासे प्राण तड़पे दिन राती और नीर[2] ना भाई ।।१।।
जैसा मृग शब्द-स्नेही शब्द सुनन को जाई ।
शब्द सुने और प्राण दान दे, तनिको[3] नहीं डराई ।।२।।
जैसे सती चढ़े सत ऊपर, पिया की राह मन भाई ।
पावक[4] देख डरे कुछ नाहिं, हंसत बैठ जरजाई ।।३।।
छोड़ो धन और तन की आशा, निर्भय हो गुण गाई ।
कहत **कबीर** सुनो भाई साधो, नहीं तो जन्म निसाई[5] ।।४।।

(७०)

राग गौरी, ताल तीन

कर प्रभु से प्रीति मनवा ! कर प्रभु से प्रीति । (टेक)
ऐसो समय बहुर नहीं पइहो, जाय है अवसर बीत ।

---

१. अज्ञान से मुराद है, २. जल, ३. किंचित मात्र, ४. अग्नि, ५. नाश होगा अर्थात् आवागमन न छूटेगा ।

तन सुन्दर छवि देख न भूलो, यह वालू की भीत[1] ।।१।।

सुख सम्पति सपने की बतियाँ[2], जैसे तृष्ण पर शीत[3] ।
जाहीं[4] करम परम पद पावे, सोई करम कर मीत ।।२।।

शरण आय, सो सबहीं उबारें[5], यह है प्रभु की रीति ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, चल हो भवदल[6] जीति ।।३।।

(७१)

साकी, राग कालंगड़ा

पीले प्याला, हो मतवाला ! प्याला प्रेम हरि रस का रे। (टेक)

बालपना सब खेल गंवाया, तरुण भया नारी बस का रे ।
वृद्ध भया, कफ़ वायु ने घेरा, तन से जाय नहीं खसका रे ।।१।।

नहीं सतसंग न कथा कीरतन, नहीं प्रभु चरणन प्रेम रचा रे ।
अबहूं सोच समझ अज्ञानी, इस जग में नहीं कोई अपना रे ।।२।।

काम क्रोध मद लोभ मोह में, निशदिन रहत फंसा र ।
भोग विलास वासना जग की, गल बिच यम का फन्द पड़ा रे ।।३।।

देह मोह में भरमाया, देह खेह यह है किसका रे ।
चौरासी से उबरा[7] चाहे, छोड़ कामिनी का चसका रे ।।४।।

---

१. दीवार, २. बातें, ३. ओस, पाला, ४. जिस, ५. तारें, ६. संसार के भय रूपी दलदल को पार कर- या विषय दल को जीतकर, ७. निकला ।

नाभ कमल बिच है कस्तूरी, जैसे मृग फिरे वन का रे।
भटक भटक क्यों भटका खावे, घट के पट को दे झटका रे ।।५।।
वाद विवाद में निश दिन बीते, मानुष जन्म न सार गहा[१] रे।
नर-देही निष्फल गयी सारी, अवसर पाय न लाभ लहा[२] रे ।।६।।
माता पिता भाई सुत बन्धू, संग नहीं कोई जाय सका रे।
जब लग जीवे हरि गुण गाले, धन यौवन दिन है दस का रे ।।७।।
कर्म धर्म एको नहीं जाना, सार वस्तु नहीं जान पड़ा रे।
बिन सतगुरु इतना दुख पाया, वैद्य मिला नहीं इस तन का रे ।।८।।
चारि खानि[३] नर भरमत डोले, कबहूं, न सतपथ खोज करा रे।
कहें **कबीर** सुनो भाई साधो, नख शिख[४] पूर रहा विष का रे ।।९।।

(७२)

राग मारू

राम सुमिर पछतायेंगा, हे मन ! राम सुमिर। (टेक)
पापी ज्योड़ा[५] लोभ करत है, आज काल उठ जायेगा ।।१।।
लालच लागे जन्म गंवाया, माया भरम भुलायेगा।
धन यौवन का गरब[६] न कीजै, कागज़ ज्यों गल जायेगा ।।२।।

---

१. पकड़ा जाना, २. लिया, पाया, ३. चार योनि, जैसे अण्डज, पिण्डज, श्वेदज, उद्भिज, ४. पापों के नाखून से सिर की चोटी तक उस मनुष्य का देह विष से भरा हुआ है, जो सत्य-पथ पर नहीं चलता है, ५. जीव, चित्त, ६. अहंकार।

जौं[1] जम आय केस गहे पटके, ता दिन कछु न बसायेगा[2]।
सिमरन भजन दया नहीं कीनी, तौ मुख चोटाँ खायेगा ॥३॥
धर्मराज जब लेखा माँगे, क्या मुख लै के जायेगा।
कहत कबीर सुनो रे सन्तो, साध संगत तर जायेगा ॥४॥

(७३)

राग कालंगड़ा, ताल तीन

मत फिर मनुवा ! भूला भूला जग में कैसा नाता[3] रे। (टेक)
माता कहे यह पुत्र हमारा, बहन कहे बिर[4] मेरा रे।
भाई कहे यह भुजा हमारी, नारि कहे नर[5] मेरा रे ॥१॥
पेट पकड़ कर माता रोवे, बाँह पकड़ कर भाई।
लिपट लिपट कर तिरिया[6] रोवे, हंसा जाय उड़ाई ॥२॥
जब लग जीवे माता रोवे, बहन रोवे दस मासा।
तेरह दिन तक तिरिया रोवे, फेर करे घर बासा ॥३॥
चार गज़ी चादर मंगवाई, चढ़ा काठ की घोड़ी।
चारों कोने आग लगाई, फूंक दियो जैसे होरी ॥४॥
हाड़ जरे जस लाह कड़ी की, केस जरे जैसे घासा।
सोना ऐसी काया जर गई, कोई न आया पासा[7] ॥५॥
नेह स्नेह ढूंढ नहीं पायी, ढूंढ फिरो चहों पासा[8]।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तजु जीने की आसा ॥६॥

---

१. जब, २. कुछ बस न चलेगा, ३. सम्बन्ध, ४. भाई, वीर, ५. पति से अभिप्राय है, ६. स्त्री, ७. समीप ८. चहों ओर।

राग कालंगड़ा, ताल तीन

(७४)

क्या माँगू कुछ थिर[1] न रहाई ।
देखत नैन चरो जग जाई ।।१।।
इक लख पूत, सवा लख नाती ।
ता रावण - घर दिया न बाती ।।२।।
लंक सा कोट, समुद्र सी खाई ।
ता रावण की ख़बर न पाई ।।३।।
सोने का महल, रूपे का छाजा ।
छोड़ चलो नगरी का राजा ।।४।।
कोई करो महल कोई करो टाटी ।
उड़ जाय हंस, पड़ी रहे माटी ।।५।।
आवत संग न जात संघाती ।
कहा[2] भयो घर बांधे हाथी ।।६।।
कहें **कबीर** अन्त की बारी ।
हाथ झाड़ ज्यों चला जुआरी ।।७।।

(७५)

राग कालंगड़ा

तन[3] घर सुखिया कोई न देखा, जो देखा जो दुखिया हो ।
राजा परजा[4] रंक[5] धनी नर, अधमाधम[6] वा मुखिया[7] हो ।।१।।

---

१. स्थिर, २. क्या होगा, ३. तनधारी प्राणी, ४. प्रजा, ५. निर्धन, गरीब, ६. अति नीच से नीच, ७. श्रेष्ठ से श्रेष्ठ वा ऊँचा से ऊँचा ।

घाटे बाढ़े सब जग दुखिया, क्या गृही क्या त्यागी हो ।
सुखिया या जग नहीं कुटुम्बी, सुखिया नहीं वैरागी हो ।।२।।
योगी दुखिया जंगम दुखिया, तपस्वी को दुःख दूना हो ।
आशा तृष्णा सबको व्यापे, कोई महल नहीं सूना[2] हो ।।३।।
साँच कहूं तो कोई न माने, झूठ कहा नहीं जाई हो ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया, जिन यह राह[3] चलाई हो ।।४।।
अवधू[4] दुखिया, भूपति दुखिया, रंक दुखी विपरीते[5] हो ।
कहें **कबीर** सुनो भाई साधो, मनुष्य सुखी मन[6] जीते हो ।।५।।

(७६)

राग धनासरी, ताल धुमाली

आगे समझ पड़ेगी भाई । (टेक)

यहाँ अहार उदर भर खायो, बहु बिधि माँस बढ़ाई ।
तुम पर दया कहाँ ते होगी, तुम्हें दया नहीं आई ।।१।।
यहाँ तो परधन लूट लेत हो, गल बिच फाँस लगाई ।
तिनके पीछे तीन[7] पियादे, छिन छिन ख़बर बताई ।।१।।
साधु संत की निन्दा कीनी, अपना जनम नसाई[8] ।
पैर पैर पर काँटा लगि है, यह फल आगे आई ।।३।।
कहत **कबीर** सुनो भाई साधो, दुनिया है दो चित्ताई[9] ।
साँच कहे सो मारा जाय, झूठे जग[10] पतियाई ।।४।।

---

१. लाभ-हानि के फेर में, २. साथी, अर्थात् कोई प्राणी आशा तृष्णा से खाली नहीं, ३. रीति, मार्ग, ४. अवधूत, ५. विरोधी दशा के कारण निर्धन दुखिया है, ६. मन के जीतने पर सुखी है, ७. सतो, रजो, तमोगुण, ८. नाश किया, बिगाड़ा, ९. दो चित्त रखने का नाम ही दुनिया है, १० झूठ मनुष्य का दुनिया सम्मान करती है।

(७७)

राग धनासरी, ताल धुमाली

मन ! तू क्यों भूला रे भाई ।
तेरी सुध बुध कहाँ हराई ।। (टेक)
जैसे पंछी रैन[1] वसेरा, बसें वृक्ष में आई ।
भोर[2] भये सब आप आपको, जहाँ तहाँ उड़ जाई ।।१।।
स्वप्ने में तोहे राज मिलो है, हाकिम हुक्म दुहाई ।
जाग पड़ा जब लाओ न लशकर, पलक खुले सुध पाई ।।२।।
माता पिता बंधु सुत तिरिया[3], ना कोई सगा सगाई ।
यह तो सब स्वारथ के संगी, झूठी लोक बड़ाई ।।३।।
सागर माँहि लहर ऊठत है, गिनती गिनी न जाई ।
कहें कबीर सुनो भाई साधो अवधी[4] माँहि समाई ।।४।।

(७८)

राग धनासरी, ताल तीन

रे मन ! धीरज क्यों न धरे ? (टेक)
शुभ और अशुभ कर्म पूर्बला, रत्ती न घटे बढ़े ।।१।।
होनहार होय पुन सोई, चिन्ता काहे करे ।
पशु पक्षी जीव कोटी, नाना, सब की सुध धरे ।।२।।
गर्भवास में खबर लैत है, बाहिर क्यों बिसरे ।
माता पिता सुख सम्पत्ति दारा, काहे ज्वाल जरे ।।३।।

---

१. रात, २. प्रातःकाल होते ही, ३. स्त्री, ४. समुद्र, .५ ज्वाला अर्थात् माता पिता सुख सम्पत्ति के मोह रूपी अग्नि की ज्वाला में क्यों जलता है ।

मन तू प्राणपति प्रभु से, भटकत जाहे फिरे ।
हरि को छोड़ और को धावे[1]; कार्य इक है सरे[2] ॥४॥
हरि सेवा कर ले मन मूरख, कोटिन व्याधि हरे ।
कहत **कबीर** सुनो भाई साधो; सहज[3] में जीव तरे ॥५॥

(७९)

राग गौरी, ताल धुमाली

साधो ! मन मानत नहीं मोरा रे । (टेक)
याको बार बार समझाऊं, जग में जीना थोड़ा रे ॥१॥
या काया का गर्व न कीजे, क्या सांवरा क्या गोरा रे ।
बिन हरि भक्ति तन काम न आवे, कोटि सुगंध चभोरा रे ॥२॥ (टेक)
या माया का गर्व न कीजे, क्या हाथी क्या घोड़ा रे ।
जोड़ जोड़ धन बहुत चले गये, सहस्र लाख करोड़ा रे ॥३॥
दुबधा दुरमति और चतुराई, जन्म गयो नर बौरा रे ।
कहें **कबीर** चरणन चित राखो, ज्यों सूई में डोरा रे ॥४॥

(८०)

राग जय जयवन्ती (महल्ला ८)

रे मन, कौन गति होई है तेरी । (टेक)
यह जग में राम नाम, सो तैं नहीं सुन्यो कान ।
विषयन सो अति लुभान[4], मति नाहिं फेरी ॥१॥

---

१. दूसरी ओर दौड़ता है, २. पूर्ण नहीं होता, ३. सुगमता से, ४. अतिलीन ।

मानुष को जन्म लीन सुमरिन न निमष[1] कीन ।
दारा-सुख[2] भयो दीन, पगहूँ[3] पड़ी बेरी* ।।२।।
नानक जन कहे पुकार, स्वप्ने ज्यों जग पसार ।
सुमिरत न क्यों मुरार, माया जाकी चेरी[4] ।।३।।

(८१)

राग गौरी वा धनासरी, ताल धुमाली (महल्ला ८)

मन रे ! कहाँ भयो तैं बौरा[5] ! टेक
अहनिश[6] अवध घटे नहीं जाने, भयो लोभ संग हौरा[7] ।।१।। (टेक)
जो तन तैं[8] अपनो कर मान्यो, अरु सुन्दर ग्रह नारी ।
इनमें कछु तेरो रे नाहिं, देखो सोच विचारी ।।१ ।।
रत्न जन्म अपनो तैं हार्‌यो, गोविन्द गति नहीं जानी ।
निमिष[9] न लीन भयो चरनन सों, बिरथा[10] अवध[11] सिरानी[12] ।।३।।
कहो **नानक** सोई नर सुखिया, राम नाम गुण गावें ।
और सकल[13] जग माया मोहया, निर्भय पद नहीं पावे ।।४।।

(८२)

राग बसन्त (महल्ला ८)

मन कहाँ विसार्‌यो राम नाम ।
तन बिनसे,[14] जम[15] स्यों पड़े काम ।।१।। (टेक)

---

१. एक पलक मात्र, २. स्त्री का सुख, ३. पाँव में, ४. चेली, सेविका, ५. पागल, ६. दिन-रात, ७. छोटा, हल्का, तुच्छ, ८. तुने, ६. पलक भर, १०. व्यर्थ, ११. आयु, १२. व्यतीत की, १३. सारा, १४. नष्ट हो, १५. यमराज के साथ ।
*बेड़ी ।

यह जग धूएं का पहाड़ ।
तैं साचा मानया कैह[1] विचार ।।२।।
धन दारा सम्पति ग्रहे ।
कछु संग न चाले समझ ले ।।३।।
इक भक्ति नारायण होय संग ।
कहो नानक भज, ताहि[2] एक रंग ।।४।।

(८३)

राग जयतसरी (महल्ला ८)

भूल्यो मन ! माया उरझायो । (टेक)
जो जो कर्म कियो लालच लग, तैंह[3] तैंह आप बधायो ।।१।।
समझ न पड़ी विषय रस रचयो, यश हरि को बिसरायो ।
संग स्वामी, सो जान्यो नाहिं, बन खोजन को धायो ।।२।।
रत्न नाम घट ही के भीतर, ताको ज्ञान न पायो ।
जन नानक भगवन्त भजन बिन, वृथा जन्म गंवायो ।।३।।

(८४)

राग जयतसरी (महल्ला ८)

मन रे ! साचा गहो[4] विचारा (टेक)
राम नाम बिन मिथ्या मानो, सगरे[5] यह संसारा ।।१।।
जाको योगी खोजत हारे, पायो नाहिं तैं पारा ।
सो स्वामी तुम निकट पिछानो, रूप रेख ते न्यारा ।।२।।

१.किस प्रकार से, २.उसको, ३.उस उससे, ४. ग्रहण करो, ५. सारा ।

पावन[1] नाम जगत में हरि को, कबहूं, नाहिं संभारा ।
नानक शरण पड़्यो जग बंधन, राखो विरद[2] तुम्हारा ।।३।।

(८५)

राग गौरी व धनासरी, ताल धुमाली (महल्ला ८)

प्राणी को हरियश मन नहीं आवे । (टेक)

अह[3] निश मग्न रहे माया में, कहो कैसे गुण गावे ।।१।।
पूत[4] मीत माया ममता स्यों, यह बिधि आप बंधावे ।
मृगतृष्णा ज्यों झूठो यह जग देख तासु उठ धावे ।।२।।
भुक्ति मुक्ति का कारण स्वामी, मूढ़ ताहिं[5] बिसरावे ।
जन नानक कोटन में कोऊ, भजन राम को पावे ।।३।।

(८६)

राग गौरी व घनासरी, ताल धुमाली (महल्ला ८)

नर अचेत[6] ! पाप से डर रे । (टेक)

दीन दयाल सगल भय भंजन, शरण ताहि तू पड़ रे ।।१।।
वेद पुराण जास[7] गुण जावत, ताको नाम हियमों[8] धर रे ।
पावन[9] नाम जगत में हरि को, सिमिर सिमिर कलमल[10] सब हररे।।२।।

---

१. पवित्र करने वाला, २. निज प्रण जो तुम्हारे शरण में आता है तुम उसका उद्धार करते हो, ३. दिन-रात, ४. पुत्र, ५. उसे, ६. बेखबर, ७. जिस का, ८. हृदय में, ९. पवित्र करने वाला, १०. मैल, पाप ।

मानुष देह बहुर न पावे, कछु उपाय मुक्ति का कर रे।
नानक कहत गाय करुणामय, भव-सागर के पार उतर रे ।।३।।

(८७)

राग सोरठा (महल्ला ८)

रे नर ! यह साँची[1] जिय[2] धार। (टेक)
सकल जगत है जैसे स्वप्ना, बिनसत लगत न बार ।।१।।
बारू[3] भीति बनाई रच पच, रहत नहीं दिन चार।
तैसे ही यह सुख माया के, उझर्यो, कहाँ गंवार ।।१।।
अजहुं[4] समझ कछु बिगड़्यो नाहिं, भज ले राम मुरार।
कहो नानक निजमत साधन को, भाष्यो[5] तोहि पुकार ।।३।।

(८८)

राग सोरठा (महल्ला ८)

या जग मीत[6] न देखियो कोई। (टेक)
सकल जगत अपने सुख लाग्यो, दुख में संग न होई ।।१।।
दारा मीत पूत सम्बन्धी, सगरे धन सों लागे।
जबहीं निर्धन देख्यो नर को संग छोड़ सब भागे ।।२।।
कहौं कहा इस मन बौरे[7] को, इनसों नेह[8] लगायो।
दीना - नाथ सकल भय भंजन, यश ताको बिसरायो ।।३।।

---

१. सच करके सच्ची बात, २. चित्त में चार, ३. रेत की दीवार, ४. आज भी, अभी भी, ५. कह्यो, ६. इस जगत में मित्र, ७. पागल, ८. स्नेह प्रीति।

श्वान[1] की पूंछ भयो न सूधी, बहुत यत्न मैं कीनो ।
नानक लाज विरद[2] की राखो, नाम तुम्हारो लीनो ।।४।।

(८९)

राग बसन्त हिंडोला (महल्ला ८)

साधो ! यह तन मिथ्या जानो । (टेक)
या भीतर जो राम बसत है, साचो तांहि पहिचानो ।।१।।
यह जग है संपति स्वप्ने की, देख कहा ऐड़ानों[3] ।
संग तिहारे कछु न चाले[4] तांहि कहा लपटानों ।।२।। (टेक)
उस्तति निन्दा दोऊ परहर[5] हरि कीरति उर[6] आनों ।
जन नानक सबही में पूरण, एक पुरुष भगवानो ।।३।। (टेक)

(९०)

राग धनासरी, ताल धुमाली (महल्ला ८)

साधो यह जग भरम[7] भुलाना । (टेक)
राम नाम का सुमरिन छोड्यो, माया हाथ बिकाना ।।१।।
मात पिता भाई सुत बनिता[8] ताके रस लपटाना ।
योवन धन प्रभुता के मद में, अहनिश[9] रहे दिवाना ।।२।। (टेक)
दीन दयाल सदा दुख भंजन, तास्यों[10] मन न लगाना ।
जन नानक कोटिन में किनहू, गुरुमुख होय पछाना ।।३।। (टेक)

---

१. कुत्ते की पूंछ, २. निज प्रण, ३. क्या अहंकार कर रहा है, ४. चले, ५. त्यागो, ६. हृदय में धसाओ, धारण करो, ७. भ्रम, ८. स्त्री, ९. दिन रात, १०. उसमें ।

(६१)

राग गौरी वा धनासरी, ताल धुमाली (महल्ला ७)

साधो ! यह मन गाह्यो[1] न जाई । (टेक)
चंचल तृष्णा संग बसत है, याते[2] थिर[3] न रहाई ।। १ ।। (टेक)
कठिन क्रोध घट ही के भीतर, जहि[4] सुधि सब बिसराई ।
रत्न ज्ञान सबको हर लीना, ता स्यों कछु न वसाई ।। २ ।। (टेक)
योगी यत्न करत सब हारे; गुणी रहे गुण गाई ।
जन **नानक** हरि भये दयाला, तो सब विधि बन आई ।। ३ ।। (टेक)

(६२)

राग बसन्त (महल्ला ७)

कहां भूल्यो रे ! झूठे लोभ लाग । (टेक)
कछु बिगड़यो नाहीं, अजहूं[5] जाग ।। १ ।।
सम स्वप्ने के यह जग जान ।
बिनसे छिन में, साँची मान ।। २ ।। (टेक)
संग तेरे हरि बसत नीत[6] ।
निश[7] वासर भज ताहिं मीत[8] ।। ३ ।। (टेक)
वार अन्त[9] की होय सहाय ।
कहो **नानक** गुण ताके गाय ।। ४ ।। (टेक)

(६३)

राग सारंग (महल्ला ९)

कहां मन विषयां[10] स्यों लपटाई । (टेक)
या जग में कोऊ रहन न पावे, इक आवें इक जाई ।। १ ।।

---

१. वश में नहीं आता अर्थात् निरोध नहीं होता, अथवा नहीं पकड़ा जाता, २. जिससे, ३. स्थिर, ४. जिससे, ५. आज क्या अभी, ६. नित्य, ७. रात दिन, ८. मित्र, ९. अन्त समय, १०. विषयों में ।

काको[1] तन धन, सम्पति काकी, का स्यों नेह[2] लगाई ।
जो दीसे[3] सो सगल बिनासे, ज्यों बादर की छाई ।। २ ।। (टेक)
तज अभिमान, शरण संतन गहों[4], मुक्ति होई छिन मांहि ।
जन **नानक** भगवन्त भजन बिन, सुख स्वप्ने भी नाहिं ।। ३ ३ ।। (टेक)

(६४)

तू सुमिरन कर ले मेरे मना !
तेरी बीती जाति उमर हरि नाम बिना । (टेक)
पंछी पंख बिन, हस्ती दन्त बिन, नारी पुरुष बिना ।
वेश्यापुत्र पिता बिन हीना, तैसे प्राणी हरि नाम बिना ।। तू०
देह नैन बिन, रैन चन्द्र बिन, धरती मेघ बिना ।
जैसे पंडित वेद विहीना, तैसे प्राणी हरि नाम बिना ।। तू०
कूप नीर बिन, धनु क्षीर* बिन, मन्दिर दीप बिना ।
जैसे तरुवर फल बिन हीना, तैसे प्राणी हरि नाम बिना ।। तू०
काम क्रोध मद लोभ निहारो, छोड़ विरोध तू संत जना ।
कहे **नानकशाह** सुनो भगवंता, या जग में कोई नहीं अपना ।। तू०

(६५)

राग सोरठ (महल्ला ७)

माई ! मन मेरी वश नाहिं । (टेक)
निश वासर[5] विषयन को धावत, कै विधि रोकूं तांहि ।।१।। (टेक)
वेद पुराण सिमृति के मत सुन, निमष[6] न हिये[7] बसाये ।
पर धन, पर दारा स्यों रचयो, बिरथा[8] जन्म सिरावे ।।२।। (टेक)

---

१. जिसका, २. स्नेह, प्यार, ३. दिखाई दे, ४. पकड़ो, ५. नित्य प्रति, रात दिन, ६. किंचित मात्र, आंख की झपक मात्र, ७. हृदय में, ८. व्यर्थ ।
*दूध

मद माया के भयो बावरो, सूझत ना कछु ज्ञाना।
घट ही भीतर बसत निरञ्जन, ताको मर्म न जाना ॥ ३ ॥ (टेक)
जब ही शरण साधु की आयो, दुर्मति सकल बिनासी[1]।
तव नानक चेत्यो चिन्तामनि, काटी जम की फांसी ॥४॥ (टेक)

(९६)

राग तिलंग (महल्ला ७)

जागि लेहु रे मना ! जागि लेहु, कहां ग़ाफ़िल सोया। (टेक)
जो तन उपज्या संग ही, सो भी संग न होया ॥ १ ॥
मात पिता सुत बंधु जन, हित[2] जास्यों[3] कीना।
जीव छुटे जब देह से, डार अगिन में दीना ॥ २ ॥
जीवित लौं[4] व्यवहार है, जग को तुम जानों।
नानक हरि गुण गाइ लै, सब स्वप्न समानों[5] ॥ ३ ॥

(९७)

राग तिलंग (महल्ला ७)

हरियश रे मना ! गाय ले, जो संगी है तेरो। (टेक)
औसर[6] बीत्यो जात है, कह्यो मान ले मेरो ॥ १ ॥
संपति रथ धन राज स्यों[7] अति नेह[8] लगायो।
काल फांस जब गले पड़ी, सब भयो परायो ॥ २ ॥

---

१. नष्ट हुई, २. स्नेह, प्यार, ३. जिससे, ४. जीने तक, ५. स्वप्नवत्, ६. आयु, समय, ७. साथ, ८. अत्यन्त प्रेम, स्नेह।

जान बूझ के बावरे[1] ! तैं[2] काज बिगाड़्यो ।
पाप करत संकुच्यों[3] नहीं, नहीं गर्व निवार्यो ।। ३ ।।
जहि[4] विधि गुरु उपदेशिया, सो सुन रे भाई ।
नानक कहत पुकार के, गहो[5] प्रभु शरणाई ।। ४ ।।

(९८)

राग धनासरी (महल्ला ९)

अब मैं कौन उपाय करूं । (टेक)
जेहि विधि मन को संशा चूके, भवनिधि पार करूं ।। १ ।।
जन्म पाय कछु भलो न कीनो, ताते[6] अधिक डरूं ।
मन[7], वच, करम हरिगुण नहीं गाये, यह जिय[8] सोच धरूं ।। २ ।।
गुरु मति सुन कछु ज्ञान न उपज्यों, पशु ज्यों उदर भरूं ।
कहो नानक प्रभु विरद[9] पछान्यों, तब हौं पतित तरूं ।। ३ ।।

(९९)

राग आसा (महल्ला ९)

बिरथा[10] कहूं कौन[11] स्यों मन की । (टेक)
लोभ ग्रस्यो दशों दिश धावत, आश लग्यो धन की ।। १ ।।
सुख के हेत बहुत दुख पावत, सेव करत जन जन की ।
द्वारे द्वारे स्वान ज्यों डोलत, न सुधि राम भजन की ।। २ ।।

---

१. पागल, मूर्ख, २. तूने, ३. संकोच नहीं, ४. जिस प्रकार, ५. पकड़ो, ६. इससे, ७. मन वाणी कर्म से, ८. चित्त में, ९. निज धर्म या प्रतिज्ञा, १०. वृथा दुःख, ११. किससे ।

मानुष जन्म अकारथ खोवत, लाज न लोक हंसन की ।
नानक हरियश क्यों नहीं गावत, कुमति विनासे तन की ।। ३ ।।

(१००)

राग सोरठ (महल्ला ९)

मन रे कौन कुमति तै लीनी । (टेक)
पर दारा निन्दा रस रचयो, राम भगति नहिं कीनी ।। १ ।। मन०
मुक्ति पंथ जान्यों तै नाहीं, धन जोड़न को धाया[1] ।
अंत संग काहू नहिं दीना, बिरथा[2] आप बंधाया ।। २ ।। मन०
ना हरि भज्यो, न गुरुजन सेव्यो, ना उपज्यो कछु ज्ञाना ।
घट ही माहिं निरञ्जन तेरे, तैं खोजत उद्याना[3] ।। ३ ।। मन०
बहुत जन्म भरमत तैं हार्यो स्थिर मति[4] नहिं पाई ।
मानुष देह पाय पद[5] हरि भज नानक बात बताई ।। ४ ।। मन०

(१०१)

राग मारू (महल्ला ९)

माई ! मैं मन को मान न त्यागो । (टेक)
माया के मद जन्म सिरायो[6], राम भजन नहीं लाग्यो ।। १ ।।
यम को दंड पड़यो सिर ऊपर, तब सोवत तैं[7] जाग्यो ।
कहा होत अब के पछतायो, छूटत नाहिं भाग्यो ।। २ ।।

---

१. दौड़ा, २. व्यर्थ, बेफायदा, ३. जंगल में, वन में, ४. स्थिर बुद्धि, ५. हरिचरण, ६. खोयो, गंवायो या बितायो, ७. से ।

यह चिंता उपजी घट में जब, गुरुचरणन अनुराग्यो ।
सुफल जन्म **नानक** तब हूआ, जो प्रभुयश में पाग्यो[1] ।। ३ ।।

(१०२)

राग देव गंधारी (महल्ला ९)

सब कुछ जीवित को व्योहार । (टेक)
मात पिता भाई सुत बांधव अरु फिर घर की नार ।। १ ।।
तन से प्राण होत जब न्यारे प्रेत प्रेत पुकार ।
आध घड़ी कोऊ नहीं राखे, घर ते देत निकार ।। २ ।।
मृग तृष्णा[2] ज्यों जग रचना यह, देखहुं हृदय विचार ;
कहो **नानक** भज राम नाम नित, जाते[3] होत उधार[4] ।। ४ ।।

(१०३)

राग सोरठा (महल्ला ९)

रे मन ! राम स्यों[5] कर प्रीत । (टेक)
श्रवणनि गोबिंद[6] गुण सुनो अरु गाओ रसना[7] गीत ।। १ ।।
कर साध संगति सुमिर माधो, होय पतित पुनीत ।
काल ब्याल ज्यों पड्यो डोले, मुख पसारे मीत[8] ।। २ ।।
आज काल फुनि तोहिं ग्रसिहे, समझ राख्यो चीत[9] ।
कहो **नानक** राम भज ले, जात औसर[10] बीत ।। ३ ।।

---

१. पागा अर्थात् प्रभु के यश को सर्वत्र अनुभव किया, २. रेत जो दूर से धूप में जल दिखाई देती है, ३. जिससे, ४. उद्धार, ५. से, ६. कानों से, ७. जिह्वा से, ८. ऐ मित्र, ९. चित्त में, १०. समय, आयु ।

ॐ

वैराग्य

(१०४)

राग जंगला, ताल तीन, वा राग सोरठ (महल्ला ६)

प्रीतम जान लियो मन माहिं ।। (टेक)
अपने सुख से ही जग बाँध्यो, कोउ काहू को नाहिं ।।१।। प्री०
सुख में आन बहुत मिल बैठत, रहत चहों दिश[1] घेरे ।
बिपद[2] पड़ी सब ही संग छाड़त, कोउ न आवत नेरे ।।२।। प्री०
घर की नार बहुत हित[3] जासों, रहत सदा संग लागी ।
जब ही हंस[4] तजी यह काया, प्रेत-प्रेत कह भागी ।।३।। प्री०
यह बिधि को व्योहार बन्यो है, जासों नेह[5] लगायो ।
अंत बार नानक बिन हरि जी कोऊ काम न आयो ।।४।। प्री०

(१०५)

राग देव गंधारी (महल्ला ६)

जगत में झूठी देखी प्रीत । (टेक)

---

१. चारों ओर, तरफ, २. दुःख, आपत्ति, ३. प्यार, स्नेह, ४. जीव, मोह, ५. प्रेम ।

अपने ही सुख स्यों[1] सब लागे, क्या दारा[2] क्या मीत[3] ।।१।।
मेरो मेरो सबहि कहत हैं, हित[4] स्यों बाँध्यो चीत[5] ।।२।।
अन्तकाल संगी नहिं कोऊ, यह अचरज है रीत[6] ।।३।।
मन मूरख अजहूं[7] नहिं समझत, सिख[8] दे हारियों नीत[9] ।।४।।
नानक भवजल[10] पार पड़े, जो गावे प्रभु के गीत ।।५।।

(१०६)

राग धनासरी, ताल धुमाली (महल्ला ६)

साधो रचना राम रचाई। (टेक)
इक बिनसे[11] इक स्थिर माने, अचरज लख्यो न जाई ।।१।।
काम क्रोध मोह, वश प्राणी, हरि मूरत[12] बिसराई ।
झूठा तन साचा कर मान्यो, ज्यों स्वपना[13] रैनाई[14] ।।२।।
जो दीखे सो सकल[15] बिनासे, ज्यों[16] बादर[17] की छाई ।
जन **नानक** जग जान्यो मिथ्या, रह्यो राम शरनाई ।।३।।

(१०७)

साकी, राग कालंगड़ा

यह जग स्वप्ना है रजनी[18] का, क्या कहे मेरा मेरा रे। (टेक)

१.साथ, २.स्त्री, ३.मित्र, ४.स्नेह,स्वार्थ, भलाई, ५.चित्त, ६.व्यवहार, रिवाज, तरीका, ७. अभी तक, ८. शिक्षा देते, ९.नित्य, १० संसार समुद्र, ११. नाशवान, १२. हरि की मूर्ति, १३. स्वप्न, ख्वाब, ३४. रात का, १५.सब नाश होवे, १६. तरह, १७. बादल, १८. रात ।

मात, तात[1], सुत[2] दारा मनोहर, भाई, बन्धु अरु चेरा[3] रे।
आपी अपने स्वारथ के सब, कोई नहीं है तेरा रे ।।१।। यह०
जिन के हेत[4] करत धन संचय[5], कर कर पाप घनेरा[6] रे।
जब यमराज पकड़ ले जावे, कोई न संग चलेरा रे ।।२।। यह०
ऊंचे ऊंचे महल बना के, देश दिगंतर घेरा रे।
सब ही ठाठ पड़ा रह जावे, होत जंगल में डेरा रे ।।३।। यह०
इतर फुलेल मले जिस तन को, अन्त भस्म का ढेरा रे।
ब्रह्मानन्द स्वरूप बिन जाने, फिरत चौरासी फेरा रे।।४।।यह०

(१०८)

राग मारू

तू खुश कर नींद क्यों सोया। (टेक)
जिन्हाँ[7] घर झूलते हाथी, हजारों लाख थे साथी।
उन्हाँ को खा गई माटी, तू खुश कर नींद क्यों सोया ।।१।।
नक़ारा कूच का बाजे, कि मारू मौत का बजे।
ज्यों श्रावण मेघरा गाजे, तू खुश कर नींद क्यों सोया ।।२।।
कहाँ गये खान मदमाते[8], जो सूरज चाँद चमकाते।
न देखे वह कहाँ जाते, तू खुश कर नींद क्यों सोया ।।३।।
जिन्हाँ घर लाल और हीरे, सदा मुख पान के बीड़े।
उन्हाँ नूं खा गये कीड़े, तू खुश कर नींद क्यों सोया ।।४।।

---

१. पिता, २. बेटा, ३. शिष्य, चेला, ४. कारण, ५. एकत्र, जमा करना, ६. बहुत, ७. जिनके, ८. बड़े अहंकार वाले अथवा बड़े मान वाले खाँन साहिब।

जिन्हाँ घर पालकी घोड़े, ज़री ज़रबफ़्त के जोड़े ।
वही अब मौत ने तोड़े, तू खुश कर नींद क्यों सोया ।।५।।
जिन्हाँ दे बाल थे काले, मलाइयाँ दूध के पाले ।
वह आखिर आग में डाले, तू खुश कर नींद क्यों सोया ।।६।।
जिन्हाँ संग प्यार था तेरा, उन्हाँ है खाक में डेरा ।
न फिर वह करेंगे फेरा, तू खुश कर नींद क्यों सोया ।।७।।

(१०९)

राग पहाड़ी

धन जन[1] यौवन संग न प्यारे ! यह सब पीछे रह जावें । (टेक)
रैन[2] गंवाई देह निसारे[3], प्यारे खाकर दिवस[4] गंवाये ।
मानुष जनम अकारथ खोया, मूरख ! समझ न आवे ।।१।। धन०
धन कारण जो होवे दिवाना, चारों दिशा को धावे ।
राम नाम कभी न सुमिरे, सो अंते[5] पछतावे ।।१।। धन०
प्रीति सहित मिल आवोरे साधो, ईश्वर के गुण गावें ।
जिसके किये सदा शुभ होवे, तिसको काहे भुलावे ।।३।। धन०

(११०)

राग मारू

इस तन चलना प्यारे ! कि डेरा जंगल में मलना । (टेक)

---

१. सम्बन्धी, २. रात, ३. खोये, ४. दिन, ५. अन्तकाल ।

सूरत योवन भी चल जादा, कोई दिन दा ढोल बजाँदा ।
आखिर माटी में है मिलना, कि इस तन है चलना ।।१।।
सब कोई मतलब दा है बेली[1], तेरी जासी जान अकेली ।
ओड़क बेला[2] नाहीं टलना, कि इस तन है चलना ।।२।।
यह तो चार दिनाँ दा मेला, रहना गुरू न रहना चेला ।
इस तन आतिश[3] में है जलना, कि इस तन है चलना ।।३।।
जिस नूं कहें तू मेरी मेरी, यह नहिं मेरी है ना तेरी ।
इसने खाक विषे[4] में रलना, कि इस तन है चलना ।।४।।
यह तन अपना देख न भूल रे, बिना ईश्वर के फ़ना[5] है कुल रे ।
प्रभु दे भजन बिना है गलना, कि इस तन है चलना ।।५।।
मिठ्ठा बोल हथ्थों[6] कुछ दे लै, नेकी कर जिन्दगी दा है बेला ।
पिच्छों किसे नहीं है घतना[7], कि इस तन है चरना ।।६।।

(१११)

गजल

ज़रा टुक सोच ऐ ग़ाफिल ! कि दम का क्या ठिकाना है।
निकल जब यह गया तन से, तो सब अपना बिगाना है ।।
मुसाफिर तू है और दुनियाँ सरा है, भूल मत ग़ाफ़िल ।
सफ़र परलोक का आखिर, तुझे दर्पेश आना है ।।१।। ज़०

---

१. साथी, २. अन्त समय, ३. अग्नि, ४. खाक के बीच, ५. नाशवान, ६. हाथ से, ७. भेजना ।

लगाता है अबस[1] दौलत पे, क्यों तू दिल को अब नाहक ।
न जावे संग कुछ हरगिज़, यहीं सब छोड़ जाना है ।।१।। ज़०
न भाई बन्धु है कोई, न कोई आशना[2] अपना ।
बख़ूबी ग़ौर कर देखा, तो मतलब का ज़माना है ।।३।। ज़०
रहो लग याद में हक़[3] की, अगर अपनी शफ़ा[4] चाहो ।
अबस दुनियाँ के धन्धों में हुआ तू क्यों दिवाना[5] है ।।४।। ज़०

(११२)

राग देव गंधारी

मान मन ! क्यों अभिमान करे । (टेक)
योवन धन क्षणभंगुर तिन पै, काहे मूढ़ मरे ।।१।। मान०
जल बिच फेन बुदबुदा जैसे, छिन छिन बन बिगड़े ।
त्यों यह देह होय छिन में, बहुर[6] न दीख पड़े ।।२।। मान०
मन्दिर महल बहल रथ वाहन[7], यहीं रह जात धरे ।
भाई बन्धु कोई संग न लागे, ना कोई साख[8] भरे ।।३।। मान०
चाम के देह से नेह[9] लगावे, उस बिन नाहिं टरे ।
धृक् तोको अरे ! अति सुन्दर हरि ! ताकी सुध न करे ।।४।। मान०

---

१. व्यर्थ, बेफायदा, २. जान पहचान का, ३. सत्य स्वरूप, परमेश्वर, ४. भलाई, बेहतरी, ५. पागल, ६. फिर, ७. सवारी, ८. अभिप्राय कि न कोई साथ रहे और न कोई सहायता करे, ९. प्रीति, मोह ।

हरि चर्चा, सन्त सेवा अर्चा[1], इन ते निपट डरे ।
कूकर सूकर तुल्य भोग रत अन्ध होय विचरे ।।५।। मान०

(११३)

राग सावन, ताल दीपचन्दी

मना[2] ! तैने राम न जान्या रे । (टेक)
जैसे मोती ओस का रे, तैसे यह संसार ।
देखत ही को झिलमिला[3] रे, जात न लागी बार[4] ।।१।। मना०
सोने का गढ़ लङ्क बनायो, सोने का दरबार ।
रत्ती इक सोना न मिला रे, रावण मरती बार ।।१।। मना०
दिन गंवाया खेल में रे, रैन गंवाई सोय ।
सूरदास भजो भगवन्ता[5], होनी होय सो होय ।।३।। मना०

(११४)

ग़ज़ल

दिला[6] ग़ाफिल न हो यक दम कि दुनिया छोड़ जाना है ।
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है ।। (टेक)
बदन नाज़ुक गुलों[7] जैसा, जो लेटे सेज फूलों पर ।
होवेगा एक दिन मुरदा, यहाँ कीड़ों ने खाना है ।।१।।
न बेली होयगा भाई, न बेटा बाप न माई ।
बना फिरता है सौदाई, अमल ने काम आना है ।।२।।

१.पूजा, २.हे मन, ३.चमकीला, ४.जाते देर नहीं लगती, ५. भगवान को भजो जो होना है सो होने दो (होता रहे), ६.ऐ दिल, ७. पुष्प, फूल ।

प्यारे ! नज़र कर देखो, पड़ी जो माड़ियाँ खाली ।
गये सब छोड़ फ़ानी देह, दग़ाबाज़ी का बाना है ।।३।।
प्यारे नज़र कर देखो, न ख्वेशों[1] में कोई तेरा ।
ज़नो-फ़र्जिन्द[2] सब कूकें, किसे तुझको छुड़ाना है ।।४।।
ग़लत फैहमी[3] यही तेरी, नहीं आराम है इस जा[4] ।
मेसाफिर बेवतन[5] तू है, कहाँ तेरा ठिकाना है ।।५।।

(११५)

राग सावन, ताल दीपचन्दी

चपल मन मान कही मेरी, न कर हरि-चिन्तन में देरी ।। (टेक)
लख चौरासी योनि भुगत के, यह मानुष तन पायो ।
मेरी तेरी करते करते, नाहक़ जन्म गंवायो ।।१।। च०
मात पिता सुत भ्रात नारि, पति देखन ही के नाते ।
अंत समय जब जाय अकेला, तो कोई संग नहिं जाते ।।२।। च०
दुनिया दौलत माल खज़ाने, व्यंजन[6] अधिक सुहाने ।
प्राण छूटे सब होयें पराये, मूरख मुफ़त लुभाने[7] ।।३।। च०
काम क्रोध मद लोभ मोह, यह पाँचों बड़े लुटेरे ।
इनसे बचने के खातिर, तू हरि चरणन चित देरे ।।४।। च०
योग यज्ञ तप तीरथ संयम साधन वेद बताये ।
हरि सुमिरण सम एकहु नाहिं, बड़े भाग्य जो पाये ।।५।। च०

---

१. सम्बन्धीजनों, रिश्तेदारों, २. स्त्री, पुत्र, ३. बेसमझी, भूल
४. स्थान, इस संसार में, ५. बिना घर के, ६. स्वादिष्ट भोग-पदार्थ,
७. लोभ करे, धन के लोभ में पड़े ।

(११६)

राग खमाच, ताल दादरा

दुनिया के जंगलों में है यह दिल भटक रहा ।
अटका यहाँ जो आज, तो कल वाँ अटक रहा ।।१।।
मन्दिर में फंस गया कभी, मसजिद में जा फंसा ।
छूटा यहाँ से आज, तो कल वाँ अटक रहा ।।२।।
हिन्दू का और किसी को इसलाम का ग़रूर ।
ऐसे ही वाहियात में हर इक भटक रहा ।।३।।
वह हर जगह मौजूद है, जिसकी तलाश है ।
आँखों के आगे परदा-ए[1]-ग़फ़लत लटक रहा ।।४।।
गुलज़ार[2] में है, गुल में है, जंगल में, बहू[3] में ।
सीने में, सिर में, दिल में, जिगर में, खटक रहा ।।५।।
ढूंढा है उसको जिसने, उसे आन कर मिला ।
अटका जो उसकी राह से, उससे अटक रहा ।।६।।
सिद्क़[4] वो यक़ीन[5] के बिना दिलवर मिले कहाँ ।
गो जंगलों में बरसों ही सिर को पटक रहा ।।७।।
प्यारे ! उम्मेद एक पे रख, दिल को साफ़ कर ।
क्या वसवसे[6] का काँटा है दिल में खटक रहा ।।८।।

---

१. अज्ञान (अविद्या) का पर्दा २ बाग ३ समुद्र, ४. सच्चाई, ५. निश्चय विश्वास, ६. संशय, सन्देह, शक ।

(११७)

राग खम्माच

चंचल मन निश दिन भटकत है ।
ऐ जी भटकत है, भटकावत है ।। (टेक)
ज्यों मरकट[1] तरु ऊपर चढ़ कर ।
डार डार पर लटकत है ।।१।। चंचल०
रुकत[2] यतन से क्षण विषयन ते ।
फिर तिन ही में अटकत है ।।२।। चंचल०
काँच के हेत लोभ कर मूरख ।
चिन्तामणि को पटकत है ।।३।। चंचल०
ब्रह्मानन्द समीप छोड़ कर ।
तुच्छ विषय-रस गटकत[3] है ।।४।। चंचल०

(११८)

झँझोटी ठुमरी

भजन बिन बिरथा जन्म गयो । (टेक)
बालपनों सब खेल गंवायो, यौवन काम[4] बह्यो ।।१।। भजन०
बूढ़े रोग ग्रसी सब काया, पर-वश[5] आप भयो ।।२।। भजन०
जप तप तीरथ दान न कीनो, ना हरि नाम लियो ।।३।।भजन०
ऐ मन मेरे ! बिना प्रभु सुमिरन, जाकर नरक पर्यो ।।४।। भजन०

---

१. कपि, बन्दर, २. रुक कर रुका हुआ, होकर, ३. गट गट पी रहा है, ४. विषय वासना में लिप्त हो गया, ५. दूसरे के वश में, दूसरे के अधीन ।

(११९)

राग धनासरी

मेरो मन रे, भज ले कृष्ण मुरारी। (टेक)
चार दिनन के जीवन खातिर रे, कैसी जाल पसारी।
कोई न जावत संग तुम्हारे रे, मात पिता सुत[१] नारी॥ मेरो०
पाप कपट कर संचित[२] धन को रे, मूरख मौत बिसारी।
ब्रह्मानन्द जन्म यह दुर्लभ रे, देत वृथा किमि डारी॥ मेरो०

(१२०)

राग भैरवी

सुनो नर रे, राम भजन कर लीजे (टेक)
यह माया बिजली का चमका रे, यामें चित्त न दीजे।
फूटे घट[३] में जल न रहावे रे, पल पल काया[४] छीजे[५]॥ भजन०
सबही ठाठ पड़ा रह जावे रे, चलत नदी जल पीछे।
ब्रह्मानन्द राम-गुण गावो रे, भव-जल[६] पार तरीजे॥ भजन०

(१२१)

होरी, राग जिला काफ़ी

जीग्रा[७] तोकूं समझ न ग्राई, मूरख तैं उमर गंवाई। (टेक)
मात पिता सुत[८] कुटुम्ब क़बीला, धन जोबन ठकुराई[९]।

---

१. पुत्र, २. एकत्र जमा, इकट्ठा, ३. घड़ा, ४. शरीर, ५. मुरझाना, घटना, ६. संसार रूपी समुद्र, ७. ऐ दिल मन, हे मनुष्य, ८. पुत्र, ९. मिलकीयत, बड़ा पद, ठाकुरपन।

कोई नहि तेरो, तू न किसी कौ, संग रह्य ललचाई ।।
उमर में तैं धूल उड़ाई, जीश्रा तोकूं समझ न आई ।।१।।

राग द्वेष तूं किससे करत है, एक ब्रह्म रह्यो छाई ।
जैसे स्वान[1] रहे काँच-भवन[2] में, भौंक-भौंक मर जाई ।।
खबर अपनी नहिं पाई, जीश्रा तोकूं समझ न आई ।।२।।

लोभ लालच के बीच तू लटकत, भटक रह्यो भरमाई ।
तृषा न जायगी मृगजल पीवत, अपनो भरम गंवाई ।।
श्याम को जान ले भाई, जीश्रा तोकूं समझ न आई ।।३।।

अगम[3], अगोचर[4], अकलंक[5], अरूपी[6], घट घट रहत समाई ।
सूरश्याम प्रभु तिहारे भजन बिन, कबहुं न रूप दिखाई ।।
श्याम को आओ लखो[7] सदाई[8] जीश्रा तोकूं समझ न आई ।।४।।

(१२२)

राग खम्माच, ताल दादरा

तर[9] तीव्र भयो वैराग्य तो मान अपमान क्या ।
जान्यो अपना आप तो वेद पुराण क्या ।।
खुद मस्ती कर मस्त, तो फिर मदरा पान क्या ।
किचा देहाध्यास, तो आतमज्ञान क्या ।।

---

१. कुत्ता, २. शीशे के महल, ३. जहाँ कोई जा न सके, दुर्गम अवघट गहन, ४. इन्द्रियों की पहुँच से परे, इन्द्रियातीत, ५. कलंक रहित, ६. रूप रहित, ७. देखो, समझो, पाओ, ८. सर्वदा, हमेशा, ९. बहुत भारी ।

वीतराग[1] जब भये, तो जग की लोड़[2] क्या ।
तृणवत जान्यो जगत, तो लाख करोड़ क्या ।।
चाह रज्जु[3] से बंध्यो, तो फिर मरोड़ क्या ।
किचा भ्रांति साथ, तो विवाद[4] फिर होर[5] क्या ।।

(१२३)

राग सोहनी

यह पैठ[6] अजब है दुनिया की और क्या क्या जिन्स इकट्ठी है ।
याँ माल किसी का मीठा है और चीज़ किसी की खट्टी है ।।
कुछ पकता है, कुछ भुनता है, पकवान मिठाई फट्टी है ।
जब देखा खूब तो आखिर को ना चूल्हा भाड़ न भट्टी है ।।
गुल शोर बगूला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनिया को, यह धोखे की सी टट्टी है ।।१।।
कोई ताज खरीदे हंस हंस कर, कोई तख्त[7] खड़ा बनवाता है ।
कोई रो रो मातम करता है, कोई गोर[8] पड़ा खुदवाता है ।।
कोई भाई बाप चचा नाना, कोई बाबा पूत कहाता है ।।
जब देखा खूब तो आखिर को, नहिं रिश्ता[9] है नहीं नाता है ।।
गुल[10] शोर बगूला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनिया को सब धोखे की-सी टट्टी है ।।२।।

---

१. राग रहित, २. स्नेह इच्छा, ३. वासना की रस्सी, ४. झगड़ा ५. और अधिक, दूसरी, ६. मंडी, ७. टिक्ती जिस पर मुर्दे को उठाते हैं, ८. कबर ९. सम्बन्ध, १०. शोर शराबा ।

कोई बाल बढ़ाये फिरता है, कोई सिर को घोट मुंडाता है ।
कोई कपड़े रंगे पहने है, कोई नंगमनंगा आता है ।।
कोई पूजा कथा बखाने है, कोई रोता है, कोई गाता है ।
जब देखा खूब तो आखिर को, सब छोड़ अकेला जाता है ।।
गुल शोर बगूला-आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनिया को, सब धोखे की-सी टट्टी है ।।३।।
कोई टोपी टोप सजाता है, कोई बाँधे फिरे आमामा[१] है ।
कोई साफ बरहना[२] फिरता है, नै पगड़ी नै[३] पाजामा है ।।
कमखाब गजी और गाढ़े का नित क़ज़िया[४] है, हंगामा[५] है ।।
जब देखा खूब तो आखिर को नै पगड़ी है नै जामा है ।
गुल शोर बगूला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।।
हम देख चुके इस दुनिया को, सब धोखे की-सी टट्टी है ।।४।।

(१२४)

राग खमाच, ताल दादरा

जो खाक से बना है, वह आखिर को खाक है ।। टेक ।।
दुनिया से जब कि औलिया[६] अरु अंबिया[७] उठे ।
अजसामे[८] पाक उनके इसी खाक में रहे ।।
रूहे[९] हैं खूब जाने मन, रूहों के हैं मज़े ।
यह जिस्म से तो अब यही साबित हुआ मुझे ।। १ ।।जो०

---

१. पगड़ी, २. नंगा, ३. नहीं, ४. झगड़ा, ५. लड़ाई, ६. वली या महात्मा, लोग, ७. नबी या पैगम्बर लोग, ८ पवित्र देह, शरीर, ९. जीवात्माएं ।

वह शख्स थे जो सात विलायत के बादशाह ।
हशमत[1] में जिनकी अर्श[2] से ऊंची थी बारगाह[3] ।।
मरते ही उनके तन हुए गलियों की खाके-राह ।
अब उनके हाल की भी यही बात है गवाह ।।२।। जो०

किस किस तरह के हो गये महबूबे[4] कजकुलाह[5] ।
तन जिनके मिस्ले[6]-फूल थे और मुंह भी रश्के[7]-माह ।।
जाती हैं उनकी कब्र पै जिस दम मेरी निगाह[8] ।
रोता हूं जब तो मैं यही कह कह के दिल में आह ।।३।। जो०

(१२५)

राग सोहनी साईं की सदा

यह दुनिया जाये-गुज़श्तन[9] है, सांइ की है यह सदा[10] बाबा ।
यहाँ जो है रूए-ग्ररफ़तन है, तू इसमें दिल न लगा बाबा ।। (टेक)
ज्ञानी न रहे, ध्यानी न रहे, जो-जो थे लासानी न रहे ।
थे आखिर को फ़ानी[11] न रहे, फ़ानी को कहाँ बक़ा[12] बाबा ।।१।।

---

१. इज्जत, मान, विभूति, २. आकाश, ३. राज दरबार, ४. प्यारे, माशूक़, ५. टेढ़ी टोपी, पहनने वाले, जो सुन्दर पुरुष अपने सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए पहना करते है, ६. पुष्प समान, ७. चन्द्रमा जिनके मुख से ईर्षा करता है, अर्थात् चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर जिनका मुख है, ८. दृष्टि, ६. गुजरने (छोड़ने) का स्थान, १० आवाज़, पुकार, गुहार, ११. चले जाने वाला, स्थिर न रहने वाला १२. नाश होने वाला, १३ स्थिर रहना ।

थे कैसे कैसे शाहे ज़मीं[1], थे कैसे कैसे महल[2] संगी ।
हैं आज कहां वह मकानो मकीं[3], न निशान रहा, न पता बाबा ॥२॥
न वह शूर रहे, न वह वीर रहे, न वह शाह रहे, न वज़ीर रहे ।
न अमीर रहे, न फक़ीर रहे, मौला का नाम रहा बाबा ॥३॥
जो चीज़ यहाँ है फ़ानी है, जो शै[4] है आनी जानी है ।
दुनिया यह राम कहानी है, कुछ हाल हमें न खुला बाबा ॥४॥ यह०
माल[5] एमाल[6] को लाते हैं, फल साथ अपने ले जाते हैं ।
जो देते हैं सो पाते हैं, है यूंही तार लगा बाबा ॥५॥ यह०
आने जाने का यां तार लगा, दुनिया है इक बाज़ार लगा ।
दिल इसमें तू न ज़िनहार[7] लगा, कब निकला वह जो फंसा बाबा ।६।
याँ मर्द वही कहलाते हैं, जो जाकर फिर नहीं आते हैं ।
जो आते हैं और जाते हैं, वह मर्द नहीं असली[8] बाबा ॥७॥ यह०
क्यों उमर अबस[9] तूने खोई, कुछ करले अब-भी ख़ुदा जोई[10] ।
मैं कहता हूं तुझ से यहां कोई न रहा, न रहा, न रहा, बाबा ॥८॥यह
तह कर तह कर बिस्तर अपना, बाँध उठ कर रख़ते[11] सफर अपना ।
दुनिया की सराय को घर अपना, तूने है ग़लत समझा बाबा ॥९॥ यह०
क्या घोड़े बेंच[12] के सोया है, क्यों वक्त रायगाँ[13] खोया है ।
जो सोया है वह रोया है, कहते हैं मर्दे-ख़ुदा[14] बाबा ॥१०॥ यह०

---

१. पृथ्वी के राजा, २. पत्थर के महल, ३. घर में रहने वाले, ४. पदार्थ, वस्तु, ५. जिसकी ओर मन का लगाव है । मन की लगन, इच्छा, ६. कर्म, ७. कदापि, ८. कदापि, ९. व्यर्थ, बेफ़ायदा, १०. ईश्वर प्राप्ति की जिज्ञासा, ११. सामान, असबाब, १२. अर्थात् बेखबर, सोया है, १३. बेफ़ायदा, निष्फल १४. ज्ञानी, आत्मवेत्ता ।

जितना यह माल खज़ाना है, और तू ने अपना माना है।
सब छोड़ के याँ से जाना है, करता है इकट्ठा क्या बाबा ॥११॥ यह०
क्यों दिल दौलत में लगाया है, सच कहता हूं झूठी माया है।
यह चलती फिरती छाया है, क्या है एतबार[1] इसका बाबा ॥१२॥ यह०
दुनिया न कहो तू मेरी है, ग़ाफ़िल दुनिया कब तेरी है।
साईं की जैसी फेरी है, फिरता है तू इस जाँ[2] बाबा ॥१३॥ यह०
यह मुलकोमाल, यह जाहोहशम[3], यह खेशोंअक़ारब[4] हैं जो बहम[5]।
सब जीते जी के हैं हमदम[6], फिर चलना है तन्हा[7] बाबा ॥१४॥ यह०
जो नेक कमाई करते हैं, जो सांसों पार गुज़रते हैं।
जो जीते जी ही मरते हैं, जीना है बस उनका बाबा ॥१५॥
क्यों मेहर[8] यह आलम[9]-निस्याँ का दुनिया है सौदा नुक़साँ का।
है ज़ौक़[10] तुझे तो इर्फाँ[11] का, तुझ को दुनिया से क्या बाबा ॥१६॥
यह दुनिया····लगा बाबा।

---

१. भरोसा, २. जगह, यहाँ, ३. पद और मान, अपने सम्बन्धी, कुटुम्बी, रिश्तेदार, ५. साथ प्राप्त हुए, ६. साथ, ७. अकेले, ८. कवि का नाम, ९. भूलने की दशा व अज्ञानावस्था, १०. रुचि, लगन, ११. आत्म ज्ञान, आत्म साक्षात्कार।

भक्ति इश्क

(१२६)

राग खम्माच, ताल दादरा

(१) कलीदे-इश्क़[1] को सीने[2] की दीजिये तो सही ।
मचा के लूट कभी सैर कीजिये तो सही ।।१।।
(२) करो शहीद ख़ुदी[3] के सवार को रोकर ।
यह जिस्म दुलदुले-बेयार[4] कीजिये तो सही ।।२।।

---

(१२६)

(१) प्रेम की कुञ्जी से अपने हृदय के ख़ज़ाने को खोलो और फिर उसकी लूट मचाकर कभी आनन्द तो लो ।

(२) देह का सवार तो अहंकार है उसको मार डालो अर्थात् शहीद करो और इस शरीर को सवार-रहित घोड़े (दुलदुल) के समान तो कर देखो ।

---

१. प्रेम की कुञ्जी, २. दिल, ३. अहंकार, ४. उस घोड़े को कहते हैं जो मुसलमानों के इमाम हुसैन की सवारी में था और युद्ध में अपने सवार इमाम साहिब के मारे जाने पर ख़ाली घर में आ गया था और उसने इस प्रकार अपने सवार के मारे जाने की सूचना दी थी ।

(३) जल के खाना-ओ-असबाब[1] मिस्ल नीरो[2] के ।
मज़ा सरोद[3] का शोलों[4] में लीजिये तो सही ।।३।।

(४) है ख़ुम[5] तो मय[6] से लबालब यह तिशना[7] कामी क्यों ?
लो तोड़ मोह्र[8] ख़ुदी मय भी पीजिये तो सही ।।४।।

(५) उड़ा पतंग मुहब्बत का चर्ख़[9] से भी दूर ।
ख़िरद[10] की डोर को अब छोड़ दीजिये तो सही ।।५।।

---

(३) नीरो बादशाह के समान अपना घर बार और असबाब अर्थात अहंकार और उसकी सब पूंजी को जलाकर और निज स्वरूप रूपी पर्वत के शिखर पर चढ़कर उस अहंकार के जलने का और निज स्वरूप के राग रंग का आनन्द तो लो ।

(४) निजानन्द रूपी मदिरा से जब हृदय का मटका परिपूर्ण है तब तू प्यासा क्यों ? इस मटके की मोहर तोड़कर आनन्द रूपी मदिरा पीजिए तो सही ।

(५) प्रेम का पतंग अब आकाश से भी दूर उड़ गया, तब बुद्धि रूपी डोर को छोड़ तो दो ।

---

१. घरबार न धन-दौलत, २. रोम के एक अन्यायी और दुष्ट राजा का नाम है जिसने अपनी राजधानी में आग लगा दी और आप एक पर्वत पर चढ़कर रंग रोलियाँ मनाने और बाजा बजाने लगा और अपनी प्रजा को जलते देखकर प्रसन्न होता था, ३. राग रंग, ४. लपटों, ५. मटका (हृदय रूपी) ६. प्रेम रूपी शराब, मद, ७. प्यासा गला, ८. अहंकार की मोहर, ९. आकाश, १०. बुद्धि ।

(६) मज़ा दिखायेंगे जो कह दो राम[1] मैं ही हूं ।
ज़मीं ज़माँ को भी यूं 'राम'[2] कीजिये तो सही ।।६।।

(१२७)

राग भ्याग, ताल दादरा

इश्क़ का तूफाँ बपा[3] है, हाजते मयखाना नेस्त[4] ।
खूं शराबो, दिल कबाबो, फ़ुरसते-पैमाना[5] नेस्त ।।१।।
सख्त मखमूरी[6] है तारी[7] ख्वाह कोई क्या कुछ कहे ।
पस्त[8] है आलम[9] नज़र में, वहशते-दीवाना नेस्त[10] ।।२।।

---

(६) यदि तुम अपने आपको राम भगवान कह दो तो हम आपको निजानन्द का साक्षात्कार करावें । इस प्रकार अनुभव करके आप देश (पृथ्वी) और काल सब को स्वाधीन तो कीजिये ।

(१२७)

(१) प्रेम की उमंग उमड़ी हुई है, अन्य शराबखाने की अब जरूरत नहीं है। इस समय अपना रुधिर तो शराव हो रहा है और चित्त कबाब अतएव किसी नशे के प्याले का अब अवकाश नहीं ।

(६) प्रेम मदिरा का नशा अत्यन्त चढ़ा हुआ है, इसलिए अब जो चाहे सो कोई कहे, सारा संसार तो तुच्छ हो रहा है । पर यह नशा या मस्ती पागल मनुष्य की पशुवृत्ति नहीं है ।

---

१. कवि का नाम है और राम भगवान् से भी तात्पर्य है, २. आधीन, अनुचर, आज्ञाकारी, ३. उठा है, ४. शराबखाने की जरूरत नहीं है, ५. प्याला पीने का अवकाश नहीं, ६. नशा, ७. छाया हुआ, ८. तुच्छ, ९. संसार, १०. पागल पुरुष का वहशीपन (पशुवत व्यवहार) नहीं है ।

अल्विदा[१] ऐ मर्ज़े-दुनिया! अल्विदा ऐ जिस्मों-जाँ! ।
ऐ अतश[२] ऐ जू[३] चलो, ईं जा[४] कबूतरख़ाना नेस्त ।।३।।

क्या तजल्ली[५] है यह नारे-हुस्न[६] शोलाख़ेज[७] है ।
मार ले पर ही यहाँ पर ताक़ते-पर्वाना नेस्त ।।४।।

मेह्र[८] हो मह[९] हो दबिस्ताँ[१०] हो गुलिस्ताँ[११] कोहसार[१२]।
मौजज़न[१३] अपनी है ख़ूबी, सूरते-बेगाना नेस्त ।।५।।

---

(३) हे जगत् जो एक रोग है ! तू अब रुख़सत हो । देह और प्राण तुम भी अब चलो दूर हो । हे भूख और प्यास ! तुम दोनों मेरे पास से परे हटो, यह जगह कोई कबूतरखाना (अर्थात् तुम्हारे सदा खाने पीने का घर) नहीं है ।

(४) आहा ! सौंदर्य की तेज ज्वाला कैसी भड़की हुई है । अब किस पतंगे की शक्ति है कि जो इसके आगे पर भी मार सके ? अर्थात् इस सुन्दरता से बढ़कर कौन सुन्दरता हो सकती है ?

(५) सूर्य हो चाहे चन्द्र, पाठशाला हो चाहे वाटिका और पर्वत, पर सब में अपनी सुन्दरता तरंगे मार रही हैं, अन्य किसी रूप की नहीं ।

---

१. रुख़सत हो, २. प्यास, ३. भूख, क्षुधा, ४. यह, जगह, ५. प्रकाश, चमक, ६. सौन्दर्य रूप ज्वाला, ७. भड़की हुई, ८. सूर्य, ९. चन्द्र, १०. पाठशाला, ११. बाग, १२. पर्वत व पहाड़ी जगह १३. तरंगमई वा लहरा रही ।

लोग बोले गहन[1] ने पकड़ा है सूरज को, ग़लत ।
खुद हैं तारीकी[2] में बरमन[3] साया महजूबाना[4] नेस्त ।।६।।
उठ मेरी जाँ ! जिस्म से हो ग़र्क़ ज़ाते-राम[5] में ।
जिस्म[6] बदरीश्वर की मूरत, हरकते-फरज़ाना[7] नेस्त ।।७।।

---

(६) लोग कहते हैं कि सूर्य को ग्रहण ने पकड़ रक्खा है पर यह नितांत झूठ है क्योंकि स्वयं तो अन्धकार में होते हैं और प्रकाश स्वरूप सूर्य को अन्धकार में समझने लग जाते हैं । सूर्य कहता है कि मैं अन्धकार में नहीं हूँ । जैसे सूर्य का ग्रहण से पकड़े जाना झूठ है और सूर्य वास्तव में ग्रहण से ऊपर होता है, ऐसे ही मुझे अज्ञान रूपी अन्धकार में मानना झूठ है और मुझ पर वास्तव में किसी प्रकार ढाकने वाला पर्दा नहीं है ।

(७) हे मेरे प्राण ! इस देह से उठकर राम परमात्मा के स्वरूप में लीन हो जाओ । और देह ऐसी हो जाय जैसे बदरीनारायण जी की मूर्ति (जड़) कि जिस में चेतन्यता की गति भी नही है ।*

---

१. ग्रहण, २. अन्धकार, ३. मुझपर, ४. परदे में छुपे के समान छिपानेवाला ५. राम के स्वरूप, आत्मदेव, राम कवि का नाम भी है, ६. देह, ७. चेतन्यता की गति, ८. भाग्य ।

*यह कविता सन् १९०२ की दीपमाला में हिमालय के बदरीनारायण के मन्दिर में ग्रहण के समय लिखी गई थी । अतएव इसमें ग्रहण और श्री बदरी नारायण जी की मूर्ति का दृष्टान्त आया है ।

(१२८)

झँजोटी, ताल ठुमरी

भाग तिन्हा दे अच्छे, जिन्हां नूं राम मिले। (टेक)
जद[1] "मैं" सी तां दिलवर नासी।
"मैं" निकसी पिया घट घट वासी॥
खसम[2] मरे घर वस्से! भाग तिन्हां दे अच्छे॥ १॥
जद "मैं" मार पिछांवल[3] सुट्टियां[4]।
प्रेम नगर चढ़ सेजे सुत्तियाँ॥
इशक़ हुलारे[5] दस्ते! भाग तिन्हाँ दे अच्छे॥ २॥
चादर फूंक शरह[6] दी सेकाँ।
आखियाँ खोल दिलवर नूं देखाँ॥
भरम शुब्हे सब नस्से[8]! भाग तिन्हाँ दे अच्छे॥ ३॥

(टेक) उनके भाग्य निःसन्देह बड़े अच्छे हैं जिन्हें राम मिल जाँय।

पंक्तिवार अर्थ

(१) जब तुच्छ अहंकार रूपी "मैं" या खुदी भीतर थी तब अपरिच्छिन्न अहंकार रूपी ख़ुदा अर्थात् प्यारा आत्मा भीतर अनुभव नहीं होता था। और जब तुच्छ अहंकार रूपी मैं या खुदी भीतर से निकल गई (अर्थात् जब उसका अभाव हो गया) तब प्यारा (निज स्वरूप) घट-घट में वसा अनुभव हुआ।

(२) जब इस तुच्छ अहंकार को मार कर पीछे फेंका, तब प्रेमानन्द भोगना नसीब हुआ। फिर तो प्रेम अपना प्रबल बेग दर्शाने लग पड़ा।

(३) जब मैं कर्मकाण्ड रूपी अज्ञान के परदे को ज्ञानाग्नि से जलाकर उसकी आग तापने लगा, तब निज स्वरूप प्रत्यक्ष अनुभव होने लगा, तब तो सारे भ्रम संशय स्वतः दूर हो गए।

---

१. जब मैं थी, २. पति, स्वामी, तात्पर्य अहंकार से, ३. पिछली ओर, ४. फेंका, ५. जोर दिखावे, ६. कर्म-कांड, ७. तापी, ८. नाश हुए भागे

ढूंड ढूंड के उमर गंवाई ।
जाँ घर अपने झाती पाई ।।
राम सज्जे[1] रामखब्बे[2] ! भाग तिन्हाँ दे अच्छे ।। ४ ।।
जिन्हाँ नूं **राम** मिलें ।।

(१२६)

राग भैरवी, ताल दादरा

अक्ल के मदरसे से उठ, इश्क़ के मैकदे[3] में आ ।
जामे-शराबे-बेखुदी[4], अब तो पिया जो हो सो हो ।। १ ।।
लाग[5] की आग लग उठी, पुम्बासा[6] सारा जल गया ।
रख़ते-बुजूदे-जानो-तन,[7] कुच्छ न बचा जो हो सो हो ।। २ ।।
हिज्र[8] की जब मुसीबतें, अर्ज़ की उसके रूबरू ।
नाज़ो-अदा[9] से मुस्करा[10] कहने लगा जो हो सो हो ।। ३ ।।
इश्क़[11] में तेरे कोहे ग़म[12], सिर पै लिया जो हो सो हो ।
ऐशो-निशाते-ज़िदगी[13], छोड़ दिया जो हो सो हो ।। ४ ।।

---

(४) इतनी मुद्दत तक तो तलाश में आयु खोई पर जब अपने भीतर दृष्टि की तो राम (निज स्वरूप) को दायें बायें अर्थात् सर्वत्र व्यापक पाया ।

---

१. दायें, २. बायें, ३. (प्रेम का) शराब खाना, ४. बेखुदी की शराब का प्याला, ५. प्रेम की लगन (लटक), ६. रुई की तरह, ७. प्राण और तन रूपी असबाब की हस्ती कुछ न बची, ८. बिरह, ९. नखरे टखरे, १०. हँसकर, ११. प्रेम स्नेह, १२. शोक का पर्वत, १३. जिन्दगी की प्रसन्नता और आनन्द ।

दुनिया के नेको-बद[1] से काम, हमको नियाज़[2] कुच्छ नहीं ।
आप[3] से जो गुज़र गया, फिर उसे क्या जो हो सो हो ॥ ५ ॥

(१३०)

राग भैरवी, ताल दादरा

ऐ दिल ! तू राहे-इश्क़[4] में मरदाना हो, मरदाना हो ।
क़ुर्बां कर अपनी जान को, जानाना[5] हो जानाना हो ॥ १ ॥
तू हज़रते इन्सान है, लाज़िम तुझे इर्फ़ान[6] है ।
हरगिज न तू हैवान सा दीवाना[7] हो दीवाना हो ॥ २ ॥
हर ग़म से तू आज़ाद हो खुरसन्द[8] हो अरु शाद[9] हो ।
हर दो जहाँ के फ़िक्र से बेगाना[10] हो, बेगाना हो ॥ २ ॥
कर तर्क ज़ुह्द[11] ज़ाहिदाँ[12] ! मजलिस नशीं[13] रिन्दों का हो ।
दीवानगी[14] से दर्गुज़र, फ़रज़ाना हो फ़रजाना[15] हो ॥ १ ॥
मैं तू का मनशा अक़्ल है, लाज़िम है तुझको क़ादिरी[16] ।
पीकर शराबे-बेख़ुदी, मस्ताना हो, मस्ताना हो ॥ ५ ॥

---

१. अच्छे और बुरे, पुण्य पाप, २. कवि का नाम, ३. जान हथेली पर रक्खे रहना, अर्थात् जो अहंकार को मारे या जीते हुए हो, या अपने आप से गुजर चुका हो, ४. प्रेम के मार्ग में, ५. प्रीतम, आत्मदेव जो समस्त जीवों का आत्मा है, ६. आत्मज्ञान, ७. पागल, ८. आनन्द, ९. खुश, प्रसन्न, १०. फिक्र रहित हो, निश्चिन्त हो, ११. तप, कर्मकांड, १२. तपसी, कर्मकांडी, १३. मस्तों की सभा में बैठने वाला बन, १४. पागलपन, १५. आत्मवित, अक्लमंद, १६. कवि का नाम है ।

(१३१)

लावनी सवैया

समझ बूझ[1] दिल खोज प्यारे ! आशिक़ होकर सोना क्या ।।
जिन नैनों से नींद गंवाई, तकिया लेफ़ बिछौना क्या ।।
रूखा सूखा खा कर टुकड़ा, चिकना और सलोना क्या ।।
पाया है तो कर ले शादी[2] पाई पाई पर खोना क्या ।।
कहत **कमाल**[3] प्रेम के मारग[4], सीस दिया फिर रोना क्या ।।

(१३२)

राग खमाच, ताल दादरा

अब तो मेरा राम नाम, दूसरा न कोई (टेक)
माता छोड़ी, पिता छोड़े, छोड़े सगा सोई ।
साधू संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ।। अब तो० ।। १ ।।
संत देख दौड़ आई, जगत देख रोई ।
प्रेम आँसू डार डार, अमर[5] बेल बोई ।। अब तो० ।। २ ।।
मारग में तारण[6] मिले, संग राम दोई ।
संत सदा शीश पर, राम हृदय होई ।। अब तो० ।। ३ ।।
अंत में से तंत[7] काढ़यो, पिच्छे रही सोई ।
राणे भेज्यो विष का प्याला, पीते मस्त होई। अब तो० ।।४।।

---

१. दिल में विचार करके, २. खुशी, ३. कवि का नाम, ४. रास्ता
५. सर्वदा रहने वाली, ६. पार करने वाले, बचाने वाले, उद्धार करने वाले,
७ तत्व, सत्य वस्तु से अभिप्राय है ।

अब तो बात फैल गयी, जाने सब कोई ।
दासि मीरा लाल गिरधर, होनी सी सो होई ।। अब तो० ।। ५ ।।

(१३३)

राग कालंगड़ा, ताल धुमाली

माई ! मैंने गोविन्द लीना मोल (टेक)
कोई कहे हलका, कोई कहे भारी, लिया तराजू तोल ।। माई० ।। १ ।।
कोई कहे सस्ता, कोई कहे महँगा कोई कहे अनमोल ।। माई० ।। २ ।।
वृन्दाबन की कुंज गली में, लिया बजा के ढोल ।। माई० ।। ३ ।।
तन मन धन सब वार के फेंके, लिया मुफ़्त के मोल ।। माई० ।। ४ ।।
सारे ब्रज में चर्चा फैली, मीरा मिली गिरधर दिल खोल।।माई० ।। ५ ।।

(१३४)

राग खमाच, ताल दादरा

राम की दीवानी, मीरा दरद न जाने कोय । (टेक)
घायल की गति घायल जाने, जो कोई घायल होय ।
शेषनाग पै सेज पिया की, किस बिधि मिलना होय ।। १ ।।
दर्द की मारी बन बन डोलूं, बैद मिला नहिं कोय ।
मीरा की तब पीर मिटे जब बैद संवलिया होय ।। २ ।।

(१३५)

राग खमाच, ताल दादरा

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई । (टेक)
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ।
तात मात भ्रात बंधु, अपना नहिं कोई ।। १ ।।

छोड़ दई कुलकी कान[1], क्या करेगा कोई ।
सन्तन ढिग बैठ बैठ, लोक लाज खोई ।। २ ।।
अंसुवन जल सींच सींच, प्रेम बेलि बोई ।
अब तो बेलि फैल गई, आनन्द फल होई ।। ३ ।।
आई मैं भक्ति जान, जगत देख मोही ।
दासि मीरा गिरधर प्रभु, तारो अब मोही ।। ४ ।।

(१३६)

राग खमाच, ताल दादरा

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो, दूसरा न कोई ।। (टेक)
प्रेम की मथनिया माथी, भक्ति से बिलोई ।
घृत घृत काढ़ लीनो, छाछ पीवे कोई ।। १ ।।
अंसुवन जल सींच सींच, प्रेम बेलि बोई ।
छांड़ दई कुल की रीति, लाज सब बिगोई[2] ।
सन्तन संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई ।
दासि मीरा लाल गिरधर, होनी सी सो होई ।। ३ ।।

(१३७)

साकी, राग जोगी

राणाजी ! मैं सांवरे रंग राती । (टेक)
जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजत पाती ।
मेरा पिया मेरे हृदय बसत हैं, यह कछु कहीं न जाती ।। १ ।।

---

१. नसल २. दूर की ।

झूठा सुहाग जगत का री सजनी! होय होय मिट जासी।
मैं तो एक अविनाशी बरूंगी, जाहे काल नहीं खासी ॥ २ ॥
और तो प्याला पी पी माती, मैं बिन पिये ही माती।
यह प्याला है प्रेम हरी का, छकी रहूं दिन राती ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, खोल मिली हरि छाती।
कोई कहे खरी कि कोई खोटी, मेरी प्रेम की रीत सुहाती ॥ ४ ॥

(१३८)

साकी, राग जोगी

मैं गिरिधर संग राती[1] गुसैंयां, मैं गिरिधर संग राती। (टेक)
पचरंग चूनर रंगा दी सखी मैं झुरमुट[2] खेलन जाती।
वा झुरमुट मेरा पिया मिलेगा, वा ही को गलवा लगाती ॥ १ ॥
सुरत[3] निरत का दीवा बना के, मनसा[4] की कर बाती।
प्रेम हट्टी का तेल मंगा ले, जग रह्यो दिन राती ॥ २ ॥
जिनके पिया परदेश बसत हैं, लिख लिख भेजैं पाती[5]।
मीरा के पिया हृदय बसत हैं, ना कहीं आती न जाती ॥ ३ ॥

(१३९)

साकी, राग जोगी

भज मन चरण कमल अविनासी। (टेक)
जे तोहे[6] दीखे धरण गगन बिच, ते तानी[7] सब उठ जासी ॥ १ ॥

---

१. प्रेम में रती हुई, २. बहुत सी प्रेममयी स्त्रियों के समूह में, ३. सुरति वा ध्यान, ४. मन, ५. पत्र, ६. जो तुझे, ७. वह माया जाल।

कहा[1] भयो तीरथ व्रत कीने, का लिये करवट कासी ।
घर में वस्तु धरी नहीं सूझे, वन वन फिरत उदासी ।। २ ।।
कहा भयो जो भगवां पहने, घर त्यज हो संन्यासी ।
योगी हुए युक्ति नहीं जानी, उलट जन्म फिर आसी ।। ३ ।।
अर्ज करूं अबला[2] कर[3] जोड़ी, श्याम तुम्हारी दासी ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, काटो यम की फांसी ।। ४ ।।

(१४०)

देश, ताल देवार

जूंहीं आमद आमदे-इश्क़[4] का मुझे दिल ने मुज़दा[5] सुना दिया ।
ख़िरदों - हवासो - शकेब[6] ने कहीं कूंसे कूच[7] बजा दिया ।। १ ।।
जिसे देखना ही मुहाल[8] था, न था जिसका नामो-निशां कहीं ।
सो हर एक ज़र्रे में इश्क़ ने मुझे उसका जलवा[9] दिखा दिया ।। २ ।।

पंक्तिवार अर्थ

(१) जिस समय मेरे अन्दर अपने स्वरूप के इश्क (प्रेम) के आने की खुशखबरी दिल ने सुनाई, उसी समय अक़्ल और होश और सन्तोष ने मेरे अन्दर से निकलने का नक़्क़ारा बजा दिया (अर्थात् भीतर से होश-हवाश निकलने लगे)।

(२) (प्रेम आने से पहिले) जिसको देखना कठिन था और जिसका नाम और निशान नजर नहीं आता था, उसका इस इश्क (प्रेम) ने हर एक अणु मात्र में भी मुझे अब दर्शन करा दिया।

---

१. क्या हुआ, २. भोली स्त्री, ३. हाथ जोड़ कर, ४. प्रेम का आगमन ५. खुशखबरी, शुभ समाचार, ६. अक्ल, होश और सन्तोष, ७. चलने का नक्कारा, ८. कठिन, ९. दर्शन।

करूं क्या बयान मैं हम-नशीं[1] असर उसकी 'लुत्फ़ें-निगाह[2] का ! ।
कि तऐयुनात[3] की क़ैद से मुझे एक दम से छुड़ा दिया ।। ३ ।।
वह जो नक़शे-पा[4] की तरह रही थी नमूद[5] अपने वजूद[6] की ।
सो कशिश से दामने-नाज़[7] की उसे भी ज़मीं से मिटा दिया ।। ४ ।।
तेरी नासिहा[8] ! यह चुनां चुनीं[9], कि है खुद पसन्दी के सब क़रीं ।
न दिखाई देगी तुझे कहीं, कभी जो किसी ने सुझा दिया ।। ५ ।।

---

(३) उपास्य देव की कृपा दृष्टि के प्रभाव का क्या वर्णन करूं कि जिस प्रभाव ने मुझे सर्व बन्धनों की कैद से एक दम में छुड़ा दिया (अर्थात सर्व बन्धनों से तत्काल मुक्त कर दिया) ।

(४) जमींन पर पांवों के चिन्ह की तरह जो अहम् भाव का चिन्ह था तो उसे भी उसने अपने नखरे रूपी पल्ले की रगड़ से पृथ्वी से मिटा दिया ।

(५) ऐ उपदेशक तेरे यह 'क्यों और कब' तेरी अपनी रुचि के साथी हैं । अगर किसी ने तुझ को सुझा दिया अर्थात् अनुभव करा दिया तो यह क्यों किस तरह (अर्थात् क्यों और कैसे होश उड़ जाते हैं इत्यादि) तुझको भी नहीं दिखाई देंगे ।

---

१. साथ बैठने वाला गुरु, २. दृष्टि का आनन्द या प्रभाव, ३. बंधन, परिच्छिन्नता, ४. पांवों का चिन्ह, ५. चिन्ह, निशान, ६. तन अहमभाव, ७. नखरे रूपी पल्ला, ८. उपदेशक, ९. क्यों, किस तरह, १०. साथी ।

तुझे इश्क़े-दिल से ही काम था, न कि उस्तुखानों[1] का फूंकना।
ग़ज़ब एक शेर के वास्ते तू ने नयसतां[2] को जला दिया ।। ६ ।।
यह निहाल[3] शोलये-हुस्न का[4] तेरा बढ़ के सर बफ़लक[5] हुआ।
मेरी काहे हस्ती[6] ने मुश्तइल[7] हो उसे यह नश्वो-नुमा[8] दिया ।। ७ ।।

---

(६) इसके दो मतलब हैं :—(१) ऐ ब्रह्म साक्षातकार के जिज्ञासु ! तुझको दिल में प्रेम भड़काना चाहिए था, न कि अज्ञानी तपस्वियों की तरह हठयोग इत्यादि से तन बदन को सुखाना और अस्थियों को जलाना था। बड़े आश्चर्य की बात है। कि तूने एक शेर (दिल) के काबू करने के लिए सारे जंगल को (अर्थात् इस शरीर को जिसमें यह दिल रूपी शेर रहता है) व्यर्थ आग लगा दी, मुफ्त में शरीर को जर्जरीभूत कर दिया।

दूसरा अर्थ—(२) ऐ यार ! (प्रेमात्मन्) ! तुझे हमारा दिली प्रेम लेना चाहिए था, न कि हड्डियों और शरीर को जलाना और बरबाद करना था। बड़ा आश्चर्य है कि तू ने हमारा दिल लेने के बजाए हमारे शरीर रूपी बन को मुफ्त में जला दिया।

(७) यह तेरी सुन्दरता की अग्नि (दमक) की लाट का वृक्ष आकाश तक ऊपर बढ़ गया और मेरे शरीर रूपी तृण ने उस से जल कर उस आग को और अधिक बढ़ा दिया (अर्थात् उस अग्नि को और भी ज्यादा भड़का दिया)।

---

१. हड्डियों, २. जंगल, ३. वृक्ष बूटा, ४. सुन्दरता की ज्वाला, ५. आकाश तक पहुंचा, ६. मेरी स्थिति के तृण अर्थात् मेरी स्थिति रूप तृण ने, ७. जलकर वा भड़क कर, ८. अधिक किया, भड़काया।

(१४१)

सोहनी, ताल तेंवरा

खबरे - तहय्युरे - इश्क़[1] सुन, न जुनूं रहा न परी रही ।
न तो तू रहा, न तो मैं रहा, जो रही सो बेख़बरी रही ।। १ ।।
शहे-बेखुदी[2] ने अता[3] किया, मुझे जब लिबासे-वरहनगी[4] ।
न खिरद[5] की बख्यागरी[6] रही, न जुनूं की पर्दादरी[7] रही ।। २ ।।
वह जो होशो-अक़्लो-हवास थे, तेरी इक निगह[8] ने उड़ा दिये ।
कि शराबे-सदक़दहे-आर्ज़ू[9] खुमे[10] दिल में थी सो भरी रही ।। ३ ।।

पंक्तिवार अर्थ

(१) इश्क की अजीब खबर सुनने से न तो दुन्यावी चीज़ों के लिए पागलपन रहा न सांसारिक वस्तुओं में सुन्दरता (परी) रही और इस इश्क (प्रेम) के आनें से न तो तू रहा और न मैं रहा अर्थात् तू तू मैं मैं सब दूर हो गया । जो कुछ रही वह बेखबरी रही ।

(२) अहंकार रहित बादशाह (गुरुदेव) ने जब नंगेपन का बाना बखशा (अर्थात् जब तुझे माया के पर्दों से रहित कर दिया) तो बुद्धि से अपने पापों को छिपाने का भाव रहा और न गुप्त रहस्य प्रकट करने का पागलपन रहा ।

(३) ऐ यार (स्व स्वरूप) वह जो होश अरु अक्ल अरु हवास थे तेरी दृष्टि मात्र से उड़ गए (अर्थात तेरे अनुभव से अक्ल इत्यादि भाग गयी) और सैकड़ों क़िस्म की ख्वाहिश रूपी प्यालों की शराब जो दिल रूपी मटके में भरी हुई थी वह ज्यूं की त्यूं भरी रही अर्थात् ख्वाहिशें पूरे हुए बग़ैर नष्ट हो गई) ।

---

१. इश्क की हैरानी की खबर सुनकर, २. बेखुदी के बादशाह, ३. बख्शा, ४. नंगेपन का वस्त्र, ५. बुद्धि, अकल, ६. ढांपे रहना, ७. चीरफाड़, ८. दृष्टि, ९. सौ (१००) प्यालों की शराब की इच्छा, १०. दिल का मटका ।

चली सिम्ते-ग़ैब से इक हवा, कि चमन ग़रूर का जल गया ।
वले[1] शमा[2]-ए-खाना जलाके सब, गुले-सुर्खसां[3] ही हरी रही ।। ४ ।।
वह अजब घड़ी थी कि जिस घड़ी, लिया दर्स[4] नुस्ख़ए[5]-इश्क़ का ।
कि किताबे-अक़्ल की ताक़ पै, जो धरी थी यूं ही धरी रही ।। ५ ।।
तेरे जोशे-हैरते-हुस्न[6] का, हुआ इस क़दर से असर यहां ।
न तो आयीने में जिला[7] रही, न परी में जल्वा गरी रही ।। ६ ।।
किया मस्त वादा-ए-इश्क़[8] ने, दिले-बेनवाये[9] **सिराज**[10] को ।
न हज़र[11] रहा न ख़तर[12] रहा, जो रही सो बेख़तरी[13] रही ।। ७ ।।

---

(४) अव्यक्त देश से ऐसी एक हवा चली कि अहंकार का सारा बाग जल गया बल्कि घर (अन्तःकरण) का दीपक (ज्ञान) सब जलाकर आप स्वयं लाल (अनार के) फूल की तरह हरा भरा (ताज़ा) रह गया ।

(५) वह अजीब घड़ी थी कि जिस घड़ी इश्क (प्रेम) का पाठ पढ़ा था कि जिसके आने से अक्ल की किताब ताक़ पर धरी की धरी रही ।

(६) ऐ यार ! (स्व स्वरूप) तेरे सौंदर्य के जोश का प्रभाव इतना हुआ कि शीशे की सफाई (मनकी रुचि) अरु (माया रूपी) परी की सुन्दरता सभी जाती रहीं ।

(७) इश्क की मदिरा ने सिराज (कवि का नाम है) के इच्छा रहित हृदय को मस्त कर दिया । फिर न कोई डर रहा न खतरा रहा । जो कुछ रहा निर्भयता रही ।

---

१. लेकिन, २. घर का दीपक, ३. लाल पुष्प की तरह, ४. पाठ, ५. प्रेम की पुस्तक का, ६. सुन्दरता की हैरानी का जोश, ७. साफ़ सफ़ाफ़पना ८. प्रेम रस, ९. इच्छा रहित हृदय, १०. कवि का नाम है, ११. डर, १६. भय, झिझक, १३. निर्भयता ।

(१४२)

राग भैरवी, ताल ग़ज़ल

तमाशा - ये जहाँ है और भरे हैं सब तमाशाई ।
न सूरत अपने दिलवर सी, कहीं अब तक नज़र आई ।।१।।
न उसका देखने वाला, न मेरा पूछने वाला ।
इधर यह बेकसी[1] अपनी, उधर उसकी वह तनहाई[2] ।।१।।
मुझे यह धुन[3], कि उसके-तालिबों[4] में नाम हो जावे ।
उसे यह कद[5], कि पहले देख लो है यह भी सौदाई ।।३।।
मुझे मतलूब[6] दीदार[7] उसका, इक खिल्वत[8] के आलम[9] में ।
उसे मंजूर, मेरी आज़माइश, मेरी रुसवाई[10] ।।४।।
मुझे धड़का, कि आज़ुर्दा[11] न हो वो मुझ से कुछ दिल में ।
उसे शिकवा[12], कि तू ने क्यों तबीयत अपनी भटकाई ।।५।।
मैं कहता हूं, कि तेरा हुस्न[13] आलम सोज़[14] है जानाँ[15] ।
वह कहता है, कि क्या हो, गर करूं मैं ज़ुल्फ-आराई[16] ।।६।।
मैं कहता हूं, कि तुझ पर इक ज़माना जान देता है ।
वह कहता है, कि हाँ बेइन्तहा हैं मेरे शैदाई[17] ।।७।।

---

१. कमजोरी, लाचारी, २. अकेलापन, ३. लगन, ४. जिज्ञासुओं, ५. ज़िद, हट, ६. जरूरत, आवश्यकता, ७. दर्शन, ८. एकान्त, ९. अवस्था, समय, १०. जिल्लत, बदनामी, ११. नाराज, खफा, क्रुद्ध, १२. शिकायत, १३. सुन्दरता, १४. जगत व दुनिया को लजाने वाला, १५. ऐ प्यारे, १६. अपने बालों को सजाना, श्रृंगार करना, १७. आसक्त, आशिक, भक्त ।

मैं कहता हूं, कि दिलवर ! मैं नहीं हूं क्या तेरा आशिक़ ?
वह कहता है, कि मैं तो रखता हूं ऐसी ही रानाई[१] ॥८॥
मैं कहता हूं, कि तू नज़रों से मेरी क्यों हुआ ओझल[२] ।
वह कहता है, यही अपनी अदा[३] मुझ को पसन्द आई ॥९॥
मैं कहता हूं, तेरा यह हुस्न और देखूं न मैं उसको ।
वह कहता है, कि मैं खुद देखता हूं अपनी ज़ेबाई[४] ॥१०॥
मैं कहता हूं, कि हद पर्दे की आखिर ताबकै[५] परदा ।
वह कहता है, कोई जब तक न अपना हो शिनासाई[६] ॥११॥
मैं कहता हूं, कि अब मुझको नहीं है ताब[७] फुर्क़त की ।
वह कहता है, कि आशिक हो के कैसी नाशिकेबाई[८] ॥१२॥
मैं कहता हूं, कि सूरत अपनी दिखला दीजिये मुझको ।
वह कहता है, कि सूरत मेरी किस को देगी दिखलाई ? ॥१३॥
मैं कहता हूं, कि जानाँ[९] ! अब तो मेरी जान जाती है ।
वह कहता है, कि दिल में याद कर क्योंकर थी वह आई ॥१४॥
मैं कहता हूं कि इक झलकी है काफी मेरी तसकीं[१०] को ।
वह कहता है, कि बामें तूर[११] पर थी क्या निदा[१२] आई ॥१५॥

१. सुन्दरता, बाँकपन, वज़ा क़ता, २. छुपा, अप्रकट, ३. चेष्टा, ४. सजावट, खूबसूरती, ५. कब तक, ६. अपने आपको पहिचानने, वाला, आत्मवेत्ता, ७. जुदाई या विरह के सहने की शक्ति वा ताकत, ८. बेसबरी, ९. ऐ प्यारे, १०. तसल्ली, सन्तोष, ११. तूर के पहाड़ की चोटी पर (जहाँ हज़रत मूसा को ज्ञान मिला और जहाँ ईश्वर आग की लाट में मूसा के आगे प्रकट हुआ था) अर्थात् ज्ञान की शिखर पर, १२ आवाज, वाणी । (देखो प्रस्तावना)

मैं कहता हूं, कि मुझ बेसब्र को किस तौर सब्र आये ।
वह कहता है, कि मेरी याद की लज्जत[1] नहीं पाई ।।१६।।
मैं कहता हूं, यह दामे-इश्क़[2] बेढब तू ने फैलाया ।
वह कहता है, कि मेरी ख़ुद-पसन्दी[3] मेरी ख़ुदराई[4] ।।१७।।

(१४३)

राग परज, ताल धुमाली

हमन[5] हैं, इश्क़ के माते[6], हमन को दौलतां क्या रे ।
नहीं कुछ माल की परवाह, किसी की मिन्नतां क्या रे ।।१।।
हमन को ख़ुश्क रोटी बस, कमर को यक लंगोटी बस ।
सिरे पै एक टोपी बस, हमन को इज्ज़तां क्या रे ।।२।।
क़बाशाला[7] वज़ीरों को, ज़री ज़रबफ्त अमीरों को ।
हमन जैसे फक़ीरों को, जगत की नेऽमतां[8] क्या रे ।।३।।
जिन्हों के सुखन[9] स्याने[10] हैं, उन्हीं को ख़ल्क[11] माने हैं ।
हमन आशिक़ दिवाने हैं, हमन को मजलिसां क्या रे ।।४।।
कियो हम दर्द का खाना, लियो हम भस्म का बाना ।
वली[12] बस शौक़ मन भाना, किसी की मसलहतां[13] क्या रे ।।५।।

---

१. स्वाद, रस, १. प्रेम काल, इश्क पर फंद, ३. अपनी रुचि मर्जी, ४. अपनी राय, ५. हम, ६. मस्त, ७. अमीरों की पोशाक चुग़ा ८. जगत के आनन्द दायक पदार्थ, ६. वाक्य, उपदेश, बातें, ३०. बुद्धि युक्त, ठीक, ११. दुनिया, १२. कवि का नाम, १३. सलाह, नसीहत ।

(१४४)

राग गारा, ताल दादरा

हम कूये-दरे-यार[1] से क्या टल के जायेंगे ।
हम न पत्थर हैं फिसलने कि फिसल जायेंगे ॥१॥
वसले-सनम[2] को छोड़ कर क्या काबा जायेंगे ।
वां भी वही सनम[3] है तो क्या मुंह दिखायेंगे ॥२॥
हम अपने कूए[4]-यार को काबा बनायेंगे ।
लैला[5] बनेंगे हम, उसे मजनूं[6] बनायेंगे ॥३॥
ग़ैरों से मत मिलो कि सितमगर[7] बनायेंगे ।
हमसे मिला करो तुम्हें दिलवर बनायेंगे ॥४॥
आसन जमाये बैठे हैं, दर से न जायेंगे ।
हम कैहकशां[8] बनें, तुझे महरू[9] बनायेंगे ॥५॥

(१४५)

राग गारा, ताल धुमाली

(वज़न—सब से जहाँ में अच्छा)
कुन्दन के हम डले हैं, जब चाहे तू गला ले ।
बावर[10] न हो, तो हमको ले आज आज़मा ले ॥

१. प्यारे के द्वार की गली से, २. प्यारे के दर्शन, मिलाप, संग, ३. प्यारा (अपना स्वरूप), ४. कूचा, गली, ५. एक प्रिया का नाम, ६. एक प्रीतम का नाम है, ७. ज़ालिम, जुल्म करने वाला, ८. दूधिया रास्ता जो रात को आकाश में नजर आता है, जिसे आकाश गंगा, (milky path) भी कहते हैं, ९. चन्द्र-मुख, चाँद मूरत, १०. विश्वास, निश्चय ।

जैसी तेरी खुशी हो, सब नाच तू नचा ले ।
सब छान बीन कर ले, हर तौर[1] दिल जमा ले ।।१।।
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा[2] है ।
याँ यों भी वाह वाह है और वों भी वाह वाह है ।। (टेक)
या दिल से अब खुश होकर कर हमको प्यार प्यारे ! ।
या तेग़[3] खेंच ज़ालिम[4] ! टुकड़े उड़ा हमारे ।।
जीता रखे तू हमको या तन से सिर उतारे ।
अब तो फ़कीर आशिक़ कहते हैं यों पुकारे ।।२।। राज़ी हैं
अब दर[5] पै अपने हमको रहने दे या उठा दे ।
हम इस तरह भी खुश हैं, रख या हवा[6] बना दे ।।
आशिक़ हैं पर क़लन्दर चाहे जहाँ बिठा दे ।
या अर्श[7] पर चढ़ादे या ख़ाक में सुलादे ।।३।। राज़ी हैं

(१४६)

राग संधोरा, ताल दीपचन्दी

अरे लोगों ! तुम्हें क्या है ? या वह जाने या मैं जानूं । (टेक)
वह दिल मांगे तो हाज़िर है, वह सिर मांगे तो बे सिर हूं ।
जो मुख मोड़ूं तो काफ़िर हूं, या वह जाने या मैं जानूं ।।१।।
बग़ल में मेरे छुप रहता, मैं उसके नाज़[8] को सहता ।
वह दो बातें मुझे कहता, या वह जाने या मैं जानूं ।।२।।

---

१. हर तरह, तरीका, २. मर्जी, ३. तलवार, ४. जुल्म करने वाला, निर्दयी, सताने वाला, अथवा रुद्र रूप, ५. द्वार अर्थात् निकट अपने, ६. दूर फेंक दे, ७. आकाश, ८. नखरे, टखरे ।

वह मेरे खून का प्यासा है, मैं उस के दर्द का मारा ।
दोनों का पन्थ[1] है न्यारा, या वह जाने या मैं जानूं ।।३।।
मुआ आशिक़ द्वारे पर, अगर वाक़िफ़ नहीं दिलवर ।
अरे मुल्ला सिपारा पढ़, या वह जाने या मैं जानूं ।।४।।

(१४७)

राग सिंधोरा, ताल दीपचन्दी

रहा है होश कुछ बाक़ी उसे भी अब निबेड़े जा ।
यही आहंग[2] ऐ मुतरब-पिसर[3] ! टुक और छेड़े जा ।।१।।
मुझे इस दर्द में लज्ज़त[4] है, ऐ जोशे जुनूं[5] ! अच्छा ! ।
मेरे जख्मे-जिगर[6] के हर घड़ी टाँके उधेड़े जा ।।२।।
उखड़ता दम, कलेजा मुंह को आना, ज़ार-बेताबी[7] ।
यही साहिल[8] पै आना है, लगे हैं पार बेड़े जा ।।३।।

पंक्तिवार अर्थ

(१) ऐ प्यारे ! अगर कुछ संसार का होश बाक़ी रहा है तो उसे भी अब दूर कर दे, ऐ रागी पुत्र ! यही सुर तू छेड़े जा ।
(२) मुझे इस दर्द में आनन्द है क्योंकि यह दर्द अपने स्वरूप को याद दिलाता है इसलिए ऐ पागलपन के जोश ! मेरे जिगर के टाँके (मेरे दिल के घाव) हर घड़ी उधेड़े (फोड़े) जा ।
(३) दम का उखड़ना, कलेजे का मुंह पर आना और विलख-बिलख के रोना ये ही किनारे पर आना है । अर्थात् प्यारे के वियोग से

१. मार्ग, २. राग व सुर, ३. गवैये लड़के, ४. आनन्द, स्वाद, ५. पागलपन का जोश, ६. दिल के घाव, ७. बिलख-बिलख के रोना, ८. किनारा ।

है नालैज़ार[1] ने पाया, सुराग़े - नाक़ा[2] ए - लैला ।
मुबादा[3] क़ैस[4] आ पहुंचे, हुदा[5] को ज़ोर छेड़े जा ।।४।।
कहाँ लज्ज़त, कहाँ का दर्द, तूफाँ कैसा, ज़ख़्मी कौन ।
हक़ीक़त पर पहुंचते ही मिटे क्या खूब झेड़े[6] जा ।।५।।

या आत्म साक्षात्कार के लिए इस व्याकुलता घबड़ाहट और बिलख-बिलख के रोने धोने से ही जीव संसार सागर से तरकर किनारे पर लग जाता है । अतः इसी प्रकार अपनी जिज्ञासा के बढ़ाने में लगा रह ताकि तेरा बेड़ा पार हो जावे ।

(४) एक दिन मजनूं जो लैला का आशिक था जंगल में बिलख-बिलख के रो रहा था । इस रोने की आवाज सुनकर लैला का ऊँटनी सवार उससे मिला । तब उससे मजनूं ने अपना वृतांत कहना प्रारम्भ किया और कहते कहते लैला के नगर तक पहुंच गया । इसी भाव को आगे रखकर कवि कहता है कि मजनूं के ज़ार ज़ार रोने से ही लैला के घर का पता लगा, इसलिए ये ऊँट वाले ! ऊँट बढ़ाये जा जिससे कहीं मजनूं न पीछे से आ जाय (क्योंकि जिस समय मजनूं (मन) लैला (तत्व-दृष्टि) को मिल जाय अर्थात् आत्मानुभव कर ले) तो फिर ।

(५) कहाँ की लज्जत, कहाँ का दर्द कैसा तूफ़ान, कौन जखमी, तत्व पर पहुँचते ही ये सब झगड़े मिट जाते हैं ।

---

१. रोने को शोर, २. लैला (माशूक) के घर का पता, ३. ऐसा न हो, शायद, ४. मजनूं, ५. ऊँट के हाँकते वक्त का गीत अर्थात् ऊँट को चलाये चल, ६. सब झगड़े, कजिये ।

अरे हट नाखुदा[1] ! पत्वार[2] ! मुड़ ले, टूट पर तूफाँ ।
अड़ा ड़ा धम, अड़ा ड़ा धम, करारो[3] को थपेड़े जा ।।६।।
हैं हम तुम दाखिले-दफ़्तर, ख़ुमे-मय[4] में है दफ़्तर गुम ।
न मुजरिम मुद्दई बाक़ी, मिटे क्या ख़ुश बखेड़े जा ।।७।।

(१४८)

राग गारा, ताल धुमाली

किस किस अदा[5] से तूने जल्वा[6] दिखा के मारा ।
आज़ाद हो चले थे, बन्दा[7] बना के मारा ।।१।।
ख़ुद बोल उठा अनल्हक़[8] ख़ुद बन के शरह[9] तूने ।
इक मर्द-हक़[10] को नाहक[11] सूली चढ़ा के मारा ।।२।।

---

(६) अरे नाव के मल्लाह (बुद्धि जो शरीर रूपी नाव को चलाती है) ! परे हट, पतवार मुड़ता है तो मुड़ने दे, तूफ़ान टूट पड़ता है तो टूटने दे, तूफ़ान के ज़ोर से अगर किनारे टूटकर पानी में अड़ा ड़ा धम अड़ा ड़ा धम करके गिरते हैं तो गिरने दे ।

(७) क्योंकि अब हम तुम दाखिल-दफ्तर हैं और निजानन्द के मटके (अपने एक रूप) में दफ्तर (सारा संसार) गायब है, अब न कोई (द्वैतरूप) मुजरिम है न मुद्ई बाकी है । वाह ! क्या उत्तम रीति से सब झगड़े निपट गए ।

---

१. बेड़े का मल्लाह (मांझी), २. नाव को मोड़ने (घुमाने) की चर्खी, ३. किनारों ४. आनन्द रूपी शराब का मटका, ५. नखरे, छवि, ६. दर्शन, ७. बद्ध जीव, परिच्छिन्न अनुचर, ८. शिवोऽहं, ब्रह्मास्मि, ९. कर्म काण्ड वा स्मृति-शास्त्र, १०. ज्ञानवान् (मंसूर), ११. व्यर्थ, बिना अपराध ।

क्यों कोहकन[1] पै तू ने यह संग-रेज़ियां[2] कीं।
ली उसकी जाने-शीरीं, तेशा उठा के मारा ॥३॥
पहिले बना के पुतला, पुतले में जान डाली।
फिर उसको ख़ुद क़ज़ा[3] की सूरत में आ के मारा ॥४॥
गरदन में क़ुमरियों[4] की उलफ़त का तौक़[5] डाला।
बुलबुल को प्यारे! तू ने गुल[6] बन के ख़ुद ही मारा ॥५॥
आँखों में तेरे ज़ालिम! छुरियाँ छुपी हुई हैं।
देखा जिधर को तू ने पलकें उठा के मारा ॥६॥
ग़ुञ्चे[7] में आ के महका[8], बुलबुल में जा के चहका।
इसको हंसा के मारा, उसको रुला के मारा ॥७॥

(१४६)

राग तिलंग, ताल दादरा *

एक ही दिल था सो दिलवर ले गया अब क्या करूं।
दूसरा पाता नहीं, किसको कहूं अब क्या करूं ॥१॥
ले चुका था जाने-जाँ[9] जाँ को तो पहिले हाथ से।
फिर भी हमले कर रहा, किसको कहूं अब क्या करूं ॥२॥

---

१. प्रिया शीरीं के प्रीतम फ़रहाद का नाम है, २. पत्थर फेंके, ३. मृत्यु, काल भगवान्, ४. एक पक्षी है जो सरो के वृक्ष पर आशिक है क्योंकि उसी पर वह बैठता है, ५. बन्धन, संगल, ६. गुलाब का फूल, ७. पुष्पकली, ८. खुश्बू दी, ९. जान की जान (जान के प्रति प्यारा) अर्थात प्राणप्रिय।

*यह कविता श्री राम के शिष्य स्वामी गोविन्दानन्द की है।

हम तो दर[1] पर मुन्तजिर थे, तिशन-ए[2] - दीदार के ।
पहुंचते बिसमिल[3] किया किस को कहूं अब क्या करूं ।।३।।
यादगारी के लिए, रहता था फोटो[4] जिस्मो[5] जाँ ।
वह भी ज़ाइल[6] कर दिया, किसको कहूं अब क्या करूं ।।४।।
यार के मुंह पर झरोखे[7] से नज़र इक जा पड़ी ।
देखते घायल हुआ, किसको कहूं अब क्या करूं ।।५।।
आप×को भी क़त्ल कर, फिर आप* ही इक रह गये ।
वाह नज़ाकत आप की, किसको कहूं अब क्या करूं ।।६।।

(१५०)

राग राम कली

सइयो नी ! मैं प्रीतम पिया को मनाउंगी ।
इक पल भी उसे न रुसाऊंगी[8] ।। टेक ।।
नयन हृदय का करूंगी बिछौना ।
प्रेम की कलियाँ बिछाऊंगी ।। सइयो० ।।१।।
तन मन धन की भेंट धरूंगी ।
हौं मैं[9] खूब मिटाऊंगी ।। सइयो० ।।२।।
बिन पिया दुःख बहुत होवत है ।
बहु जूना[10] भरमाऊंगी ।। सइयो० ।।३।।

---

१. द्वारपर, २. दर्शन के प्यासे, ३. (मिलते ही) मार दिया या घायल किया, ४. सूरत तस्वीर, ५. शरीर (देह) अरु प्राण, ६. नष्ट, ७. खिड़की, ८. अप्रसन्न करूँगी, ९. परिच्छिन्न अहंकार, १०. बहुत योनियों में ।

× जीवात्मा *परमात्मा

भेद खेद को दूर छोड़ कर ।
आतम - भाव रिझाऊंगी[1] ॥ सइयो० ॥ ४ ॥
जे[2] कहिया पिया माने न मेरा ।
मैं आप गले लग जाऊंगी ॥ सइयो० ॥ ५ ॥
पिया गले लागी, हुई बड़भागी ।
जन्म मरण छूट जाऊंगी ॥ सइयो० ॥६ ॥
पिया गले लागे, सब दु:ख भागे ।
मैं पिया बिच लय हो जाऊंगी ॥ सइयो० ॥ ७॥
राम पिया मोरे पास बसत हैं ।
मैं आप पिया हो जाऊंगी ॥ सइयो० ॥ ८ ॥

(१५१)

राग परज, ताल रूपक

जिस को शोहरत भी तरसती हो, वह रुस्वाई[3] है और ।
होश भी जिस पर फड़क जायें, वह सौदा और है ॥ १ ॥
बन के पर्वाना तिरा आया हूं मैं, ऐ शम-ए-तूर[4] ।
बात वह फिर छिड़ न जाये, यह तक़ाज़ा[5] और है ॥ २ ॥
देखना ! ज़ोक़ें - तकल्लुम[6] याँ कोई मूसा नहीं ।
जो मिरी आँखों में फिरता है, वह शीशा और है ॥ ३ ॥

---

१. आतम भाव में प्रसन्न या तृप्त होऊँगी, २. अगर, ३. अनादर अपमान, ४. तूर पहाड़ी पर हज़रत मूसा की ईश्वर से बातचीत हुई, उस पहाड़ी का दीपक (ईश्वर), ५. झगड़ा, ६. वाणी अर्थात् बातचीत करने का शौक क्योंकि बातचीत करने में द्वैत भाव है ।

यूं तो ऐ सैयाद[1] आज़ादी में हैं लाखों मज़े ।
दाम[2] के नीचे फड़कने का तमाशा और है ।। ४ ।।
जान देता हूं तड़प कर कूच-ए-उल्फ़त[3] में मैं ।
देख लो तुम भी कोई दम का तमाशा और है ।। ५ ।।
तेरे ख़ञ्जर ने जिगर टुकड़े किया, अच्छा किया ।
कुछ मेरे पहलू[4] में लेकिन चुलबुला[5] सा और है ।। ६ ।।
भेस[6] बदले महफ़िले - अग़यार[7] में बैठे हैं हम ।
वह समझते हैं यह कोई ऊपरा[8] सा और है ।। ७ ।।

(१५२)

राग भैरवी, ताल दादरा

आशिक़ जहाँ में दौलतो-इक़बाल क्या करे ।
मुलको-मकानो[9] तेग़ो-तबर[10] ढाल क्या करे ।।
जिसका लगा हो दिल वह ज़रो-माल[11] क्या करे ।
दीवाने[12] जाहो-हशमतो[13] इजलाल[14] क्या करे ।।
बेहाल हो रहा हो सो वह हाल क्या करे ।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे ।। १ ।। टेक
मरने का डर है उनको जो रखते हैं तन में जाँ ।
और वह जो मर गये तो उन्हें मौत फिर कहाँ ।।

---

१. शिकारी, २. जाल, ३. प्रेम की गली में, प्रेम के मार्ग में, ४. बगल में, अंग में, ५. खटक, ६. वेश बदले, ७. अपने प्यारे से भिन्न पुरुषों की समाज, ८. अन्य अपरिचित, ९. मुल्क और मकान, १०. तलवार और भाला, ११. धन दौलत, १२. ईश्वर का पागल, (खुद मस्त), १३. पद वैभव और मान, मर्तबा, इज्ज़त, शोहरत, १४. बड़ाई ।

मुहताज[1] पत्थरों[2] को तरसते हैं हर ज़माँ[3] ।
और जिनके हाथ काने-जवाहर[4] लगे मियाँ ।।
वह फिर इधर उधर के दुरोलाल[5] क्या करे ।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे ।। २ ।।

पाला है जिन सवारों ने याँ ख़र[6] को आशकार[7] ।
कुत्ते की पीठ पर नहीं चढ़ सकते ज़ीनहार[8] ।।
और जो फलाँग मार के हो चर्ख़[9] पर सवार ।
वह फ़ीलो-अस्पो-जर्दो[10] सियाह लाल क्या करे ।।
दीवाना जाहो-हशमतो-इजलाल क्या करे ।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे ।। ३ ।।

(१५३)

राग देश, ताल तीन

गुम हुआ जो इश्क में, फिर उसको नङ्गो-नाम[11] क्या ।
दैर[12] काबा से ग़रज़ क्या, कुफ़ क्या इस्लाम क्या ।।१।।
शैख़जी जाते हैं मै-खोने[13] से मुंह को फेर कर ।
देखिये मसजिद में जाकर पायेंगे इनआम क्या ।।२।।

---

१. हाजतमन्द, दरिद्री, २. जवाहिरात, मोती, ३. हर समय, ४. जवाहिरात की खान, ५. मोती और लाल, ६. गदहा गर्दभ, ७. जाहिरा, स्पष्ट, ८. कदापि, ९. आकाश, १०. पीला, लाल और काला हाथी व घोड़ा, ११. शर्म, लज्जा, १२. मन्दिर, १३. शराब खाना अर्थात् जहाँ ईश्वर प्रेमी मस्त रहते हैं ।

मौलवी साहिब से पूछे तो कोई है जिस्म क्या ।
रूह क्या है, दम है क्या, आग़ाज़[1] क्या, अंजाम[2] क्या ।।३।।
दम को लय कर सुम-बकुम[3] बेसब्र सा बैठा रहे ।
कूचए-दिलदार[4] में वाइज़[5] से तुझ को काम क्या ।।४।।
यार मेरा मुझ में है, मैं यार में हूं बिलज़रूर ।
वस्ल[6] को यहां दख़ल क्या और हिज्र[7] नाफ़र्जाम[8] क्या ।।५।।
तुम में मैं और मुझ में तू, आँखें मिलाकर देख ले ।
और गर देखे न तू तो मुझ पै है इल्ज़ाम क्या ।।६।।
पुख़्ता-मग़ज़ों[9] के लिये है रहनुमा[10] मेरा सुखन[11] ।
हाफ़ज़ा[12] ! हासिल करेंगे इससे मर्दे-ख़ाम क्या ।।७।।

(१५४)

राग भैरवी, ताल रूपक

जो मस्त है अज़ल[14] के उन को शराब क्या है ।
मक़तूल-खातिरों[15] को बूए-कबाब क्या है ।।१।।

---

१. शुरू, आदि, २. अन्त, ३. चुपचाप, गूंगा, बहरा, ४. यार की गली अर्थात् साक्षात्कार के मार्ग में, ५. उपदेशक, ६. मिलाप, मुलाकात, दर्शन, ७. बिरह, वियोग, ८. अभागे, ९. तीव्र बुद्धि वाले, (बहुत समझ वाले), १०. नेता, मार्ग प्रदर्शक, ११. उपदेश, १२. कवि का नाम, १३. कच्ची समझ वाले, मन्द बुद्धि वाले, १४. अनादि वस्तु में जो मस्त हैं (अपने स्वरूप में जो मस्त हैं), १५. जिनका दिल क़त्ल हो चुका है अर्थात् जिन्होंने अपने मन को प्रभु अर्पण कर दिया है, १६. कबाब (विषयानन्द) की गन्ध ।

क्यों मुह छुपाओ हमसे, तक़सीर[1] क्या हमारी ।
हरदम की हमनशीनी[2], फिर यह हिजाब[3] क्या है ॥२॥
हो पास तुम हमारे, हम ढूंढ़ते हैं किसको ।
मुह से उठा दिखाना, ज़ेरे-नक़ाब[4] क्या है ॥३॥

(१५५)

ग़ज़ल सोहनी

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं, अमृत पिया तो क्या हुआ ।
जिन इश्क़ में सिर ना दिया जुग जुग जिया तो क्या हुआ ॥ टेक०
मशहूर हुआ पंथ में साबित न कीया आपको ।
आलिम व फ़ाज़िल होय के, दाना हुआ तो क्या हुआ ॥१॥ जिन०
औरों नसीहत है करे, और खुद अमल करता नहीं ।
दिल का कुफ़र टूटा नहीं, हाजी[5] हुआ तो क्या हुआ ॥२॥ जिन०
देखी गुलिस्ताँ बोस्ताँ, मतलब न पाया शैख[6] का ।
सारी किताबाँ याद कर, हाफिज़ हुआ तो क्या हुआ ॥३॥ जिन०
जब तक पियाला प्रेम का पीकर मगन होता नहीं ।
तार मंडल बाजते ज़ाहिर सुना तो क्या हुआ ॥४॥ जिन०
जब प्रेम के दरियाव में ग़रक़ाब[7] यह होता नहीं ।
गंगो-जमन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ ॥५॥ जिन०

---

१. अपराध, क़सूर, २. साथ रहना, ३. परदा, ४. घूंघट के नीचे, ५. हज्ज (तीर्थ यात्रा) करने वाला, ६. शैख सादी गुलिस्ताँ बोस्ताँ का लेखक, ७. डूबता ।

प्रीतम से किंचित् प्रेम ना, प्रीतम पुकारत दिन गया ।
मतलूब[1] हासिल ना हुआ, रो रो मुआ तो क्या हुआ ।।६।। जिन०

(१५६)

राग बिरवा

अब मैं अपने राम को रिझाऊं, बैठ[2] भजन गुण गाऊं ।। टेक
डाली छोड़ूं न पत्ता छेड़ूं ना कोई जीव सताऊं ।
पात पात में प्रभु बसत हैं, वाहि को सीस[3] नवाऊं ।।१।। अब०
गङ्गा जाऊं न यमुना जाऊं, ना कोई तीरथ न्हाऊं ।
अड़सठ तीरथ घट के भीतर, तिनहिं में मल मल न्हाऊं ।।१।। अब०
औषध खाऊं न बूटी लाऊं, ना कोई बैद बुलाऊं ।
पूरण वैद्य मिले अविनाशी, वाही को नब्ज़ दिखाऊं ।।३।। अब०
ज्ञान कुठारा कस कर बांधूं, सुरत कमान चढ़ाऊं ।
पाँचों चोर बसैं घट भीतर, तिनको मार गिराऊं ।।४।। अब०
योगी होऊं न जटा बढ़ाऊं, ना अंग बिभूति रमाऊं ।
जो रंग रंगे आप बिधाता, और क्या रंग चढ़ाऊं ।।५।। अब०
चंद सूरज दोऊ सम कर[4] राखो, निज मन सेज बिछाऊं ।
कहत **कबीर** सुनो भाई साधो, आवागमन[5] मिटाऊं ।।६।। अब०

---

१. इच्छित वस्तु, २. बैठ कर, ३. सिर, मस्तक, ४. इंगला और पिंगला नाड़ियों को बराबर रक्खे अर्थात् सुषमणा नाड़ी चलावे । जिस समय दोनों नथुनों से स्वांस आती जाती है उस समय सुषमणा नाड़ी चलती है, ५. आना जाना, मरना जीना ।

(१५७)

राग सिंघाड़ा, ढाई ताल

इश्क़[1] होवे तो हक़ीक़ी इश्क़ होना चाहिए ।
इस सिवा जितने हैं आशिक़ उनपे रोना चाहिए ।।१।।
ऐशो-इशरत[2] में गुज़ारा रोज़ सारा गर्चि तुम ।
रात को हक़[3] याद करके तब तो सोना चाहिए ।।२।।
बीज बोकर फल उठाया खूब तुमने है यहाँ ।
आक़बत[4] के वास्ते भी कुछ तो बोना चाहिए ।।३।।
यां तो सोये शौक़ से तुम बिस्तरे-कमख़्वाब पर ।
सफ़र भारी सिर पै है, वां भी बिछौना चाहिए ।।४।।
है ग़नीमत[5] उम्र यारो ! जान को जानो अज़ीज़ ।
रायगां[6] और मुफ्त में इसको न खोना चाहिए ।।५।।
गर्चि दिल्बर साथ है बिन जुस्तजू[7] मिलता नहीं ।
दूध से माखन जो चाहो, तो बिलोना चाहिए ।।६।।
यादे-हक़[8] दिन रात रख, जंजाल दुनियाँ छोड़ दे ।
कुछ न कुछ तो लुत्फ़े[9]-ख़ालिस तुझ में होना चाहिए ।।७।।

(१५८)

ग़ज़ल सोहनी

प्रीत न की स्वरूप से तो क्या किया, कुछ भी नहीं । (टेक)
जान दिलवर को न दी, फिर क्या दिया, कुछ भी नहीं ।।१।। प्री०

---

१. प्रेम, भक्ति, २. विषय भोग, विषयानन्द, ३. प्रभु, ४. परलोक, ५. धन्य, ६. व्यर्थ, बेफ़ायदा, ७. पुरुषार्थ, प्रयत्न ढूंढ़ना, ८. ईश्वर स्मरण, ९. शुद्ध आनन्द या निजानन्द ।

मुल्कगीरी[1] में सिकन्दर से हज़ारों मर मिटे ।
अपने पर कब्ज़ा न कीया, क्या किया, कुछ भी नहीं ।।२।। प्री०
देवताओं ने पिया गर सोम रस तो क्या हुआ ।
प्रेमरस गर ना पिया, तो क्या पिया, कुछ भी नहीं ।।३।। प्री०
हिज्र[2] में दिलवर के हम जो उम्र पाई खिज्र[3] की ।
यार अपना ना मिला, तो क्या किया, कुछ भी नहीं ।।४।। प्री०

(१५६)

माज, ताल चंचल

आऊंगा न जाऊंगा, मरूंगा न जीऊंगा ।
हरी के भजन प्याला प्रेम-रस पीऊंगा ।। (टेक)
कोई जावे मक्के, कोई जावे काशी,
देखो रे लोगों ! दोहों गल फाँसी ।।१।। आऊंगा०
कोई फेरे माला, कोई फेरे तस्बीह[4] !
देखो रे साधो ! यह दोनों हैं कसबी[5] ।।२।। आऊंगा
कोई पूजे मढ़ियां, कोई पूजे गोरां[6] ।।
देखो रे सन्तो ! मैं लुट गई जे चोरां ।।३।। आऊंगा०
कहत **कबीर**[7] सुनो मोरी लोई[8] ।
हम नहीं मरना, रोवे न कोई ।।४।। आऊंगा०

---

१. देश देशान्तरों का विजय करना, २. बिरह, जुदाई, ३. खिज्र की आयु लोमस ऋषि की नाई अनन्त कही जाती है, ४. मुसलमान माला को तस्बीह कहते हैं, ५. पेशावर, व्यापारी, ६. क़ब्र, ७. कवि का नाम है ८. कबीर की स्त्री का नाम है ।

(१६०)

राग चलासा

करसां मैं सोई श्रंगारनी जिस बिच पिया मेरे वश आवे । (टेक)
जिस भूषण बिच होय न दूषन, सोई मेरे दरकार नी । जि० ॥१॥
गजरयां बंगा तों हुन संग्गा, कच्चा कच उतार नी । जि० ॥२॥
नामदा नामां, प्रेम दी धागा, पावां गल्ल विच हारनी । जि० ॥३॥
पावांगी लच्छे, मैं निर्लज्जे, झांजर पियादा प्यार नी । जि० ॥४॥

पंक्तिवार अर्थ

टेक—अब मैं ऐसा शृंगार (अपने अन्दर को साफ) करूँगी कि जिससे मेरा पति (ईश्वर) वश में आ जावे ।

(१) जिस भूषण (अन्दरूनी सजावट) से कोई दोष न हो, मुझे होनी चाहिए : ताकि मेरा ईश्वर (पति) मेरे वश में आवे ।

(२) दुनियावी काँच की चूड़ी जो स्त्रियाँ पहनती हैं उनको पहनने में मुझे लज्जा आती है । इसलिए मैं इस कच्चे कांच को उतार कर (ऐसा कोई और सुदृड़ भूषण पहनती हूँ) जिससे मेरा पति (ईश्वर) मेरे वश में हो जावे ।

(३) ईश्वर नाम का तो नामा जेवर मैं पहनूंगी, और उस भूषण में प्रेम रूपी धागा डालूंगी । ऐसा सुन्दर हार बनाकर मैं अपने गले में डालूंगी जिससे मेरा प्यारा (ईश्वर) मेरे वश में आ जावे ।

(४) पावों में ऐसा लच्छे-रूप जेवर जो मेरी शर्म उतार दे, मैं पहनूंगी कि जिसमें पिया (प्यारे) के प्यार रूपी झाँझरे (घूंघट) हों, ताकि मेरा पति (ईश्वर) मेरे वश में हो जावे ।

(१६१)

राग पीलू, ताल दीपचंदी

जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है (टेक)
ग़लत है कि दीदार[1] की आर्ज़ू[2] है ।
ग़लत है कि मुझको तिरी जुस्तजू[3] है ।।
त्यरा जलवा[4] ऐ जल्वागर[5] ! कुबकू[6] है ।
हुज़ूरी है हर वक़्त तू रूबरू है ।। १ ।। जि०
हर इक गुल में बू हो के तू ही बसा है ।
सदाहाये[7] - बुलबुल में तेरी नवा[8] है ।।
चमन फ़ैज़े - क़ुदरत[9] से तेरे हरा है ।
बहारे गुलिस्तां[10] में जल्वा तिरा है ।। २ ।। जि०
नबातात[11] में तू नमू[12] है शजर[13] की ।
जमादात[14] में आबरू[15] बहरो - बर[16] की ।।
तू हैवां[17] में ताक़त है सैरो - सफ़र[18] की ।
तू इन्सां में क़ुव्वत है नुतक़ों[19] नज़र की ।। ३ ।। जि०

---

१. दर्शन, २. इच्छा, ३. जिज्ञासा, खोज, ४. प्रकाश, तेज, ५. प्रकाशमान ६. सर्व दिशा में, हर गली में, ७. आवाजों में, ८. गीत, सुर, ९. प्रकृति या माया की कृपा से, १०. बाग की बहार या बाटिका की शोभा में, ११. वनस्पति, १२. वृद्धि, पालन पोषण, १३. वृक्ष, झाड़ी, १४. पाषाण, पत्थर, धातु, १५. चमक, दमक, १६. पृथ्वी और समुद्र की, १७. पशुओं, १८. चलने फिरने, १९. बुद्धि और ज्ञान-चक्षु ।

घटा तू ही उठता है घनघोर होकर ।
छुपा तू ही है बैह्र में शोर होकर ।
निहाँ[1] तू ही तूफाँ में है ज़ोर होकर ।
अयां[2] तू ही मौजों[3] में झकझोर होकर ।। ४ ।। जि०

तिरी है सदा[4] राद[5] में गर कड़क है ।
तिरी है ज़िया[6] बर्क़[7] में गर चमक है ।।
यह क़ौसे-क़जह[8] ही में तेरी झलक है ।
जवाहिर के रङ्गों में तेरी डलक[9] है ।। ५ ।। जि०

जमीं आस्मां तुझ से मामूर[10] हैं सब ।
ज़मानो-मकां[11] तुझ से भरपूर हैं सब ।।
तजल्ली[12] से कौनो-मकां[13] नूर हैं सब ।
निगाहों में मेरी जहाँ तूर[14] हैं सब ।। ६ ।। जि०

हसीनों[15] में तू हुसनो नाज़ो-अदा[16] है ।
तू उश्शाक़[17] में इश्क़ो-सिद्क़ो-सफ़ा[18] है ।।
मजाज़ो-हक़ीक़त[19] में जलवा तिरा है ।
जहाँ जाईये एक तू रूनुमा[20] है ।। ७ ।। जि०

---

१. छुपा हुआ, २. ज़ाहिर, व्यक्त, ३. लहरों, तरंगों, ४. आवाज, ५. बिजली, ६. रौशनी, ७. बिजली, ८. इंद्र धनुष, ९. तेज, चमक, १०. भरपूर, ११. देश, काल, १२. प्रकाश, तेज, १३. सब स्थान, १४. अग्नि के पर्वत से अभिप्राय है, जहाँ हज़रत मूसा को आकाशवाणी हुई थी, १५. सुन्दर, १६. सौन्दर्यता और नखरा, हाव भाव, १७. भक्त जन, १८. भक्ति व विश्वास, निश्चय और अन्तःकरण की शुद्धि, १९. लौकिक और पारमार्थिक प्रेम, २०. सामने हाज़िर ।

मकां तेरा हर एक ऐ लामकां[1] है ।
निशां हर जगह तेरा ऐ बे निशां है ।।
न ख़ाली ज़मीं है न ख़ाली ज़मां[2] है ।
कहीं तू निहाँ[3] है कहीं तू अयां[4] है ।। ८ ।। जि०
तिरा लामकां नाम ज़ेबा[5] नहीं है ।
मकां कौन-सा है तू जिस जा[6] नहीं है ।।
कहीं मासिवा[7] मैंने देखा नहीं है ।
मुझे ग़ैर[8] का वह्म होता नहीं है ।। ९ ।। जि०
ज़मीनों-ज़मां नूर से हैं मुनव्वर[9] ।
मकीनो-मकां ज़ात के तेरे मज़हर[10] ।।
जहाँ में दिले-रास्ताँ[11] है तिरा घर ।
इधर और उधर से मैं इस घर में आकर ।। १० ।। जि०

(१६२)

राग गारा, ताल दादरा

हर आन में हर बान में हर ढंग में पहचान ।
आशिक़ है तो दिल्वर को हर इक रंग में पहचान ।। (टेक)
तनहा न उसे अपने दिले-तङ्ग में पहचान ।
हर बाग़ में हर दश्त[12] में हर सङ्ग में पहचान ।।

---

१. देश रहित, २. काल, ३. छिपा हुआ, अव्यक्त, ४. प्रकट, व्यक्त, ५. युक्त उचित, ६. जगह, स्थान, ७. मा सिवाय हक अर्थात् प्रभु के अतिरिक्त ८. अन्य, ९. प्रकाशमान, १०. तेरे स्वरूप के जाहिर या प्रकट होने के स्थान, ११. सच्चे पुरुष का दिल या हृदय, १२. जंगल, वन।

बेरंग में, बारंग में, नैरंग[1] में पहचान।
हर ताल में हर राग हर आहंग[2] में पहचान ॥
नित रूम में और हिन्द में और जंग में पहचान।
आशिक़ है तो दिल्वर को हर एक रंग में पहचान ॥१॥ (टेक)

मंज़िल[3] में, मुक़ामात[4] में, फरसंग[5] में पहचान।
हर राह में हर साथ में हर संग में पहचान ॥
हर अज़्मो[6] इरादे में, हर उमंग में पहचान।
हर धूम में, हर सुलह में, हर जंग में पहचान ॥
हर आन में, हर बात में, हर ढंग में पहचान।
आशिक़ है तो दिल्वर को हर इक रंग में पहचान ॥२॥ (टेक)

हंसता है कोई शाद[7] किसी का है बुरा हाल।
रोता है कोई होके ग़मो-दर्द में पामाल ॥
नाचे है कोई शोख़[8], बजाता है कोई ताल।
पहने है कोई चीथड़े ओढ़े है कोई शाल[9] ॥
करता है कोई नाज़[10] दिखाता है कोई माल।
जब ग़ौर से देखा तो उसी की है यह सब चाल ॥३॥ (टेक)

---

१. नाना रंग में, २. ध्वनि, ३ पड़ावो, ४. स्थानों में, ५. मील का पत्थर, पाषान, ६. संकल्प, ७. प्रसन्न, ८. आकर्षक मूर्ति, ९. दुशाला, १०. नाज़ो नखरे।

(१६३)

राग बिहाग

टुक बूझ कौन छिप आया है ।। टेक ।।
इक नुक़ते में जो फेर पड़ा, तब ऐन ग़ैन का नाम धरा ।
जब नुक़ता दूर किया तब फिर, ऐन ही ऐन कहाया है ।।१।। टुक०
तुसीं इसम कताबां पढ़दे हो, क्यों उल्टे माने करदे हो ।
बे मूजब[1] ऐबें लड़दे हो, केहा उलटा वेद पढ़ाया है ।।२।। टुक०
दुई दूर करो कोई शोर नहीं, हिंदू तुरक कोई होर[2] नहीं ।
सब साध लखो कोई चोर नहीं, घटघट में आप समाया है ।।३।। टुक०

पंक्तिवार अर्थ

ऐ प्यारे ! जरा सोच कि अन्दर अपने कौन छिपा हुआ बैठा है ।

(१) एक बिन्दु से ऐन हरफ गैन हो जाता है और जब बिन्दु हटा दे तो वही ऐन का ऐन ही रहता है । इससे तात्पर्य कवि का यह है कि ऐ प्यारे ! तु तो ईश्वर साफ शुद्ध अपने आप है, सिर्फ जब अज्ञान या मोह का बिन्दु (पर्दा) तू अपने पर लगा (डाल) लेता है, तो ईश्वर से बन्दा (जीव) बन जाता है ।

(२) ऐ प्यारे ! तुम पुस्तक पोथे बहुत पढ़ते हो और मुफ्त आपस में झगड़ते हो (क्योंकि जितना हम बहिर्मुख झगड़े लड़ाई अथवा अध्ययन में लगे हैं उतना ही हम अपने अपने असली स्वरूप से बेमुख बैठे हुए हैं) इस वास्ते ऐसे उल्टे काम तू क्यों कर रहा है और ऐसी उल्टी पढ़ाई क्यों पढ़ रहा है :

---

१. विना कारण, २. अन्य दूसरा ।

ना मैं मुल्ला ना मैं काज़ी, ना मैं शेख, सय्यद ना हाजी[1] ।
बुल्हया शौह नाल लाई बाज़ी, अनहद[२] शब्द कहाया है ॥४॥ टुक०

(१६४)

काफी

कहो परदा किस तों राखीदा ।
क्यों ओहले[३] बहै बहै झाकीदा ॥ टेक ॥
यहां आपे साजन साजी दा ।
हुन दसदा[४] हैं सबक़ नमाज़ी दा ॥
हुन आया आप नज़ारे नूं ।
बिच लैला बन बन झाकीदा ॥१॥ कहो०
शाह शमस[५] दी खल्ल लहायो ।
मंसूर नूं चा सूली दवायो ॥

---

(३) यह द्वैत तू दूर कर, तुझसे भिन्न कोई हिन्दु तुर्क कोई अन्य नहीं है, मुफ्त में शोर मत कर क्योंकि यह सब तू ही आप है, और सबको साधु (उत्तम) देख कोई चोर नहीं है, क्योंकि तू ही उन सबके घट में (दिल के अन्दर) बस रहा है ।

(४) बुल्लाह कवि कहता है कि मैं अकेला मुल्ला हूँ न काज़ी हूँ, और न सय्यद (मुसलमानों का पीर) और न हाजी हूँ, बल्कि मैंने अपने यार (आत्म-स्वरूप) के साथ बाजी (शर्त) लगाई हुई है (कि मैं वो हूँ सोंह) ऐसे अनहद शब्द भी कह रहा है ।

१. यात्री (हज्ज करने वाला), २. भीतर की आवाज (सोहम्), ३. ओट में, ४. बताता है, ५. नाम मस्तों के हैं ।

ज़करिये[1] सर कलवत्तर[2] धरायो ।
की लेखा रहया बाक़ी दा ।।२।। कहो०
हुन साडे[3] वल्ल धाया है ।
न रहन्दा छुपा छुपाया है ।।
किते बुल्लाह नाम धराया है ।
बिच ओहला रखया खाकी[4] दा ।।३।। कहो०

(१६५)

राग खमाच, ताल दादरा

एक ही साग़र[5] में कुछ ऐसा पिला दे साक़िया[6] ।
बे खबर दुनिया व दीं से तेरा मतवाला तो हो ।।१।।
हाथ खाली मर्दुमे[7]-दीदे बुतां से क्या मिलें ।
मोतियों की पञ्जए-मिज़गां[8] में इक माला तो हो ।।२।।

पंक्तिवार अर्थ

(१) ऐ सद्गुरु ! एक ही प्याले में अर्थात् एक ही वाक्य में मुझे आप ऐसा प्रेमरस वा ज्ञानरस पिला दें कि जिसके पी जाने से दीन दुनिया से बेख़बर हो जाऊँ और केवल आपका मतवाला हो जाऊँ ।

(२) भगवान की मूर्तियों से आँख की पुतली खाली हाथ कैसे मिले अर्थात् भगवान की मूर्तियों के खाली हाथ कैसे दर्शन करें । पहले नेत्रों की पलकों के पंजे में अश्रु रूपी मोतियों की एक सुन्दर माला तो पास हो अर्थात् पहिले नेत्रों में प्रेम वा भक्ति के अश्रु रूपी मोती तो टपकते हों ।

---

१. एक मस्त महात्मा का नाम है, २. आरा से सिर कटवायो ३. हमारी ओर, ४. भौतिक देह, ५. प्याला, ६. प्रेम रूपी मदिरा पिलाने वाला सद्गुरु, ७. आँख की पुतजी, ८. नेत्रों के पलकों के हाथ में ।

नाखुने. ख़ार आके खुद उक़दा[1] तिरा कर देगा वा[2] ।
पहिले पाए[3] - शौक़ में पैदा कोई छाला तो हो ।।३।।

(१६६)

राग देश, ताल तीन

देखा न शब[4] जो यार को नूरे-ज़िया[5] से कार[6] क्या ।
मुरदे की क़बरे-तार[7] को आबो[8] गियाह से कार क्या ।।१।।
अच्छी है आहे-सर्द ही, खूब है रंगे-ज़र्द ही ।
ठीक है दिल में दर्द ही, हमको दवा से कार क्या ।।२।।

---

(३) नाखून रूपी काँटा (गुरु) स्वयं आकर तेरे हृदय की ग्रन्थी खोल देगा । परन्तु पहिले तेरे जिज्ञासा रूपी पांव में कोई छाला (तीव्र इच्छा) तो हो जिसके दूर करने के लिए कांटे की जरूरत पड़ती है ।

पंक्तिवार अर्थ

(१) रात को जब अपना प्यारा नहीं देखा तो प्रकाश की ज्योति से क्या मतलब? अर्थात् जब इस अज्ञान रूपी माया के परदे में अपना स्वरूप अनुभव नहीं कर सके, तो यह भौतिक प्रकाश किस काम का ? और इसी प्रकार मरे हुए प्राणी की अंधेरी कब्र (समाधि) पर जल और घास किस काम के ?

(२) उस (निज स्वरूप) के देखने के लिए जो चित्त से सर्द आहें उठ रहीं हैं वे उत्तम हैं, जो रंग पीला पड़ रहा है वह अच्छा है, और दिल में जो पीड़ा उठ रही है वह सब ठीक है । ऐसी दशा में औषधि से क्या प्रयोजन ?

---

१. हृदय-ग्रंथि रहस्य, २. खोल देगा, ३. जिज्ञासा रूपी पाँव में, ४. रात, ५. प्रकाश की ज्योति, ६. किस काम का, ७. अंधेरी कब्र, ८. जल और घास ।

चाहे कोई भला कहे, ख्वाह पड़ा बुरा कहे ।
पल्ला छुटा तो जिस्म से, बीमो - रजा[१] से कार क्या ।।३।।

अह्मके[२] - कोर ही को है, उलफ़ते - मासिवाय[३] - हक़ ।
काबा-ए-दिल[४] में यह ज़िना[५] ? बूए-वफ़ा से कार क्या ।।४।।

नेकी बदी खुशी ग़मी ज़ीना[६] थीं बामे-यार[७] का ।
ज़ीना जला दो अब यहाँ पायीं-बिया[८] से कार क्या ।।५।।

---

(३) चाहे कोई अच्छा कहे और चाहे कोई बुरा कहे । इस शरीर से हमारा सम्बन्ध व पल्ला छूट गया तो अब भय और आशा से क्या मतलब ?

(४) आत्म-ज्ञान से विमुख वा भीतरी नेत्र-विहीन (ऐसे अन्धे) को ही अपने प्यारे से इतर अर्थात् अनात्म पदार्थों से प्रीति होती है, हाय ! हृदय रूपी मन्दिर में यह व्यभिचार, ऐसे व्यभिचारी को वफ़ा की गन्ध (प्रतिज्ञा पूर्ति) से क्या मतलब ?

(५) पुण्य-पाप, सुख-दुःख, (ये सब अपने प्यारे स्वरूप) की छत पर चढ़ने की सीढ़ी थे । अब इस सीढ़ी को जला दो, क्योंकि जब आत्म- साक्षात्कार हो गया तो उस अवस्था से नीचे उतारने वाली सीढ़ी से अब क्या मतलब ?

---

१. भय और आशा, २. अन्धे अर्थात् अज्ञानी को, ३. अनात्म पदार्थ से प्रीति, ४. हृदय रूपी भगवान के मन्दिर, ५. व्यभिचार, ६. सीढ़ी, ७. अपने प्यारे की छत पर चढ़ने की, ८. नीचे आने से ।

इतना लिहाज़ कर लिया, दुनिया तिरा परे भी हट ।
नाचूं हूं साथ राम के शर्मो-हया से कार क्या ॥६॥

(१६७)

करनी का ढंग निराला है, करनी का ढंग निराला है ॥टेक॥
कोई दिगम्बर, कोई पितम्बर, कोई पहने शाल दुशाला है ॥
कोई अवधूत, कोई सन्यासी, कोई गड़रिया ग्वाला है ।
कोई अन्धा कोई लूला लंगड़ा, कोई गोरा कोई काला है ॥
कोई भूखा प्यासा व्याकुल है, कोई मद पी पी मतवाला है ।
कोई मदकी भंगी चरसी है, कोई पीवे प्रेम-प्याला है ॥
फिरे न मन का मनका जब तक, क्या तसबीह क्या माला है ।
निस दिन भजे जो हरि को **अमीचन्द**, सोई करनी वाला है ॥

(१६८)

प्रभु ! तुम कैसे दीन दयाल (टेक)
मीन रहे पानी के भीतर, पशू फिरें धरती के ऊपर ।
पक्षी उड़ें हवा के अन्दर, सब के तुम रखवाल ॥१॥
अजगर नहीं किसी के चाकर, पंछी काम करें नहीं मिलकर ।
मनुष्य जाति है तुम पर निर्भर, सब के तुम प्रतिपाल ॥२॥

---

(६) ऐ दुनिया ! तेरा इतना लिहाज (सम्मान) तो कर लिया, अब हम से परे हट । अब तो हम अपने प्यारे (राम) के साथ नाच रहे हैं । लोक लज्जा से क्या मतलब ?

चार पदारथ के तुम दायक, प्रतिपालक सब विधा[1] सहायक ।
हे स्वामी, नायकन के नायक ! तुम सम कौन कृपाल ।।३।।
दया दृष्टि करुणा-निधि कीजे, माया मोह कपट हर लीजे ।
भक्ति दान मेहर को दीजे, होय अत्यन्त निहाल ।।४।।

(१६९)

राग मारू (महल्ला ९)

हरि को नाम सदा सुख दाई । (टेक)
जा को सिमर अजामल उधरयो[2], गणिका[3] हूं गति पाई ।।१।।
पंचाली[4] को राज सभा में राम नाम सुधि आई ।
ताको दुःख हरयो करुणामय, अपनी पैज[5] बढ़ाई ।।२।।
जे नर सुयश-कृपानिधि गायो, ताको भयो सहाई ।
कहो **नानक** मैं यही भरोसे, गही[6] आन[7] शरणाई ।।३।।

(१७०)

राग कानड़ा (महल्ला ५)

बिसर गई तब तात[8] पराई[9], जब ते साध संगत मैं पाई ।।१।।
ना कोई बैरी, नहीं बेगाना, सकल संग हमको बन आई ।।२।।
जो प्रभु कीनो, सो भल[10] मान्यो, याही सुमति साधु ते पाई ।।३।।
सबमें रम रह्या प्रभु एके, पेख पेख **नानक** बिगसाई[11] ।।४।।

---

१. विविध प्रकार, २. कल्याण को प्राप्त हुआ, तरा, ३. एक वेश्या का नाम है जो तोता पढ़ाते तर गई थी, ४. द्रोपदी, ५. कीर्ति, महिमा, ६. पकड़ी, ग्रहण की, ७. आनकर उसकी शरण ली, ८. हे प्यारे, ९. परायेपन भिन्नता या द्वैत का भाव, १०. भला, अच्छा, ११. आनन्द हुआ ।

(१७१)

राग सारंग (महल्ला ५)

ठाकुर तुम सरणाई आया। (टेक)
उतर गया मेरे मन का संशय, जब से दर्शन पाया ॥१॥
अन बोलत मेरी व्याधा[1] जानी, अपना नाम जपाया।
दुःख नाठे[2] सुख सहज समाये, अनन्द अनन्द गुण गाया॥२॥
बाँह पकड़ कढ़ लीनो अपने, गृह-अन्ध कूप से माया।
कहो नानक गुरु बन्धन काटे, बिछरत आन मिलाया ॥३॥

(१७२)

राग बसन्त (महल्ला ६)

माई! मैं धन पायो हरिनाम। (टेक)
मन मेरो धावन[3] से छूटियो, कर बैठो बिश्राम ॥१॥
माया ममता तन से भागी, उपज्यो निर्मल ज्ञान।
लोभ-मोह यह परस[4] न साके, गही[5] भक्ति भगवान ॥२॥
जन्म जन्म का संशय चूका, रतन नाम जब पाया।
तृष्णा सकल[6] बिनासी मन से निज सुख माँहि समाया ॥३॥
जाको होत दयाल कृपानिधि, सो गोविन्द गुण गावे।
कहो नानक यह बिधि[7] की संपे[8], कोऊ गुरुमुख पावे ॥४॥

---

१. दुःखमय बुरी दशा, २. भागे, ३. दौड़ने, भटकने, ४. स्पर्श न कर सके, ५. ग्रहण की, ६. सारी, ७. इस प्रकार की, ८. सम्पत्ति।

(१७३)

राग बिलावल (महल्ला ५)

प्रभु जी तू मेरे प्राण अधारे[1]। (टेक)
नमस्कार डन्डौत बन्दना, अनिक[2] बार जाऊं वारे ।।१।।
ऊठत बैठत सोवत जागत, यह मन तुझे चितारै[3] ।
सुख दुख इस मन की व्याधा[4] तुझ ही आगे सारे[5] ।।२।।
तूं मेरी ओट[6] बल बुध धनही तुम्ही, तुम ही मेरे पर्वारे ।
जोई तुम करो सोई भल[7] हमरे, नानक सुखी पेखि[8] चरणारे ।।३।।

(१७४)

राग सूही (महल्ला ५)

कोई आन मिलावे जी, मेरा प्रीतम प्यारा । (टेक)
हौं[10] तिस पै आप विचाई[11] ।
दर्शन हरि-देखन के ताईं ।।१।। (टेक)
कृपा करे ताँ सतगुरु मेले ।
हरी नाम को ध्याई ।।२।। (टेक)
जे सुख दे ताँ तुझे अराधी[12] ।
दुःख भी तुझे ध्याई ।।३।। (टेक)
जो भुख दे ताँ इत[13] ही राज़ी ।
दुःख बिच सुख्ख मनाईं ।।४।। (टेक)

---

१. प्राण का आधार, २. अनेक बार, ३. चिन्तन करता रहे, ४. दुःख की कहानी, गाथा दशा, ५. खोले सुनावे, ६. आश्रय, ७. भला, कल्याण, ८. देख, ९. तुम्हारे चरणों में, १०. मैं, ११. अर्पण करूँ, १२. ध्यान करें, याद करें, १३. इसमें भी ।

तन मन काट काट सब अर्पों ।
बिच अग्नि आप जलाई ।।५।। (टेक)
पंखा फेरीं, पानी ढोवाँ[1] ।
जो देव सो खाइ ।।६।। (टेक)
नानक ग़रीब ढह पया[2] द्वारे ।
हरि मेल लेहो, बड़ियाई[3] ।।७।। (टेक)

(१७५)

राग रामकली (महल्ला ६)

साधो ! कौन जुगत[4] अब कीजे । (टेक)
जाते[5] दुर्मति सकल बिनासे, राम भक्ति मन भीजे[6] ।।१।।
मन माया में उरझ रह्यो है, बूझे न कछु ज्ञाना ।
कौन नाम जग[7] जाके[8] सिमरे, पावे पद निरवाना ।।१।।
भये दयाल कृपाल सन्त जन, तब यह बात बताई ।
सर्व धर्म मानो तैंहि कीये, जहिं प्रभु कीर्ति गाई ।।३।।
राम नाम नर निशि वासुर[9] में, निमष[10] एक उरधारे[11] ।
जम को त्रास[12] मिटे **नानक** तैंहि[13], अपनो जन्म संवारे ।।४।।

---

१. पानी भरूँ, २. गिर पड़ा, ३. महानता, ४. युक्ति, उपाय, ५. जिससे ६. मन भीग जाय अर्थात् भक्ति हो जावे, ७. जगत, ८. जिसके, ९. दिन-रात १०. पलक मात्र, ११ हृदय में धारण करे, १२. भय, १३. उसका ।

(१७६)

राग सोरठ (महल्ला ६)

प्राणी ! कौन उपाय करे (टेक)
जाते[1] भक्ति राम की पावे, जम को त्रास[2] हरे ।।१।।
कौन कर्म विद्या कहो कैसी, धर्म कौन पुनि करे ।
कौन नाम गुरु जाके सिमरे, भव सागर को तरे ।।२।।
कलु[3] में एक नाम कृपानिधि, जाहि जपे गति पावे ।
और धर्म ताके सम नाहिं, यह विधि वेद बतावे ।।३।।
सुख दुःख रहित सदा निर्लेपी, जाको कहत गुसाईं ।
सो तुम ही में बसत निरन्तर, नानक दर्पण न्याईं ।।४।।

(१७७)

हरि की गति नहीं कोई जाने । (टेक)
योगी, यती, तपी, पचहारे[4], अरु बहु लोग स्याने ।।१।।
अपनी माया आप पसारे, आपे देखन हारा ।
नाना रूप धरे बहु रंगी, सब से रहता न्यारा ।।२।। हरि०
अमित, अपार, अलख, निरंजन, जिन सब जगत भ्रमाया ।
सकल भरम त्यज नानक, मैं तो चरण ताहिं चित लाया ।। ३।।

(१७८)

ऊधो ! हो मूरत हम देखी । (टेक)
शिव सनकादि सकल मुनि दुर्लभ, ब्रह्मा[5] इन्द्र नहिं पेखी ।।१।।

---

१. जिससे, २. भय, ३. कलयुग, ४. थकहारे, ५. ब्रह्मा इन्द्र आदि ।

खोजत फिरत युगो युग योगी, योग युक्ति से न्यारी ।
सिद्ध समाधि सकत नहिं दर्शी, मोहनी मूरति प्यारी ।।२।।

आगम निगम विमल यश गावें, रहत सदा दर्बारी ।
तिलभर पारावार[1] नहिं पावें, कह कह नेति[2] पुकारी ।।३।।

नाथ, यती, और योगी, जंगम, ढूंढ़ रहे बन माहिं ।
वेष धरे धरती भ्रम हारे, तिनहों[3] दर्शी नाहीं ।।४।।

सो हम घर घर नाच नचाई, तनिक तनिक दधि[4] देके ।
रामदास हम रती श्यामरंग, जाहो योग घर ले के ।।५।।

(१७६)

ऊधो ! कर्मन की गति न्यारी । (टेक)
सब[5] नदियाँ जल भर भर वहियाँ, सागर किस बिधि खारी ।।१।।

उज्जवल पंख दिये बगले को, कोयल कित[6] गुण कारी[7] ।
सुन्दर नयन मृगा को दीने, वन वन फिरत उजारी[8] ।।२।।

मूर्ख मूर्ख राजे कर दीने, पंडित फिरें भिखारी ।
सूर[9] ! प्रभु मिलवे की आशा, छिन छिन बीतत भारी ।।३।।

---

१. पता, अन्त, २. यह नहीं, यह नहीं इस प्रकार का वाक्य जो उपनिषदों में आया है, उससे यहाँ अभिप्राय है, ३. उन्हें भी दर्शन नहीं हुए, ४. दही, ५. मीठे जल की सब नदियाँ तो समुद्र में गिर रही हैं पर समुद्र कैसा खारा है, ६. किस कारण, ७. काली है, ८. उजाड़ बनों में वह फिरता है, ९. कवि सूरदास से अभिप्राय है ।

(१८०)

सब दिन होत न एक समान । (टेक)
इक दिन राजा हरिश्चन्द्र की सम्पति मेरु[1] समान ।
इक दिन जाय श्वपचगृह[2] सेवत, अम्बर[3] हरत मशान[4] ।।१।।
इक दिन राजा राज युधिष्ठर, अनुचर श्रीभगवान[5] ।
इक दिन द्रौपदी नग्न होत है, चीर दुःशासन तान ।।२।।
इक दिन सीता रुदन करत है, महा विपति[6] उद्यान ।
इक दिन राम चन्द्र मिल दोऊ, बिचरत पुष्प विमान ।।३।।
प्रकटत है पूरब की करनी, त्यज मन शोक अजान ।
सूरदास गुण कहाँ लग वर्णौं, विधि[7] के अंक[8] प्रमाण ।।४।।

(१८१)

प्रभु ! तुमरी गति कहत न आवे । (टेक)
ज्यों गूंगा मीठे फल का रस, अन्तर्गत ही खावे ।।१।।
परम स्वाद सबही जो निरन्तर, अमित[9] तोष[10] उपजावे ।
मन वाणी को अगम अगोचर सो जाने जो पावे ।।२।।
रूप रेख गुण जाति जुगति बिन, निरालम्ब[11] मन ध्यावे ।
सब बिधि अगम विचार ही ताते, सूरदास क्या गावे ।।३।।

---

१. मेरु पर्वत, २. भंगी के घर सेवक, ३. वस्त्र उतारता है, ४. स्मशान मरघट में, ५. एक दिन राजा युधिष्ठिर के अनुचर श्री कृष्ण भगवान थे, ६. बड़े भय और विपत्तिपूर्ण बन में, ७. विधाता का लेख माननीय है, ८. अगाध अनन्त, ९. तुष्टि, १०. सन्तोष, ११. बिना आश्रय के ।

(१८२)

प्रभु जी ! मन मायावश कीनो । (टेक)
लाभ हानि कछु समझत नाहीं, ज्यों पतंग तन दीनो ॥१॥ (टेक)
गृह दीपक, मन तेल, तूल[1] तिया[2] सुत[3] ज्वाला अतिजोर ।
मैं मतिहीन मरम नहीं जानूं, पड़ी[4] अधिक गिरि दौड़ ॥२॥ (टेक)
बहुतक[5] दिवस भये या जग में, भ्रमत फिरे मतिहीन ।
सूरश्याम सुन्दर जो सुमिरे, क्यों होवे गतिदीन ॥३॥ (टेक)

(१८३)

अब मोरी राखो लाज हरी ! (टेक)
तुम जानत सब अन्तर्यामी करनी कछु न करी ॥१॥
अवगुण मो[6] सों बिसरत नाहीं, पल छिन घड़ी घड़ी ।
जग प्रपञ्च की पोट बाँधकर, अपने सीस धरी ॥२॥
दारा धन सुत मोह समुन्दर, सुध बुध सब बिसरी ।
सूर पतित को बेग उबारो[7], नैया जात भरी ॥३॥

(१८४)

सोई अब कीजिये दीन दयाल ।
जाते मैं क्षण चरण न छोड़ूं, करुणसागर भक्ति रसाल ॥१॥
इन्द्रिय अजित[8] बुद्धि विषयारत[9], मन की दिन दिन उलटी चाल ।
काम, क्रोध, मद, लोभ, महाभय, निशदिन नाथ भ्रमित बेहाल ॥२॥

---

१. रुई की बत्ती, २. स्त्री, ३. पुत्र, ४. दौड़-दौड़ कर उस ओर अधिक गिर पड़ता हूँ, ५. बहुत से, ६. मुझसे, ७. संसार समुद्र के वेग से अभी मुझे तारो, अथवा संसार संमुद्र से जल्दी पार करो, ८. जीती नहीं गई, ९. प्रबल विषय में फँसी हुई ।

योग, यज्ञ, जप, तप, तीर्थ, व्रत, इनमें हूं अंग[1] न भाल[2] ।
कहा करूं कैंह[3] भाँति रिझाऊं, तुम को हे कृपाल ।।३।।
सुन समर्थ सर्वज्ञ कृपानिधि, अशरण शरण हरन जग जाल ।
कृपा निधान सूर की यह गति, कासों कहे कृपण यह काल ।।४।।

(१८५)

प्रभु जी ! मेरे अवगुण चित न धरो। (टेक)
समदर्शी प्रभु नाम तिहारो[4], चाहो तो पार करो ।।१।।
इक नदिया, इक नालि कहावत, मैलो नीर[5] भरो ।
जब मिलकर भई एक वरणता[6], सुरसरि[7] नाम पड़ो ।।२।।
इक लोहा पूजा में राखो, इक गृह बधिक[8] पड़ो ।
गुण अवगुण पारस नहीं जाने कञ्चन करत खरो ।।३।।
यह माया भ्रम जाल निवारो, सूरश्याम[9] सगरो ।
अब की बेर प्रभु मोको भी तारो, नहीं प्रण जात टरो[10] ।।४।।

(१८६)

राग खमाच, ताल ठुमरी

तूहीं हैं, मैं नाहीं वे सजनां[11] ! तूही है, मैं नाहीं । (टेक)
जां[12] सोवा, तां[13] तू नाले[14] सोवें, जां चल्लां[15], तां तू राही[16] ।।१।। तू०

---

१. एक भी साधन रूप अंग अपने भाग्य में नहीं आया, जन्मलग्न, २. भाग्य, कपाल, ललाट, ३. किस रीति से, ४. आपका, ५. जल, ६. एक रंगी, ७. गंगा, ८. कसाई, ९. कवि का नाम, १०. टूटे जाता है, ११. ऐ प्यारे, १२. जब, १३. तब, १४. साथ, १५. जब चलने लगूं, १६. तब तू रास्ते में साथ होता है।

जां बोला तां तू नाले बोलें, चुप करां मन माँही[1] ॥२॥ तू०
सहक[2] सहक के मिलिया दिलवर, जिंदड़ी[3] घोल गंवाई ॥३॥ तू०

(१८७)

राग सोहनी

जो दिल को तुम पर मिटा चुके हैं,
मज़ाक़े - उल्फत[4] उठा चुके हैं।
वह अपनी हस्ती[5] मिटा चुके हैं,
ख़ुदा को ख़ुद ही में पा चुके हैं ॥१॥
न सूये[6] - काबा[7] झुकाते हैं सर,
न जाते हैं बुतकदे[8] के दर[9] पर।
उन्हें हैं दैरो-हरम[10] बराबर,
जो तुमको क़िबला[11] बना चुके हैं ॥२॥
न हम से प्यारे ! छुड़ाओ दामां[12],
न देखो बाग़े-बहारे रिज़वां[13]।

---

१. चुप होऊँ तो तू मन भीतर होता है, २. तड़प तड़प के, ३. जान, ४. प्रेम का स्वाद, लुत्फ़ वा प्रेमानन्द, ५. जीवन, अस्तित्व, ६. ओर, ७. मुसलमानों ने जिसे ईश्वर का घर माना है, ८. हिन्दुओं ने जिसे ईश्वर का घर माना है, ९. द्वार, १०. मन्दिर, मस्जिद, ११. काबा जिसकी तरफ मुंह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं, वा इष्टदेव, १२. पल्ला, १३. स्वर्ग।

कब उनको प्यारे हैं हूरो-ग़िलमां[1],
जो तुमको प्यारा बना चुके हैं ।।३।।
सुना रही है यह दिल की मस्ती,
मिटा के अपना वजूदे-हस्ती[2] ।
मरेंगे यारो ! तलब[3] में हक़[4] की,
जो नामे-तालिब[5] लिखा चुके हैं ।।४।।
न बोल सकते थे कुछ ज़ुबां से,
न याद उनको है जिस्मों-जाँ[6] से,
गुज़र गये हैं वह हर मकां से,
जो उसके कूचे[7] में आ चुके हैं ।।५।।
गर और अपना भला जो चाहो,
यह **राम** अपने से कह सुनाओ,
भला रखो या बुरा बनाओ,
तुम्हारे अब हम कहा चुके हैं ।।६।।

---

१. वो सुन्दर स्त्रियां और नवयुवक जो मुसलमानों के स्वर्ग में बताए जाते हैं, और ये पुराणों के अप्सरा गन्धर्व कहे जा सकते हैं, २. जीवन या प्राण की स्थिति, ३. जिज्ञासा, ४. सत्य स्वरूप, अपने प्यारे का, ५. जिज्ञासु का नाम, ६. देह प्राण, ७. स्थान, हद, सीमा ।

ॐ

आत्मज्ञान

(१८८)

राग काणड़ा, ताल मुगलई

(छान्दोग्योपनिषद् के एक श्लोक का भावार्थ)

क़फ़स[1] एक था आइनों[2] से बना।
लटकता गुले-ताज़ा[3] मरकज़[4] में था ॥१॥
था फूल एक, पर अक्स[5] हरतर्फ़ थे।
थे माशूक़ सब बुलबुले-बन्द[6] के ॥२॥
गुले-अक्स[7] की तर्फ़ बुलबुल चली।
चली थी न दम भर कि ठोकर लगी ॥३॥
जिसे फूल समझी थी साया ही था।
यह झपटी तो तड़ शीशा सिर पर लगा ॥४॥

---

१. पिंजरा, २. शीशों, दर्पनों, ३. ताजा पुष्प, ४. बीच में वा केन्द्र में, ५. प्रतिबिम्ब, ६. क़ैद वा घिरी हुई बुलबुल (बध्यजीव), ७. पुष्प का प्रतिबिम्ब ।

जो दायें को झांकी वही गुल खिला ।
जो बायें को दौड़ी यही हाल था ।।५।।
मुक़ाबिल उड़ी मुंह की खाई वहां ।
जो नीचे गिरी चोट आई वहाँ ।।६।।
क़फ़स के था हर सिम्त[1] शीशा लगा ।
खिला फूल था वस्त[2] में वाह वा ।।७।।
उठा सिर को जिस आन[3] पीछे मुड़ी ।
तो खन्दाँ[4] था गुल आँख उससे लड़ी ।।८।।
झिझकने लगी अब भी धोका न हो ।
है सचमुच का गुल या फ़क़त[5] नाम को ।।९।।
चली आख़िरश[6] करके दिल को दिलेर[7] ।
मिला गुल लगी इक न दम भर की देर ।।१०।।
मिला गुल हुई मस्तो-दिलशाद थी ।
क़फ़स था न शीशा वह आज़ाद[8] थी ।।११।।
यही हाल इन्सान ! तेरा हुआ ।
क़फ़स में है दुनिया के घेरा हुआ ।।१२।।
भटकता है जिसके लिये दर बदर ।
वह आराम है क़ल्ब[9] में जल्वागर[10] ।।१३।।

---

१ प्रत्येक ओर, २. मध्य, ३. जिस समय, ४. खिला हुआ, ५. केवल, ६. अन्त में, ७. बहादुर, दृढ़, ८. स्वतंत्र, प्रसन्न, ९. भीतर दिल में, १७. प्रकाशमान ।

(१८६)

ग़ज़ल राग पीलू

पड़ी जो रही एक मुद्दत[1] ज़मीं में ।
छुरी तेज़ आहन[2] की मिट्टी ने खाई ॥१॥
करे काटना फाँसना किस तरह अब ।
ज़मीं से थी निकली, ज़मीं ने मिलाई ॥२॥
हुआ जब ज़मीं खुद यह लोहा तो बस फिर ।
न आतश[3] सही सिर पै नै[4] चोट आई ॥३॥
छुरी है यह दिल इसको रहने दो बेख़ुद ।
यहाँ तक कि मिट जाये नामे जुदाई ॥४॥
पड़ा ही रहे ज़ाते-मुतलक़[5] में बेखुद ।
खबर तक न लो, है इसी में भलाई ॥५॥
"मिरे तेरे" का चीरना फाड़ना सब ।
उड़े हो दुई की न मुतलक़[6] समाई ॥६॥
न गुस्सा रहा दुःख की नै चोट खाई ।
मिटे सब तअल्लुक़[7], ख़ुदाई ख़ुदाई ॥७॥
जिसे मान बैठे थे घर यार ! भाई ।
वह घर से भुलाने की थी एक फाई[8] ॥८॥

---

१. समय, काल, २. लोहा, ३. अग्नि, ४. नहीं, ५. तत्त्व स्वरूप, ६. नितान्त अर्थात् किंचित् भी समाई न हो, ७. सम्बन्ध, ८. फाँस, बंधन, वा फंद ।

भुला घर को मंज़िल[1] में घर कर लिया जब ।
तो निज बादशाही की दर दो सफाई ॥६॥
हवा के बगोलों से जब दिल को बाँधा ।
छुटी ना उमेदी की मुंह पर हवाई ॥१०॥
कँवल, मरदुमे-चश्म[2], सूरज, बतें-आब[3] ।
तअल्लुक़ की आलूदगी[4] थी न राई ॥११॥
जो सच पूछो सैरो-तमाशा भी कब था ।
न थी दूसरी शै[5] न देखी दिखाई ॥१२॥
थी दौलत की दुनिया में जिसकी दुहाई[6] ।
जो खोला गिरह[7] को तो पाई[8] न पाई ॥१३॥
किये हर स्यह[9] हालत के गरचे नज़ारे ।
वले[10] राम, तनहा[11] था मुतलक़[12] इकाई ॥१४॥

(१६०)

राग तिलंग, ताल केरवा

कहाँ जाऊं ? किसे छोड़ूं ? किसे ले लूं ? करूं क्या मैं ? ।
मैं इक तूफां क़यामत का हूं पुर[13] हैरत तमाशा मैं ॥१॥

---

१. मार्ग, पड़ाव, २. नेत्र की पुतली, ३. जल में रहने वाली बतख़, ४. आलेप, लेश, ५. वस्तु, ६ शोर, पुकार, ७. गाँठ, ८. एक पैसे का तीसरा भाग, ९. तीनों अवस्था—जाग्रत स्वप्न, सुषुप्ति, १०. किन्तु, ११. अकेला, १२. एकमेवोद्वितीयं, आश्चर्य भरा दृश्य।

मैं बातिन[1], मैं अयाँ[2], ज़ेरो[3]-ज़बर, चप[4]-रस्त, पेशो[5]-पस ।
जहाँ मैं, हर मकाँ[6]-मैं, हर ज़माँ[7] हूंगा, सदा था मैं ।।२।।
नहीं कुछ जो नहीं मैं हूं, इधर मैं हूं, उधर मैं हूं ।
मैं चाहूं क्या ? किसे ढूंढूं ? सभों में ताना बाना मैं ।।३।।
वह बहरे-हुस्नो[8]-खूबी हूं, हुबाब[9] हैं क़ाफ[10] और कैलाश ।
उड़ा इक मौज[11] से क़तरा, बना तब मेह्र[12] आसा मैं ।।४।।
ज़रो-न्यामत[13] मेरी किरणों में धोका था सुराब[14] ऐसा ।
तजल्ली नूर[15] है मेरा कि 'राम', अहमद हूं, ईसा मैं ।।५।।

(१६१)

प्रश्न

मेरा 'राम, आराम है किस जा[16]? देखकर उसको जी[17] करूं ठंडा ।
क्या वह इस इक शिला पै बैठा है ? क्या वह महदूद[18] और यकजा[19] है ?

जुमला मुतिजा

वाह क्या वह चाँदनी में गंगा है । दूध-हीरों के रंग रंगा है ।।
साफ बातन[20] से आबे-सीमी[21] पर । मीठी मीठी सुरों से गागाकर ।।
लुत्फे-रावी[22] का आज लाती है । यूं पता 'राम' का सुनाती है ।।

---

१. भीतर, २. बाहर, प्रकट, ३. नीचे ऊपर ४. बाएं दाएं, ५. आगे, पीछे, ६. देश, ७. काल, ८. सुन्दरता और अच्छाई का समुद्र, ९. बुलबुला १०. क़ोह क़ाफ़ के पर्वत से आशय है, ११. लहर, तरंग, १२. सूर्य जैसा, १३. धन दौलत, १४. मृगतृष्णा का जल, १५. तेजोमय प्रकाश, १६. स्थान, जगह, १७. चित्त, दिल, १८. सीमित, १९. एक देशी इकट्ठा, २०. शुद्ध हृदय, २१. चाँदी का-सा जल, २२. दरिया का नाम है जो लाहौर में बहता है, और जहाँ स्वामी राम बहुधा जाया करते थे ।

देखो मौजूद सब जगह है राम । माह बादल हुआ है उसका धाम ।।
बल्कि है ठीक ठीक बात तो यह । उसमें है बूदो-बाशे-आलमे[२]-सेह ।।
वह अमूरत है मूरती उसकी । किस तरह हो सके ? कहाँ कैसी ? ।।
कुल्ले-शैअन[३] मुहीत है आकाश । मूरतीं में न आ सके आकाश ।।
जो है उस एक ही की मूरत है । जिस तरफ झांकें उसकी सूरत है ।।

(१६२)

राग तिलंग, ताल केरवा

उत्तर स्वरूप प्रश्न

मस्त ढूंढ़ है होके मतवाला[४] ।
कुछ पता दो कहाँ है मतवाला[५] ।।
गङ्गी करती फिरे है गङ्ग गङ्ग गङ्ग ।
"हाय गङ्गा का पाऊं क्योंकर सङ्ग ?" ।।
मुख से घूंघट उठा के वह प्यारा ।
"खोजता है किधर गया प्यारा ?" ।।
भांग पी पी के भङ्ग कहती है ।
"बूटी शिव की किधर गई है ऐ !" ।।
मस्ती पूछे है मस्त नैनों से ।
"है कहाँ पर वह नश्अ के डोरे ?" ।।

---

१. चाँद, २. उसमें तीनों लोकों की स्थिति और आश्रय है, ३. समस्त वस्तुओं को घेरे हुए अर्थात् सर्वव्यापक, ४. पागल, ५. मस्त ।

रात भर ताकता फिरा तारा ।
फाड़ आँखों को "है कहाँ तारा ?" ॥
राम बन बन को छान थक हारा ।
"मेरा आराम", राम, है किस जा[१] ?॥

(१६३)

एक प्यारे का उत्तर

राग भैरवी, ताल पश्तो

सरोदो[२]-रक्सो[३]-शादी[४] दम बदम[५] है,
तफ़क्कुर[६] दूर है और ग़म को रम[७] है ।
ग़ज़ब खूबी है, बेरूं-अज़-रक़म[८] है,
यक़ीनन[९] जान तेरी ही क़सम है ।
मुबारक हो तबीयत का यह खिलना,
यह रसभीनी अवस्था जामे[१०]-जम है ।
मुबारक दे रहा है चाँद झुक कर,
सलामों[११] से कमर में उसकी ख़म[१२] है ।
पिये जाओ दमा दम जाम[१३] भरकर,
तुम्हारा आज लाखों पर क़लम है ।

---

१. स्थान, जगह, २. राग रङ्ग, ३. नाच, ४. खुशी, ५. निरन्तर, ६. चिन्ता, फिक्र, ७. दूर भागा हुआ, ८. लेख से बाहर, ९. निश्चय-पूर्वक, १०. जमशेद बादशाह का प्याला जिससे मस्ती लाई जाती थी, ११. नमस्कारों से, १२. कुबड़ापन, झुकाव, १३. (निजानन्द के) प्याला ।

गुलों[१] से पुर हुआ है दामने-शौक़[२],
फ़लक[३] खेमा[४] है कैवाँ[५] पर अलम[६] है।
तिरे दीदों[७] पै भूले से हो शबनम,
कभी देखा सुना "सूरज पै नम[८] है" ?
रखें आगे को क्या-क्या हम न उम्मेद,
कि मारा गुर्गे[९]-ग़म, पहिला क़दम है।
दिखाया है प्रकृति ने नाच पूरा,
सिले[१०] में उड़ गई, ऐ है सितम[११] है।
ग़लत[१२] गुफ़्तम् शिकायत की नहीं जा[१३],
मिली आ पुरुष में अदलो-करम[१४] है।
न कहता था तुम्हें क्या **'राम'** पहिले ?
सबाहे[१५]-ईद आई, रात कम है।

---

१. पुष्पों से, २. जिज्ञासा का पल्ला अर्थात् तीव्र जिज्ञासा, ३. आकाश, ४. मण्डप, तम्बू, ५. शनितारा, सातवां आकाश, ६. झण्डा, ७. नेत्रों ८. शीतलता ठंडक, गीलापन, ६. चिन्ता का भेड़िया, १०. बदले में, ११. जुल्म, है, आश्चर्य है, १२. मैंने गलत कहा, १३. स्थान जगह, १४. न्याय और दया (अर्थात् प्रकृति का अपने पुरुष में लय होना ही ठीक न्याग और भगवत कृपा है), १५. आनन्द की प्रभात।

(१६४)

परज, ताल चलन्त

दरियां से हुबाब[1] की है यह सदा[2] ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।।टेक
मुझको न समझ अपने से जुदा ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।।१।।
जब गुन्चा[3] चमन[4] में सुबह[5] को खिला ।
झट कान में गुल के यह कहने लगा ।।
हाँ आज यह उक़दा[6] है हम पै खुला ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।।२।।
आईना[7] मुक़ाबिले-रुख[8] जो रखा ।
झट ठोल उठा यूं अक्स[9] उसका ।।
क्यों देख के हैरां यार हुआ ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।।३।।
दाने ने भला खिरमन[10] से कहा ।
चुप रह इस जा[11] नहीं चूंवो च्यरा[12] ।।
वहदत[13] की झलक कसरत[14] में दिखा ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।।४।।

---

१. बूलबुला, २. आवाज़, ३. पुष्प-कली, ४. बाग, ५. प्रातः, ६. भेद वा गुह्य रहस्य. ७. शीशा, दर्पण, ८. मुख के सामने, ९. प्रतिबिम्ब, १०. दानों का ढेर, खलियान, ११. जगह, स्थान, १२. क्यों और कब, वाद-विवाद, १३. एकत्व, १४. नानत्व ।

नासूत[1] में आ के यही देखा ।
है मेरी ही ज़ात[2] से नश्वो-नुमा[3] ।।
जैसे पुम्बा[4] से तार का हो रिश्ता[5] ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।। ५ ।।
तू क्यों समझा मुझे ग़ैर[6] बता ।
रुखे-ज़ेबा[7], तू अपना न हम से छिपा ।।
चिक़ पर्दा उठा, टुक सामने आ ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।।६।।

(१६५)

भैरवी, ताल तीन

है दैरो-हरम[8] में वह जल्वा[9]-कुनाँ ।
पर अपना तो रखता वह घर ही नहीं ।।
मैं देखूं हूं सब के है सर पै वही ।
पर अपना तो रखता वह सर ही नहीं ।
यह सितम[10] है कि उसके है चश्म[11] कहाँ ?
पर ऐसी किसी की नज़र[12] ही नहीं ।।
है नूर[13] का उसके ज़हूर[14] खुला ।
पर है वह कहाँ यह ख़बर ही नहीं ।।

---

१. स्थूल, जगत, २. स्वरूप, निजात्मा, ३. पालना पोसना वा फलना फूलना, ४. रूई, ५. सम्बन्ध, ६. अन्य, ७. सुन्दर मुख, ८. मन्दिर और काबा, ९. प्रकाशमान, १०. आश्चर्य, जुल्म, अन्याय, ११. नेत्र, १२. दृष्टि, १३. ज्योति, १४. प्रकाश, तेज ।

कोई लाख तरह से भी मारे मुझे ।
पर मेरा तो कटता यह सर ही नहीं ।।
वह मकाँ[1] है मेरा तन्हाई[2] में यां ।
कुछ शम्सो-क़मर[3] का गुज़र ही नहीं ।।
न तो आबो-हवा[4] है न आतश[5] यहाँ ।
कोई मेरे सिवा तो बशर[6] ही नहीं ।।
दरे दिल[7] को हिला, कर दर्शन आ ।
करीं करना तो पड़ता सफर ही नहीं ।
जिस के कब्ज़े में है गंजे-वहदत[8] यहाँ ।
कोई उससे तो दौलतवर[9] ही नहीं ।।

(१९६)

ग़ज़ल, राग जिला संधोड़ा

अगर है शौक़ मिलने का अपस[10] की रम्ज़[11] पाता जा ।
जला कर खुद-नुमाई[12] को भसम तन पै लगाता जा ।। टेक।।
पकड़ कर इश्क़ का झाड़ू, सफ़ा कर हुजरए-दिल[13] को ।
दूई[14] की धूल को ले के, मुसल्ले[15] पर उड़ाता जा ।। १ ।।
मुसल्ला फाड़, तसबीह[16] तोड़, किताबाँ डाल पानी में ।
पकड़ तू दस्त[17] मस्तों का, निजानन्द को तू पाता जा ।। २ ।।

---

१. स्थान, जगह, २. एकान्त, ३. सूर्य और चन्द्र, ४. जल और वायु, ५. अग्नि, ६. प्राणी, जीव, ७. हृदय या दिल का द्वार, ८. एकता का भण्डार, कोष, ९. धनी, १०. अपने आप की, ११. भेद, घुण्डी, १२. दिखावा, अहंकार, १३. दिल की कोठरी, १४. द्वैत, १५. निमाज़ पढ़ने के निमित्त जो कपड़ा आगे बिछाया जाता है, १६. माला जाप करने की, १७. हाथ ।

न जा मसजिद, न कर सिजदा[१], न रख रोज़ा, न मर भूखा ।
वज़ू का फोड़ दे कूज़ा[२], शराबे-शौक़[३] पीता जा ।। ३ ।। अ०
हमेशा खा, हमेशा पी, न ग़फ़लत से रहो इक दम ।
अपस तू खुद खुदा होके, ख़ुदा खुद होके रहता जा ।। ४ ।। अ०
न हो मुल्ला, न हो क़ाज़ी, न खुलक़ां[४] पहन शेखों का ।
नशे में सैर कर अपनी, ख़ुदी को तू जलाता जा ।। ५ ।। अ०
कहे **मनसूर** सुन क़ाज़ी, निवाला[५] कुफ़्र का मत पी ।
अनलहक़[६] कह सबूती[७] से, यही कलमा पढ़ाता जा ।। ६ ।। अ०

(१६७)

होली

अब मोहे फिर फिर आवत हाँसी ।। टेक ।।
सुख स्वरूप होय, सुख को ढूंढ़े, जल में मीन[८] पियासी ।। १।। अ०
सभी तो हैं आतम चेतन, अरु अज[९] अखंड[१०] अविनाशी[११] ।
करत नहीं निश्चय स्वरूप का, भाजत मथुरा काशी ।। २ ।। अ०
क्षण-भंगुरता[१२] देख जगत की फिर भी धरत उदासी ।
निरभय राम[१३], राम किरपा से, काटी लख चौरासी ।। ३।। अ०

---

१. ईश्वर के आगे सिर जमीन पर रखना, पूजा, २. पूजा या निमाज के समय मुंह हाथ पाँव धोने का का प्याला, ३. ईश्वर जिज्ञासा की मद (शराब), ४. चुंगा, लम्बा कोट शेखोंवाला, ५. घूंट, ६. ग्रास, शिवोऽहं, अहं ब्रह्मास्मि, ७. पक्के दिल वा निश्चय से, ८. मछली, ६. जन्म रहित, १०. टुकड़ों रहित, ११. नाश रहित, १२. क्षण में नाश होने वाली वस्तु, १३. भय रहित, कवि का भी नाम है ।

(१६८)

राग धनासरी, ताल दादरा

जिसको कहते हैं खुदा हम ही तो हैं ।
मालिके-अर्ज़-ओ-समा[1] हम ही तो हैं ।।१।।
तालिबाने - हक़[2] जिसे हैं ढूंढते ।
अर्श[3] पर वह दिलरुबा[4] हम ही तो हैं ।।२।।
तूर[5] को सुर्मा किया इक[6] आन में ।
नूर[7] मूसा को दिखा हम ही तो हैं ।।३।।
तिशना - ए - दीदारे लब[8] के वास्ते ।
चश्म-ए-आबे-बक़ा[9] हम ही तो हैं ।।४।।
नार[10] में, मह[11] में, कवाकिब[12] में सदा ।
मेह्र[13] में जल्वानुमा[14] हम ही तो हैं ।।५।।
बोस्ताने - नूर[15] से बहरे - खलील[16] ।
नार को गुलशन[17] किया हम ही तो हैं ।।६।।

---

१. पृथ्वी और आकाश के स्वामी, २. सत्य या परमात्मा के जिज्ञासु, ३. आकाश, ४. मन मोहन, ५. पर्वत का नाम, ६. घड़ी, ७. प्रकाश (अर्थात् जिस परमात्मा ने तूर पहाड़ को एकदम जला के सुर्मा बना दिया है और हजरत मूसा को तूर पर्वत पर प्रकाश के रूप में दर्शन दिए वह हम ही हैं) ८. दर्शन के प्यालों की प्यास बुझाने के वास्ते, ९. अमृत का स्रोत, १०. अग्नि, ११. चाँद, १२. सितारों, १३. सूर्य, १४. प्रकट, भासमान, १५. प्रकाश वाटिका, १६. सच्चे आशिक इब्राहिम ख़लील के वास्ते, १७. बाग अर्थात् जिस प्यारे ने उस अग्नि को जो हजरत इब्राहिम ख़लील के जलाने के लिए जलाई गई थी, उसे ठंडा कर दिया अर्थात् आग को बाग में बदल दिया वह हम ही तो हैं ।

नूह[1] की किश्ती को तूफाँ से बचा ।
पार बेड़ा कर दिया हम ही तो हैं ॥७॥
मर्दो ज़न[2], पीलो-जवाँ[3], वहशो-त्यूर[4] ।
औलिया[5]-ओ-अंबिया[6] हम ही तो हैं ॥८॥
खाको-बादो-आबो-आतश और खला[7] ।
जुमला मा दर[8] जुमला मा[9], हम ही तो हैं ॥९॥
उक़द-ए वहदत-पसन्दों[10] के लिये ।
नाखुने-मुश्किल-कुशा[11] हम ही तो हैं ॥१०॥
मुर्ग़-दिल[12] बाग़े-जहाँ में जब कि यह ।
दामे-उल्फ़त[13] में फंसा, हम ही तो हैं ॥११॥
कौन किसको सिर झुकाता अपने आप ।
जो झुका, जिसको झुका, हम ही तो हैं ॥१२॥
नेको बद क्या पीरो[14] मुर्शिद तालिब[15] हक़ ।
बाहमा[16] और बेहमी[17], हम ही तो हैं ॥३॥

---

१. पैगम्बर का नाम, २. स्त्री, पुरुष, ३. युवा, बूढ़ा, ४. पशु और पक्षी, ५. सज्जन महात्मा, ६. नबी लोग, ७. पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और आकाश, ८. सब हममें, ९. और सब हम, १०. अद्वैत के सिद्धांतों को पसंद करने वालों के लिए, ११. मुश्किल हल करने वाले साधन, १२. दिल का पक्षी, (जीवात्मा) १३. प्रेम जाल, १४. गुरु, १५. जिज्ञासु, १६. सब कुछ १७. कुछ नहीं ।

(१६६)

राग पर्ज, ताल केरबा

खुदाई कहता है जिसको आलम[1] ।
सो यह भी है इक खयाल मेरा ।।
बदलना सूरत हर एक ढब से ।
हर एक दम में है हाल मेरा ।।१।।
कहीं हूं ज़ाहिर[2], कहीं हूं बातिन[3] ।
कहीं हूं दीद[4], और कहीं हूं हैरत[5] ।।
नज़र है मेरी, नसीब मुझ को ।
हुआ है मिलना मुहाल[6] मेरा ।।२।।
तिलिस्मे[7]- इसरारे - गंजे - मख़फ़ी[8] ।
कहूं न सीने[9] को अपने क्योंकर ।।
अयां[10] हुआ हाले हर दो आलम[11] ।
हुआ जो ज़ाहिर कमाल मेरा ।।३।।
हिजाबे - खुरशीद[12] ज़ाते-मानी[13] ।
हुआ ज़हूरे-नमूदे[14]- सूरत ।।
मिटा जो दुनिया से नामे-आदम ।
हुआ है मुझ को विसाल[15] मेरा ।।४।।

---

१. जगत, संसार, २. व्यक्त, ३. अव्यक्त, ४. दृष्टि, ५. आश्चर्य, ६. कठिन ७. जादू, ८. गृह्य भंडार के भेदों का जादू, ९. दिल, १०. जाहिर खुला, ११.लोको परलोक, १२. सुर्य पर परदा, १३. स्वरूप अर्थात जिसे सब चाहते हैं, १४. बाह्य नाम रूप का प्रकाश, १५.सूर्य रूपी आत्मस्वरूप जो सब का उद्देश्य है उस पर जो पर्दा है जो ही बाह्य नाम रूप बन गया, जब (आलम का) नाम मिटा तब ही साक्षात्कार हुआ ।

हमेशा आँखों को बन्द रखना ।
जमाले-मानी[1] का देखना है ।।
जो गोशे-कर[2] है वह है समाअ़त[3] ।
जो बे ज़बानी है क़ाल[4] मेरा ।।५।।
अलस्तु क़ालू बला की रम्ज़ें[5] ।
न पूछ मुझ से वतन ! तू हरगिज़ ।।
हूं आप मशग़ूल[7] आप शाग़िल[8] ।
जवाब ख़ुद है, सवाल मेरा ।।६।।

(२०६)

राग झंझोटी, ताल दादरा

मैं न बन्दा, न खुदा था, मुझे मालूम न था ।
दोनों इल्लत[9] से जुदा था, मुझे मालूम न था ।।१।।
शक्ले-हैरत हुई, आईन-ए-दिल[10] से पैदा ।
मानीये-शाने-सफ़ा[11] था मुझे मालूम न था ।।२।।

पंक्तिवार अर्थ

(१) यह मुझे मालूम नहीं था कि मैं जीव हूं या ईश्वर हूँ, और न मुझे यह मालूम था कि मैं इन दोनों उपाधियों से परे हूँ ।
(२) दिल में (अन्तःकरणरूप दर्पण में) आश्चर्यजनक सूरतें प्रकट हुईं मगर यह मुझे मालूम न था कि इस सूरत या प्रतिबिम्ब का असली कारण या बिम्ब मैं ही हूं ।

---

१. अपने स्वरूप का दर्शन, (अन्तरीय सुन्दरता), २. बहरा कान, ३. आवाज़ सुनना, ४. मेरा कथन, ५ 'मैं ही हूं' यह एक रहस्यमय घोषणा है ६. कवि की उपाधि, ७. प्रवृत्त, ८. प्रेरक व काम में लगाने वाला, ९. उपाधि कारण, १०. दिल के शीशे, ११. शुद्ध गुणों का वास्तविक स्वरूप अथवा प्रतिबिम्ब का असली बिम्ब ।

देखता था मैं जिसे हो के नदीदा[1] हर सू[2] ।
मेरी आँखों में छिपा था, मुझे मालूम न था ।।३।।
आप ही आप हूं याँ तालिबो-मतलूब[3] हैं कौन ।
मैं जो आशिक़[4] हूं कहा था, मुझे मालूम न था ।।४।।
वजह मालूम हुई तुझ से न मिलने की सनम[5] ।
मैं ही खुद पर्दा बना था, मुझे मालूम न था ।।५।।
वाद मुद्दत[6] जो हुआ वस्ल[7], खुला राज़े-वतन[8] ।
वासिले[9]-हक़ में सदा था, मुझे मालूम न था ।।६।।

---

(३) जिसको मैं हर तरफ़ बड़े अचम्भे से देखता था, वह मेरी आँखों में छिपा हुआ था पर यह मुझे मालूम न था ।

(४) सब कुछ मैं आप ही हूँ, जिज्ञासु और इच्छित पदार्थ, मेरे बिना कोई नहीं, मैंने जो कहा था कि मैं जो आशिक अर्थात् इस पर आसक्त या प्रेमी हूँ, यह मेरी भूल थी ।

(५) ऐ प्यारे ! तुझ से न मिलने का कारण यही था कि मैं ही स्वयं पर्दा बना हुआ, पर यह मुझे मालूम न था ।

(६) चिरकाल पश्चात जब दर्शन हुए अर्थात साक्षात्कार हुआ, तब अपने घर का भेद खुल गया, (वह यह) कि सत्य स्वरूप को मैं सदैव प्राप्त हुआ था, पर मुझे मालूम न था ।

---

१. अचम्भे से, २. हर तरफ, सर्व ओर, ३. जिज्ञासु और इच्छित पदार्थ, ४. प्रेमी, ५. ऐ प्यारे, ६. काल, ७. साक्षात्कार, ८. निज धाम का रहस्य, कवि का उपनाम भी वतन है, ९. परमात्मा से अभेद ।

(२०१)

काफ़ी, ताल दादरा

मालिके-हर दो जहाँ[1], मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ।
ज़ाहिरो-बातिन[2] सभी, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ।।१।।
लज्ज़ते दुनिया की मुझको कुछ नहीं है आर्ज़ू[3] ।
दोनों जहाँ की नैमते[4] मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ।।२।।
हक़े दुनियाँ[5] का मुझी में ख्वाब था मिसले-ख्याल[6] ।
बेदार[7] हो देखा ज़रा, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ।।३।।
महजूब[8] इस्मो-जिस्म[9] में था, हस्ती-ओ-इल्मो-सरूर[10] ।
पर्दये-जिह्ल[11] उठ गया, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ।।४।।
कुछ नहीं मुझसे सिवा, दुनिया, खुदा, रूहे तमाम[12] ।
हर-जुज़्व-ओ-कुल[13] की असलीयत, मैं ही तो हूं मैं ही तो हूं ।।५।।
चशमए-उलफ़त[14] मुझे हासिल हुआ ला इन्तहा[15] ।
मुझसे जुदा हरगिज़ नहीं, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ।।६।।
उड़ गई जड़ से दुई[16] रुखसत हुई वहदानियत[17] ।
मादूम[18] है दानिश-जहाँ[19] मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ।।७।।
आलमे-दुनिया[20] में हर सू[21] तावां[22] है मेरा ही नूर ।
मेहरो-मह[23] में रौशनी, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ।।८।।

---

१. दोनों लोकों का स्वामी, २. बाहर, भीतर, ३. इच्छा, ४. पदार्थ, ५. जगत की सत्यता, ६. स्वप्नवत्, ७ जानकर, ८. आवृत या ढका हुआ, ६. नाम रूप, १०. सच्चिदानन्द, ११. अज्ञान का आवरण वा परदा, १२. जीवात्माएं, १३. व्यष्टि-समष्टि, १४. प्रेम का स्रोत, १५. अनंत, १६. द्वैत, १७. अद्वैत, १८. अभाव, १९. संसार की वृद्धि, २० संसार, २१. हर तरफ़, २२. प्रकाशमान २३. सूर्य-चाँद ।

(२०३)

राग काफ़ी, ताल ग़ज़ल

मुझको देखो ! मैं क्या हूं, तने तनहा[1] आया हूं ।
मतलए-नूरे-ख़ुदा[2] हूं, तने तनहा आया हूं ।।१।।
मुझको आशिक कहो, माशूक़[3] कहो इश्क़ कहो ।
जा-बजा जल्वानुमा[4] हूं तने तनहा आया हूं ।।२।।
मैं ही मसजूद-मलाइक[5] हूं बशक्ले-आदम[6] ।
मज़हरे-ख़ानए-ख़ुदा[7] हूं, तने तनहा आया हूं ।।३।।
लामकाँ[8] अपना मकाँ है सो तमाशे के लिए ।
मैं तो पर्दे में छुपा हूं, तने तनहा आया हूं ।।४।।
हूं भी, हां भी अनलहक़[9], है यह तो मंजिल अपनी ।
शम्शे-इर्फ़ां[10] की ज़िया[11] हूं, तने तनहा आया हूं ।।५।।
किसको ढूंढूं किसे पाऊं, मैं बताओ साहिब ।
आप में आप ही छुपा हूं, तने तनहा आया हूं ।।६।।

---

१. अकेला, २. ईश्वर के प्रकाश के प्रकट होने का स्थान (स्रोत) ३. प्रिया, ४. जाहिर, प्रकट ५. मैं फ़रिश्तों या देवताओं का पूजनीय हूँ, अर्थात् देवता गण मेरी उपासना करते हैं, ६. आदम के रूप में, ७. स्वयं ईश्वर के प्रकट होने का स्थान, ८. देश रहित, ९. शिवोऽहं, अहम् ब्रह्मास्मि "मैं ब्रह्म हूँ", १०. ज्ञान रूपी सूर्य, ११. प्रकाश ।

(२०३)

राग सिंधोरा, ताल दीपचन्दी

न दुश्मन है कोई अपना न साजन[1] ही हमारे हैं ।।टेक।।
हमारी ज़ाते-मुत्लक़[2] से हुए यह सब पसारे हैं ।। १ ।।
न हम हैं देह मन बुद्धि, नहीं हम जीव नै[3] ईश्वर ।
वले[4] इक कुन[5] हमारी से बने यह रूप सारे हैं । २ ।।
हमारी ज़ाते-नूरानी[6] रहे इक हाल पर दायम[7] ।
कि जिसकी चमक से चमके यह-मेह्रो-मह[8] सितारे हैं ।। ३ ।।
हर इक हस्ती[9] की है हस्ती[10] हमारी ज़ात पर क़ायम ।
हमारी नज़र पड़ने से नज़र आते नज़ारे[11] हैं ।। ४ ।।
बरंगे-मुख्तलिफ़ नामो-शक्ल[12] जो दमक[13] मारे हैं ।
हमारे तूर[14] के शोले[15] से उठते यह शरारे[16] हैं ।। ५ ।।

(२०४)

राग जंगला, ताल धुमाली

बागे जहाँ[17] के गुल[18] हैं, या ख़ार[19] है तो हम हैं ।।टेक।।
गर यार हैं तो हम हैं, अग़यार[20] हैं तो हम हैं ।। १ ।।

---

१. मित्र, २. आत्मा, शुद्धमुक्त स्वरूप, ३. नहीं, ४. किन्तु, ५. संकल्प, ६. प्रकाश स्वरूप, ७. नित्य, ८. सूर्य और चाँद, ९. वस्तु, १०. अस्तित्व, वस्तुत्व, ११. नाना प्रकार के दृश्य पदार्थ, १२. नाना प्रकार के नाम और रूप, १३. चमके हैं, १४. अपने स्वरूप, (आत्मा) के अग्नि रूपी पर्वत को, ५१. लाट, १६. चिनगारियाँ, १७. संसार रूपी बाग के, १८. फूल, १९. काँटा, २०. शत्रु ।

दरिया-ए-मार्फ़त[1] के देखा तो हम हैं साहिल[2] ।
गर वार हैं तो हम हैं, वर[3] पार हैं तो हम हैं ॥२॥
वाविस्ता[4] है हमीं से, गर जब्र[5] है व गर क़द्र[6] ।
मजबूर[7] हैं तो हम हैं, मुख़्तार[8] हैं तो हम हैं ॥३॥
मेरा ही हुस्न जग में, हर चंद मौजज़न है ।
तिस पर भी तेरे तिशना-ए-दीदार[9] हैं तो हम हैं ॥ ४ ॥
फैला के दामे-उल्फ़त[10] घिरते घिराते[11] हम हैं ।
गर सैद[12] हैं तो हम हैं, सय्याद[13] हैं तो हम हैं ॥ ५ ॥
अपना ही देखते हैं, हम बन्दोबस्त यारो ।
गर दाद[14] हैं तो हम हैं, फर्याद हैं तो हम हैं ॥ ६ ॥

(२०५)

भैरवी ग़ज़ल

दिल को जब ग़ैर[15] से सफ़ा देखा ॥ टेक ॥
आप को अपना दिलरुबा[16] देखा ॥ १ ॥
पी लिया जाम[17] बादए-वदहत[18] ।
ख़ेशो बेगाना[19] आशना[20] देखा ॥ २ ॥

---

१. आत्मज्ञान का दरिया (समुद्र), २. तट (कनारा), ३. और अगर, ४. बन्धा हुआ है, संबंध रखता है, ५. परतन्त्रता, ६. स्वतन्त्रता, ७. परतंत्र, ८. स्वतन्त्र, ९. दर्शन के प्यासे, १०. मोहजाल, ११. फँसते-फँसाते, १२. शिकार, १३. शिकारी, १४. न्याय, १५. स्वरूप या ब्रह्म के अतिरिक्त जो कुछ भी हो उससे, १६. माशूक़ (प्यारा), १७. प्याला, १८. अद्वैत रूपी मद (शराब), १९. अपना और पराया, २०. मित्र ।

जिससे है ज़ात अपनी को जाना ।
आप को हक़[1] से कब जुदा देखा ॥ ३ ॥
रमज़े-रहबर[2] की अपने जब समझा ।
न कोई ग़ैर[3] मा सिवा देखा ॥४॥
करके बाजार गर्म कसरत[4] का ।
आप को अपने में छुपा देखा ॥ ५ ॥
ग़ैर का इस्म[5] गर्चे है मशहूर ।
न निशां उस का, नै पता देखा ॥ ६ ॥
जब से दर्शन है **राम** का पाया ।
ऐ **राम** ! क्या कहूं कि क्या देखा ॥ ७ ॥

(२०६)

भैरवी ग़ज़ल

यार को हम ने जा बजा[6] देखा ।
कहीं बन्दा कहीं ख़ुदा देखा ॥ १ ॥
सूरते-गुल में खिलखिला के हँसा ।
शक्ले - बुलबुल में चहचहा देखा ॥ २ ॥
कहीं है बादशाहे - तख्ते - नशीं[7] ।
कहीं कासा[8] लिये गदा[9] देखा ॥ ३ ॥

---

१. सत्य स्वरूप परमात्मा, २ गुरु के संकेत, ३. अपने से अलग वा भिन्न न देखा, ४. नानत्व, ५. नाम, ६. हर जगह, ७. सिंहासन पर बैठा हुआ महाराजा, ८. भिक्षा का प्याला, खप्पर, ९. भिक्षु, भिखमंगा ।

कहीं आबिद[1] बना, कहीं ज़ाहिद[2] ।
कहीं रिंदों[3] का पेशवा[4] देखा ॥ ४ ॥
करके दावा कहीं अनलहक़ का ।
बर सरे दार[5] वह खिंचा देखा ॥ ५ ॥
देखता आप है, सुने है आप ।
न कोई उसके मासिवा[6] देखा ॥ ६ ॥
बल्कि यह बोलना तकल्लुफ[7] है ।
हमने उसको सुना है या देखा ॥ ७ ॥

(२०७)

राग भैरवी, ताल तीन

दिया अपनी खुदी[8] को जो हमने उठा ।
वह जो परदा सा बीच में था न रहा ॥
रहे परदे में अब न वह परदा नशीं ।
कोई दूसरा उसके सिवा न रहा ॥ १ ॥
न थी हाल की जब हमें अपनी ख़बर ।
रहे देखते औरों के ऐबो-हुनर[9] ॥
पड़ी अपनी बुराइयों पर जो नज़र ।
तो निगाह में कोई बुरा न रहा ॥ २ ॥

---

१. भक्त, २. तपस्वी, ३. मस्तों, ४. अगुवा, गुरू, ५. सूली के सिरे पर, मन्सूर, ६. अन्य, भिन्न, ७. ज्यादा, यों ही है, ८. अहङ्कार, ९. गुण-दोष।

ज़फ़र[1] आदमी उस को न जानियेगा ।
गो[2] हो कैसा ही साहिबे-फ़ह्मो-ज़का[3] ।।
जिसे ऐश[4] में यादे-खुदा न रही ।
जिसे तैश[5] में ख़ौफ़े-खुदा[6] न रहा ।।३।।

(२०८)

राग खमाच, ताल दादरा

मक्के गया गल्ल[7] मुक़दी[8] नाहीं, जे[9] न मनो मुकाइये[9] ।
गङ्गा गया कुच्छ ज्ञान न आवे, भावें[10] सौ सौ डुब्बे[11] लाईये ।
गया गयां कुच्छ गती न होवे, भावे[12] लखलख पिंड बट पाईये ।
प्रयाग गयां शान्ति न आवे, भावें वैह वैह मूंड मुडाईये ।
दयालदास जेहड़ी[13] वस्तु अंदर होवे, ओहनू[14] बाहर क्योंकर पाईये ।

(२०९)

राग ज़िला, वा पीलू, ताल दीपचन्दी

क्या खुदा को ढूंढ़ता है यह बड़ी कुछ बात है ।।टेक।।
तू खुदा है तू खुदा है तू खुदा की ज़ात[15] है ।।१।। क्या०
क्या खुदा को ढूंढ़ता वो सदा तेरे पास है ।
पास है पाता नहीं, फूलन में जैसे बास[16] है ।।२।। क्या०

---

१. कवि का नाम, यह दिल्ली का आखिरी बादशाह था, २. चाहे यद्यपि ३. समझदार, तीव्र बुद्धि और विचार वाला, ४. विषयानन्द, भोग विलास, ५. क्रोध, गुस्सा, ६. ईश्वर का भय, ७. बात, धन्धा, ८. समाप्त न होगी, ९. अगर खतम करें, १०. चाहे, ११. गोते, १२. चाहे, १३. जौनसी, १४. उसको, १५. वास्तव स्वरूप, १६. सुगन्ध, खुशबू ।

एक मृग भूला फिरे और कस्तूरी वाके पास है।
पास है पाता नहीं, फिर फिर वह सूंघे घास हैं ।।३।। क्या०
तुझ में है जो बोलता वह ही खुदा तूं आप रे।
है नारायण हृदय भीतर तूं तेरो तपास[1] रे ।।४।। क्या०

(२१०)

ठुमारी, राग जिला, झंजोटी

जहाँ देखत वहाँ रूप हमारो । (टेक)
जड़ चेतन को भेद न पेखत, आतम एक अखंड निहारो[2] ।
क्षिति[3] जल तेज पवन आकाशे, कारण सूक्ष्म स्थूल विचारो ।। ज०
नर नारी पशु पंछी भीतर, मुझ बिन कोई न जागन हारो ।
कीट पतंग पिशाच पदारथ, सरुवर तरुवर जंगल पहाड़ो ।। ज०
मैं सब में सब ही मेरे माहिं, नाम रूप निरंजन धारो ।
नाथ कृपा नरसिंह भयो अब, व्याप रह्यो हमसे जग सारो ।। ज०

(२११)

आतम चेतन चमक रह्यो, कर निधड़क दीदार[4] । (टेक)
तूं परमानन्द आप है, झूठे हैं सुत दार[5] ।।१।। आ०
चमड़ी में हित[6] जो करें, वोही पूर चमार ।
नाशवान जग देख के, समझत नाहिं गंवार ।।२।। आ०

---

१. खोज, इम्तिहान लेना, जांचना, २. देखो, ३. जमीन, पृथ्वी, ४. दर्शन, ५. स्त्री, पुत्र, ६. प्यार ।

दुर्लभ नर तन पाय के, क्यों ना करत विचार ।
तन मंदिर अद्भुत वन्यो, तूं ठाकुर सरदार ।।३।। आ०
विषयों में फंस फंस मरे, जान खोय बेकार ।
जो सुख चाहे त्याग दे, परधन अरु पर नार ।।४।। आ०

(२१२)

राग आसावरी, ताल तीन

पास खड़ा नज़रों में न आवे, ऐसा राम हमारा है ।
है घट में घट की सब जाने, रहत खलक़ से न्यारा रे ।
कोई ध्यावै पीर पैग़म्बर, कोई ठाकुरद्वारा रे ।।
जप तप संयम तीरथ व्रत कर सकल जगत थकि हारा रे ।
गुरु गम से कोई लक्ष्य[1] न पावे, कहत **कबीर** विचारा रे ।।

(२१३)

ग़ज़ल

अर्ज़ो-समा[2] कहां तिरी, वुसअत[3] को पा हके ।
मेरा ही है वह दिल, कि जहाँ तू समा सके ।।१।।
वहदत[4] में तेरे हर्फ़े-दूई[5] का न आ सके ।
आईना[6] क्या मजाल[7] तुझे मुंह दिखा सके ।।२।।
क़ासिद[8] ! नहीं यह काम तिरा, अपनी राह ले ।
उसका पयाम[9] दिल के सिवा कौन ला सके ।।३।।
ग़ाफ़िल[10] ! खुदा की याद को मत भूल जीनहार[11] ।
अपने तई भुला दे अगर तू भुला सके ।।४।।

---

१. देख, साक्षात्कार, २. पृथ्वी-आकाश, ३. सीमा, ४. अद्वैत, ५. द्वैत का वर्ण, ६. दर्पण, ७. शक्ति, ताकत, ८. ईश्वर का संदेश लाने वाला, ९. पैग़ाम, सन्देश, १०. अज्ञानी ! बे खबर, ११. कदापि ।

ज्ञानी

ज्ञानी की आभ्यन्तर दशा

(२१४)

राग भैरवी, ताल रूपक

नसीमे[1]-वहारी चमन[2] सब खिला । अभी छींटे दे दे के बादल चला ।।
गुलो[3]! बोसा[4] लो चाँदनी का मिला । जवाँ नाज़नीं[5] इकसरापा[6] बला ।।
हुई ख़ुश, मिला तख़लिया[7] क्या भला । क़रीब आई, घूरी हंसी खिलखिला
न जादू से लेकिन ज़रा वह हिला । निगह[8] से दिया काम[9] को झट जला ।।
सकी जब न सूरज में दीवा जला । परी बन गई ख़ुद मुजस्सम हया[10] ।।

---

१. वसन्त ऋतु की मन्द मन्द स्पन्द (ठण्डी वायु), २. बाग़, ३. पुष्प, ४. चुम्बन, ५. युवा बांकी स्त्री (कामिनी), ६. अति सुन्दर, ७. एकांत, ८. दृष्टि, ९. काम वृत्ति (विषय वासना), १०. लज्जावती अर्थात् जब ज्ञानी रूप सूर्य में वह कामिनी अपना विषय वासना रूपी दीपक न जला सकी, अर्थात् जब ज्ञानवान उस कामिनी के सौंदर्य रूप फंदे में न आ सका, तब वह बांकी कामिनी स्वयं अति लज्जित हो गई ।

कि सब हुस्न[1] की जान मैं ही तो हूं ।
महो मेह्र[2] के प्राण मैं ही तो हूं ।।१।।

हज़ारों ज़मा पूजा सेवा को थे, थे राजे चंवर मोरछल कर रहे ।
थे दीवान धोते क़दम[3] शौक़ से, थे खिदमत में हाज़िर मदहख्वाँ[4] खड़े ।
ऋषी तुम हो अवतार सब से बड़े, यह सब देख बोला लगा क़हक़हे[5] ।

बड़ा ही नहीं बल्कि छोटा भी हूं ।
न महदूद[6] कीजेगा सब मैं ही हूं ।।२।।

बुरे तौर थे लोग सब छेड़ते, ठठोली से थे फबतियाँ[7] घड़ रहे ।
तड़ातड़ तड़ातड़ वह पत्थर जड़े, लहू के निशाँ सर पै रुख[8] पै पड़े ।
पया पै[9] थे ज़ख्म और सदमे[10] कड़े, थे दीदे[11] अजब मुस्कराहट[12] भरे ।

कि इस खेल की जान मैं ही तो हूं ।
यह लीला के भी प्राण मैं ही तो हूं ।।३।।

समय नीम[13] शब, माह[14] था जनवरी, हिमालय की बर्फ़, सियाह रात थी
बरफ की लगी उस घड़ी इक झड़ी, थमी बर्फ़बारी[15] तो आँधी चली ।
बदन की तो गत[16] बेदमजनूं सी थी, पै दिल में थी ताक़त, लबों पर हंसी ।

कि सर्दी की भी जान मैं ही तो हूं ।
अनासिर[17] के भी प्राण मैं ही तो हूं ।।४।।

---

१. सौन्दर्य, २. चन्द्र सूर्य, ३. चरण, पाद, ४. स्तुति करने वाले ५. हंसकर, ६. परिच्छिन्न, सीमित, ७. बातें बना रहे व हंसी उड़ा रहे, ८. मुख, ९. लगातार निरंतर, १०. कठोर चोट, ११. नेत्र, १२. प्रसन्नता भरे, हंसी पिरोये हुए, १३. अर्ध रात्रि, १४. मास, १५. बर्फ की वर्षा, १६. दशा १७. पञ्च-भूत जिन्हें फ़ारसी में चार तत्व कहते हैं ।

समय दोपहर माह था जून का, जगह की जो पूछो, ख़ते-इस्तवा[1]।
तमाज़त[2] ने लू की दिया सब जला, हरारत[3] से था रेग[4] भी भूनता।
वदन मोम सा था पिघलता पड़ा, पै लब से था खन्दां[5] पिरोया हुआ।

कि गर्मी की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासिर के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥५॥

बियावान् तनहा लक़ोदक़[6] ग़ज़ब, इधर मेदा[7] खाली उधर खुश्क लब।
उठाई निगाह सामने ऐ अजब, लड़ी आँख इक शेरेग़र्रा[8] से तब।
यह तेज़ी से घूरा गया शेर दब, जलाले[9]-जमाली था चितवन[10] में अब।

कि शेरों की भी जान मैं ही तो हूं।
सभी खल्क़[11] के प्राण मैं ही तो हूं ॥६॥

वला मांझधारा में किश्ती घिरी, यह कहता था तूफां कि हूं आखिरी।
थपेड़ों से झटपट चटाँ वह चिरी, उधर बिजली भी वह गिरी वह गिरी।
था, थामें हुए बाँस[12] ज्यूं बाँसुरी, तबस्सुम[13] में जुरअत[14] भरी थी निरी।

कि तूफाँ की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासिर के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥७॥

---

१. पृथ्वी का मध्य भाग जहां बहुत गरमी पड़ती है, भूमध्य रेखा, २. गरमी, ३. धूप की तेजी से, ४. रेत, ५. हंसी पिरोई हुई, ६. बड़ा भारी भयानक गुञ्जान बन, ७. पेट, ८. चिघारनेवाला शेर, भयानक शब्द निकालते, ९. निजानन्द का तेज, १०. दृष्टि, ११. सृष्टि, १२. यहां अभिप्राय बेड़ा को चलाने वाले चप्पे से है, १३. मुस्कराहट, हंसी, १४. दिलेरी, उत्साह, शूर-वीरता व निर्भयता।

बदन दर्दो-पेचिश से सीमाव[1] था, तपे-सख्तो-रंजिश से बेताव[2] था।
नशा ज्ञान का जूं[3] मये[4]-नाव था, वह गाता था गोया[5] मरज़ख्वाब था।
मिटा जिस्म जो नक्श बर[6] आब था, न बिगड़ा सिरा कुछ कि खुद आब था

जहाँ भरके अबदाने-ख़ूबाँ[7] में हूं।
मैं हूं 'राम' हर एक की जाँ में हूं ।।८।।

(२१५)

ज्ञानी की दृष्टि

राग कालिंगड़ा, ताल केरवा

जो खुदा को देखना हो, तो मैं देखता हूं तुमको।
मैं तो देखता हूं तुम को, जो ख़ुदा को देखना हो ।।टेक।।
यह हिजाबे-साज़ो-सामां[8], यह नक़ाबे-यासो-हिरमां[9]।
यह ग़िलाफ़े-नंगों-नामूस[10], वह दिमाग़ो दिल का फ़ानूस।
वह मनो-शुमा[11] का पर्दा, वह लिबासे-चुस्त[12] कर्दा।
वह हया[13] की सब्ज़ काई, वह फ़ना सियाह रज़ाई।
यह लिफ़ाफ़ा जामा[14] बुर्क़ा, यह उतार सित्न[15] तुमको।
जो बरहना[16] करके झांका, तो तुम ही सफ़ा ख़ुदा हो ।।१।।

---

१. पारे के समान क्षुब्ध (तड़प रहा) था, २. तड़प रहा था, ३. सदृश ४. ख़ालिस शराब, ५. मानो, ६. जल पर चित्र के समान था, ७. सुन्दर देहों में, ८. वह साज और सामा का पर्दा, ९. निराशा की आड़ व पर्दा, १०. लज्जा व मान, ११. मैं, हूं, १२. चुस्त करने वाला वस्त्र, १३. लज्जा, १४. ऊपर का खोल या कोश १५. चातर, १६. नङ्गा।

ऐ नसीमे-शौक़[1] ! जाके, वह उड़ादे ज़ुल्फ़[2] रुख से ।
ऐ सबा-ए-इल्म[3] ! जा कर, दे हटा वह ख्वाबे[4] -चादर ।
अरे बादे-तुन्दमस्ती[5] ! दे मिटा अबर[6] की हस्ती ।
ऐ नज़र के ज्ञान गोले, यह फ़सील झट गिरादे ।
कि हो जिह्ल[7] भस्म इक दम, जले वह्म हो यह आलम[8] ।
जो हो चार सू[9] तरन्नुम[10] कि हैं हम ख़ुदा, ख़ुदा हम ।।२।। टेक
न यह तेग़[11] में है ताक़त, न यह तोप में लियाक़त ।
न है बर्क़[12] में यह यारा, न है ज़ेह्ही का चारा ।
न है कारे-तुन्द[13] तूफाँ, न है ज़ोर शेरे[14]-ग़र्रा ।
कोई जज़बा[15] है न शहवत[16], कोई ताना नै[17] शरारत ।

जो तुझे हिलाने आयें

जो तुझे हिलाने आये, तो हो राख भस्म हो जायें ।
वह ख़ुदाई[18] दीदे खोलो, कि हों दूर सब बलायें ।।३।। टेक
वह पहाड़ी नाले चमचम, वह बहारी अब्र छम छम ।
वह चमकते चाँद तारे, हैं तेरी ही रूप प्यारे ।
दिले-अन्दलीब[19] में है रुखे -गुल[20] का रंगे-गुलगू[21] ।

---

१. जिज्ञासा की मन पसन्द पवन, २. आत्म-स्वरूप के ऊपर से माया रूपी जुल्फ़ का काला पर्दा हटा दें, ३. ऐ ज्ञान की पुर्वाई वायु (लटक), ४. स्वप्न रूपी चादर, ५. ऐ निजानन्द की आँधी, ६. (पर्दा रूपी) बादल, ७. अज्ञान, ८. संसार, ९. चारों ओर, १०. (आनन्द का) राग, गान ११. तलवार, १२. बिजली, १३. भारी तूफान या घटा का काम, १४. चिघाड़ने वाला भयानक शेर, १५. चित्त की उमंग का वेग, १६. विषय भोग वा विषय वासना, १७. न कोई, १८. ब्रह्म दृष्टि या दिव्य नेत्र, १९. बुलबुल पक्षी का दिल, २० गुलाब के मुख का, २१. लाल रंग वा गुलाबी रङ्ग ।

वह शफ़क़[1] के सुर्ख इशवे[2], हैं तेरे ही लाल पट्ठे ।
है तुम्हारा धाम तो 'राम', ज़रा घर को मुह तो मोड़ो ।
कि रहीम, राम हो तुम, तुम ही तो खुद खुदा हो ।।४।। टेक

(२१६)

रौशनी की घातें अथवा (जनूने नूर)

राग देश, ताल धमार

मैं पड़ा था पहलू[3] में राम के, दोनों एक नींद में लेटे थे ।
मेरा सीना[4] सीने पै उसके था, मेरा साँस उसका तो साँस था ।।
आई चुपके चुपके से रौशनी, दिये बोसे[5] दीदों[6] पै नाज़ से ।
लम्बी पतली लाल सी उंगलियों से शोखी से गुदगुदा दिया ? ।।
कुछ तुमको आज दिखाऊंगी (मैं दिखाऊंगी) ऐसा कहके हाय सुला दिया
यह जगा दिया कि सुला दिया, जाने किस वला में फंसा दिया ।
ऐ लो ! क्या ही नक्शा जमा दिया, कैसा रंग जादू रचा दिया ।।
चली निरख के हमें साथ ले, करी सैर हाथों में हाथ दे ।
मचे खेल आँखों में आँख दे, गुल[7] वलवला[8] सा बपा किया ।।
इक शोर ग़ौग़ा[9] उठा दिया, निज धाम को तो भुला दिया ।
मुंह राम से तो मुड़ा दिया, आरामे-जाँ[10] को मिटा दिया ।।

---

१. उदय अस्त के समय आकाश में जो लाली होती है सांझ २. नख़रे, नाज़ और अदा, ३. पास, एक ओर, समीप, ४. छाती, ५. चुम्बन, ६. नेत्र, ७. शोर, ८. हलचल, ९. शोर, हुल्लड़, मधू, १०. जीवन के चैन को ।

थक हार कर झख मारकर, हर मू[1] से बोला पुकार कर ।
अरी नाबकारा[2] रौशनी ! अरी चकमा[3] तू ने भला दिया ।।
खन्दी[4] बाल तेरे[5] सफ़ेद हैं, बालों में रंग भरे है तू ।
गुलगूना[6] मुंह पै मले है तू, नटनी ने रूप बना लिया ।।
रुख[7] देखिये तो है फ़क़ तिरा दिल गर्दिशों[9] से है शक़[10] तिरा ।
तू उड़ती पहिये से धूल है, रथ राम ने जो चला दिया ।।
कहो किस जवानी के ज़ोर पर, तूने हमको आके उठा दिया ।
यों[11] कह के क़िस्सा समेट कर, दिल जान में यार लपेट कर ।।
फिर लम्बी तानों में पड़ गया, गोयो[12] ग़ैर-राम[13] जला दिया ।
अभी रात भर भी न बीती थी कि लो रोशनी को हवा लगी ।।
नये नखरे टखरे से प्यार से, मेरे चश्म-ख़ाने[14] को वा[15] कया ।
कुछ आज तुमको दिखाऊंगी, (मैं दिखाऊंगी),
ऐसा कहके हाय ! निचा[16] दिया ।
कहूं क्या? जी ! भर्रे[17] में आ गये, कैसा सब्ज़ बाग़ दिखा दिया ।।
लड़ भिड़ के आखिर शाम को, कह अल्विदा सब काम को ।
आग़ोश[18] मे ले राम को तन उसके मन में छिपा दिया ।।

---

१. बाल, रोम, २. नाकारी, बेहूदह, नटखटी, ३. धोखा, ४. ऐ निर्लज्ज, ५. चाल से अभिप्राय रौशनी की किरणें हैं, ६. पाऊडर, ७. मुख ८. मुरझाया हुआ, ९. काल चक्कर से, १०. फटा हुआ, टूटा हुआ, ११. ऐसे, १२. मानो, १३. राम से भिन्न को, १४. मेरे भीतर के नेत्र वा मेरी भीतरी दृष्टि, १५. खोल दिया, १६. नीचा दिखा दिया, १७. चकमे धोके, १८. बग़ल ।

लेकिन फिर आई रौशनी, लो ! दम दिलासा चल गया ।
और फिर वही शैतानियाँ, वैसी ही कारस्तानियाँ[1],
हंसने में और खसने में फिर दिन भर को यों ही बिता दिया ।।
बेहूदा टाल मटोल, जी[2] यारों का फिर उकता गया ।
हम सो गये, जाग उट्ठे फिर, यों ही अलाहाज़ुल[3] क़यास,
वादा[4] न अपना रौशनी ने एक दिन ईफ़ा[5] किया ।।
थकने न पाई रौशनी, मामूल पर हाज़िर थी वह ।
उमरों पै उमरें हो गई, इसका तवातर[6] दौर था ।।
किस धुन में सब इक़रार थे, क्यों दिन वदिन यह मदार[7] थे ।
किस बात के दर पै थी यह ? मस्तो-ख़राम-मैं[8] थी यह[9]।।
यह तो मुअम्मा[9] ना खुला, सदियो का अर्सा[10] हो गया ।
हर बात जो समझी अजब, पास जा देखा तो सब ।
खाली सुहाना ढोल था, धोका था, फ़ितनये[11] ग़ौल था ।।
सब गुङ्गों कर[12] अशजार[13] थे, चपो,रास्त[14] सब अग़यार[15] थे ।
सब यार दिल पर बार थे, और बे ठिकाना कार था ।।
अपना तो हर शब[16] रूठ जाना, रौशनी का फिर मनाना ।
आज कल और रोज़ो-शब की क़ैद ही में तलमलाना,
सब मेंहनतें तो थीं फ़जूल, और कार नाहमवार[17] था ।।

---

१ चालाकियाँ, २. चित, ३. उपरोक्त की समान, ४. इक़रार, ५. पूरा किया ६. निरन्तर, ७. टिकाव, ठहराव, ८. मस्त करने और बेहोश करने वाली मुद्रा, ९. रहस्य, १०. काल, समय, ११. चालाक भूत वा शैतान, १२. गूंगे, बहरे, १३. वृक्ष, १४. दाँयें, बाँयें अन्य लोग, अनात्म, पदार्थ, १६. रात्रि, १७. बेढंगा ।

वह रौशनी का साथ चलना, अपना न हरगिज़ उसको तकना।
वह रौशनी के जी[1] की हसरत[2], हमको न परवा बल्कि नफ़रत,
सूदो-ज़ियां[3] बीमो-रजा[4] की रगड़ कारे-ज़ार[5] था ।।

योंहि रफ़ता रफ़ता पड़े कभी, कभी उठ खड़े थे मरे कभी।
कभी शिकमे-मादर[6] घर हुआ, कभी ज़न[7] से बोसो-कनार[8] था ।।

बढ़ना कभी, घटना कभी, मद्दो-जज़र[9] दुश्वार था।
गरज़ इन्तिज़ारी-कशाकशी[10], दिन रात सीना-फ़िगार[11] था।
क्या जिन्दगी यह है बगोले की तरह पेचाँ[12] रहे ?
मानिन्देकोरेसग[13] शिकारे-बाद[14] में हैराँ रहे ?

लो आखिरश आया वह दिन, इक़रार पूरा हो गया।
सदियों की मंजिल कट गई, सब कार पूरा हो गया ।।

हाँ ! रौशनी है सुर्खरू, तेरा वादा आज वफ़ा[15] हुआ।
तेरे सदक़े सदक़े मैं नाज़नी ! कुल भेद आज फ़िशा[16] हुआ ।।

उमरों का उक़दा[17] हल हुआ, क़ुफ़लो-गिरह[18] सब खुल गये।
सब क़बज़ो-तङ्गी उड़ गई, पाप और शुभे सब धुल गये।
सब ख़्वाबे दूई[19] मिट गया, दीदे[20] अजब यह खुल गये ।।

---

१. चित्त, २. शोक, ३. लाभ-हानि, ४. भय और आशा, ५. युद्ध, ६. माता का पेट वा गर्भ, ७. स्त्री, ८. चुम्बन और आलिंगन, प्यार, ९. ज्वार भाटा, चढ़ाव उतार, १०. खैंचा तानी ११. घायल चित्त, १२. पेच खाली रहे, १३. अन्धा कुत्ता की तरह, १४. पवन के शिकार, १५. पूरा, १६. अफ़शाँ, प्रकट, १७. घुण्डी खुल गई, मुश्किल हल हो गई, १८. तालें और गाँठे, १९. द्वैत रूपी सपना, २०. नेत्र।

ऐ रौशनी ! ऐ रौशनी ! खुश हो मैं तेरा यार हूं ।
खाविन्द[1] घरवाला हूं मैं पुश्ते पनाह-सरकार[2] हूं ।।

वह राम जो माबूद[3] था, साया था मेरे नूर[4] का ।
क्या रौशनी, क्या राम, इक शोला[5] है मेरे तूर[6] का ।।

इन आँसुओं के तार के सेहरे से चेहरा खिल उठा ।
क्या लुत्फ़ शादीये मर्ग[7] है, हर शै[8] से शादी वाह ! वा !

हाँ ! मुज़दाबाद[9] ऐ सांप सग ! ऐज़ाग़[10], माही[11] चील, गिद !
इस जिस्म से कर लो ज़ियाफ़त, पेट भर भर वाह ! वाह !!

आनन्द के चश्मे के नाके[12] पर यह जिस्म[13] इक बंध था ।
वह बह गया बन्दे-ख़ुदी[14], दरिया बहा है वाह ! वाह !!

सब फ़र्ज क़र्ज और ग़र्ज़ के अमराज़[15] एकदम उड़ गये !
हल फिर गया ज़ेरो[16] ज़बर पर और सुहागा[17] वाह ! वाह !!

दुनिया के दल बादल उठे थे, नज़रे-ग़लत अन्दाज[18] से ।
लो इक निगह से चुक गया सारा सियापा वाह । वाह !!

तन नूर से भरपूर हो, मामूर[19] हो, मसरूर[20] हो ।
वह उड़ गया, जाता रहा, पुर नूर हो, काफ़ूर हो ।।

---

१. पति, स्वामिन, २. तेरा सहायक स्वामी, ३. पूजनीय, ४. प्रकाश, ५. ज्वाला, ६. अग्नि का पर्वत, ७. प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु का आनन्द, ८. प्रत्येक पदार्थ, ९. प्रसन्न हो, १०. काग, ११. मच्छी, १२. मुख, द्वार, १३. शरीर, १४. अहङ्कार रूपी बन्धन, १५. रोग, १६. ऊँच-नीच, बड़े-छोटे, १७. पटेला १८. गलत ढंग की दृष्टि, अज्ञान, १९. पूर्ण, २०. खुश ।

अब शब कहाँ ? और दिन कहाँ फ़र्दा[1] है नै इमरोज़[2] है।
है इक सरूरे-लातग़य्युर[3] ऐश है नै[4] सोज़[5] है ॥

उठना कहाँ ? सोना कहाँ ? आना कहाँ जाना कहाँ ?
मुझ बहरे-नूरो-सरूर[6] में, खोना कहाँ पाना कहाँ ?

मैं नूर हूं, मैं नूर हूं, मैं नूर का भी नूर हूं।
तारों में हूं, सूरज में हूं, नज़दीक से नज़दीक हूं और दूर से भी दूर हूं ॥

मैं मादनो-मख़ज़न[7] हूं मैं, मम्बा[8] हूं, चश्मए-नूर का।
आरामगह[9], आरामदेह[10], हूं रौशनी का नूर का ॥

मेरी तजल्ली[11] है यह नूरे-अक़्ल[12] -ओ-नूरे-अनसरी[13]।
मुझसे दुरुखशाँ[14] हैं यह कुल अजरामे[15] -चर्खे-चम्बरी[16] ॥

हाँ ! ऐ मुबारक रौशनी ! ऐ नूरे-जाँ[17] ! ऐ प्यारी "मैं"।
तू राम और मैं एक हैं, हाँ एक हैं, हाँ एक हैं ॥

हर चश्म[18], हर शै[19] हर बशर[20], हर फ़हम[21], हर मफ़हूम[22] में।
नाज़िर नज़र मंज़ूर[23] मैं, आलिम[24] हूं मैं, मालूम में ॥

---

१. कल, २. आज, ३. बिकार रहित आनन्द, ४. नहीं, ५. जलन, दुःख, ६. आनन्द और प्रकाश के समुद्र में, ७. खान और भण्डार, ८. निकास स्रोत, ९. आराम का स्थान, १० आराम का देनेवाला, ११. तेज १२. बुद्धि का तेज, १३. पंच भौतिक तेज, १४. चमकते, १५. तारा गण, १६. गोल आकाश वा आकाश मण्डल के, १७. प्राण के तेज, १८. चक्षु, १९. वस्तु, २०. मनुष्य (जीवजन्तु), २१. समझ, ज्ञान, २२. समझा हुआ, ज्ञात, २३. दृष्टा, दर्शन, दृष्य, २४. ज्ञानी।

हर आँख मेरी आँख है, हर एक दिल है दिल मेरा।
हाँ! बुलबुल-गुल, मिहरो-मह[1] की आँख में है तिल मेरा॥
वहशत[2] भरे आहू[3] का दिल, शेरे-बबर के क़त्ल[4] का।
दिल आशिक़े-बेदिल का प्यारे, यार का और दह्र[5] का॥
अमृत भरे स्वामी का दिल, और मार[6] पुर अज़ ज़ह्र का।
यह सब तजल्ली[7] है मेरी, या लहर मेरे बह्र का॥
इक बुलबुला है मुझ में सब, ईजादे[8]-नौ, ईजादे[9]-नौ।
है इक भंवर मुझ में यह मर्गे-नागहाँ[10] और ज़ादे[11] नौ॥
सोये पड़े बच्चे को वह जाली उठाकर घूरना।
आहिस्ता से मक्खी उड़ाना, तिफ़्ल[12] का वह बिसूरना॥
वह दो बजे शब को शफ़ाखाने में तिशना[13] मरीज़ को।
उठ कर पिलाना सोडावाटर, काट अपनी नींद को॥
वह मस्त हो नंगे नहाना, कूद पड़ना गङ्ग में।
छींटे उड़ाना, ग़ुल मचाना, ग़ाते खाना रङ्ग में॥
वह माँ से लड़ना, ज़िद में अड़ना, मचलना, एड़ी रगड़ना।
वालिद से पिटना और चिल्लाते हुए आंखों को मलना॥
कालिज के साइन्स रूम में, गैसों से शीशे फोड़ना।
बारूद और गोलों से सफ़ दर सफ़[14] सिपाहें तोड़ना॥

---

१. सूर्य-चाँद, २. घबराहट भरे, ३. मृग, ४. जबर्दस्ती काटने वाला, ५. काल, समय का, ६. ज़हरीले सर्प का, ७. प्रकाश, ८. नई ईजाद, आविष्कार, ९. नई उन्नति, १०. अचानक मृत्यु ११. नई उत्पत्ति, १२. बच्चा, १३. प्यासा, १४ पंक्तिवार।

इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं ।
गर्मी का मौसम, सुबहदम, साअ्रत[1] हैं दो[1] या तीन[1] का ।।
खिड़की में दीवा देखते हो टिमटिमाता टीन का ? ।
दीवे पे पर्वाने है गिरते, बेख़ुदी में बार बार ।।
बेचारा लड़का कर रहा है इल्म[2] पर जाँ को निसार ।
बेचारे तालिब[3] इल्म के चेहरे की ज़र्दी है मिरी ।।
बेनींद लम्बे सांस और आहों की सर्दी है मेरी ।
इन सब चालों में मैं ही हूं, यह हम ही हैं, यह हम ही हैं ।।
है लहलहाता खेत, पुर्वा चल रही है ठुम ठुमक ।
गाढ़े की धोती, लाल चीरा चौधरी की लट लटक ।।
जोशे - जवानी ! मस्त, अल्ग़ोज़ा बजाना उछलना[५] ।
मुगदर घुमाना, कुश्ती लड़ना, पिछड़ना और कुचलना ।।
छकड़ा लदा है बोझ से, हिचकोले खाता बार बार ।
वह टांग पर धर टाँग पड़ना, बोझ ऊपर हो संवार ।।
शिद्दत[४] की गर्मी, चील अन्डे के समय, सरे[५] -दोपहर ।
जा खेत में हल का चलाना, अर्क़[६] में हो तरबतर ।।
और सर पै लोटा छाछ का, कुछ रोटियाँ, कुछ सांग धरे ।
भत्ता उठा कुत्ते को ले, औरत[७] का आना ऐंठ कर ।।
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं ।

१. दो या तीन बजे हैं, २. विद्या, ३. विद्यार्थी, ४. अत्यन्त गर्मी, ५. सारी, ६. पसीने से मुराद है, ७. स्त्री ।

दुलहन का दिल से पास आना ऊपर से रुकना, झिजक जान ।
शर्मो-हया का इश्क़ के चंगुल में रह रह कर के आना ।।
वह माहे - गुलरू[1] के गले में डाल बाहें प्यार से ।
ठण्डे चश्मे के किनारे, बोसाबाज़ी[2] यार से ।।
हाँ ! और वह चुपके से छिपकर, आड़ में अशजार[3] के ।
बेदाम खुफ़िया पुलिस बनना, राम की सरकार के ।।
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही है ।
यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है ।।
वह इस तरफ़ खा खा के मरना, उस तरफ़ फ़ाकों से गुम ।
वह बिलबिलाना जेल में, जंगल में फिरना सुम बुकुम[4] ।।
और वह गदेले कुर्सियां, तकिये बिछोने, बग्गियाँ ।
सब मादरे-सुस्ती बवासीरो जुकाम और हिचकियाँ ।।
यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है ।
वह रेल में या तार घर में महल क्वारिनटीन में ।।
रूस, अफ्रीका ईरान में, जापान में या चीन में ।
दुःखड़े सुनाना, सिसकना, खूं बहाना ज़ार ज़ार ।।
वह खिलखिलाना क़हक़हों और चहचहों में बार बार ।
वह वक्त पर बरिश न लाना, हिन्द में या सिन्ध में ।।
फिर राम को गाली सुनाना, तंग होकर हिन्द में ।

---

१. चन्द्रमुख प्रिया, २. चुम्बन का लेना, ३. वृक्षों, ४. बैहरे और गूंगे ।

वह धूप से सब को मिसाले - मुर्ग़ बिर्यां[1] भूनना ।
बादल की साड़ी की किनारी चन्दनी से गूंदना ।।

चुप होके खानी गालियाँ, साले से उस शिशुपाल से[2] ।
खुश हो सलीबो-दार[3] पर चढ़ना मुबारक हाल से ।।

यह कुल तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है ।
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं ।।

मोहताज[4] के, बीमार के, पापी के और नादार के ।
मैं हमलब-ओ-हम-बग़ल[5] हूं, हमराज़[6] हूं बेयार[7] के ।।

सुनसान शब[8] दरिया किनारे, हैं खड़े डटकर तो हम ।
और क़ैदे-तख़तो-ताज में, गर हैं पड़े जकड़े तो हम ।।

सस्ते से सस्ते हैं तो हम, महंगे से महंगे हैं तो हम ।
ताज़ा से ताज़ा हैं तो हम, सब से पुराने हैं तो हम ।

वाहिद[9] हूं, मुझ को मेरा ही सिजदा[10] सलाम है ।
मेरी नमस्ते मुझको है और राम राम है ।।

जानते हो ? आशिक़-ओ-माशूक़[11] जब होते हैं एक ।
वे शुभा[12] मेरी ही छाती पर बहम[13] सोते हैं नेक ।।

---

१. भूने हुए पक्षी के सदृश, २. इस सारी पंक्ति से कृष्ण भगवान् का गाली खाना अभिप्रेत है, ३. सलीब पर चढ़ने से महात्मा मसीह से अभिप्राय है और दार पर चढ़ने से मंसूर से, ४. गरीब, निर्धन, ५. नितान्त समीप, ६. भेद जानने वाला, ७. अनाथ, ८. रात्रि, ९. अद्वैत, एक अकेला, १०. झुकना, प्रणाम, ११. प्रेमी और प्रिया, १२. निःसंदेह, १३. एकत्र ।

पुण्य में और पाप में, हर बाल साँस और माँस म ।
दूर कर आँखों से परदा, देख जल्वा[1] घास में ।।
कुछ सुना तुमने ? अजब चालें मेरी चालाकियाँ ।
बे हिजाबाना[2] करशमें, लाधड़क बेबाकियाँ[3] ।।
हाँ करोड़ों ऐब, जुर्म, अफ़आले-नेक[4], आमाले-ज़िश्त[5] ।
मुझमें मुतसव्वर[6] हैं दोज़ख, मैकदह[7], मसजिद, बहिश्त ।।
मार देना, झूठ बकना, चोरि-यारी और सितम्[8] ।
कुल जहाँ के ऐब रिन्दाना[9] पड़े करते हैं हम ।।
ऐ ज़मीं के बादशाहो ! पण्डितो, परहेज़गारो[10] ।
ऐ पुलिस ! ऐ मुद्दई, हाकिम, वकील, ऐ मेरे यारो !
लो बता देते हैं तुम को राज़े-खुफ़िया[11] आज हम ।
अपने मुंह से आप ही इक़रार खुद करते हैं हम ।।
"ख्वाह चोरी से कि यारी से खपा लेता हूं में ।
सब की मिलकीयत को, मकबूज़ात[12] को और शान को" ।।
यह सितम, यारो ! कि हरगिज भी तू सह सकता नहीं ।
ग़ैर-खुद[13] के ज़िक्र को, या नाम को, कि निशान को ।।
खुदकुशी[14] करते हैं सब क़ानून, तनक़ीह-ओ-जिरह[15] ।
दूर ही से देख पाते हैं जो मुझ तूफ़ान को ।।

---

१. दर्शन २. पर्दा रहित करामात, ३. निर्भयता निडरपन, ४. पुण्य कर्म, ५. पाप कर्म, ६. कल्पित, ७. शराब खाना, ८. जुल्म, ९. निर्भय वा निहंग होकर, १०. व्रत और तप करने वाले, ११. गुह्य, भेद, १२. अधिकार संपत्ति, १३. अपने से अतिरिक्त भिन्न, १४. आत्म-घात, १५. जाँच, पड़ताल ।

कुल जहाँ बस एक खर्राटा है मस्ती में मेरा।
ऐ ग़ज़ब[1]! सच कर दिखाता हूं मैं इस बोहतान[2] को ॥

क्या मज़ा हो, लो भला दौड़ो, मुझे पकड़ो,
मुझे पकड़ो, मुझे पकड़ो कोई।
रिन्दमस्तों का शहनशा हूं मुझे पकड़ो,
मुझे पकड़ो मुझे पकड़ो कोई ॥

सीना ज़ोरी[3] और चोरी छेड़-छाड़ अठखेलियाँ।
चुटकियाँ सीना में भरता हुं, मुझे पकड़ो कोई ॥
खा के माखन, दिल चुराकर, वह गया, मैं वह गया।
मारकर मैं हाथ हाथों पर वह जाता हूं मुझे पकड़ो कोई ॥
रात दिन छुप कर तुम्हारे बाग़ में बैठा हूं मैं।
बाँसुरी में गा बुलाता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
आइयेगा, लो उड़ा दीजेगा मेरे जिस्म[4] को।
नाम मिट जाने से मिलता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
दस्तो-पा[5] ओ गोशो-दीदा[6] मिस्ले-दस्ताना[7] उतार।
हुलिया सूरत को मिटाता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
साँप जैसे कैंचुली को, फैंक नामो-नङ्ग[8] को।
बे सिल्ह[9] के वश में आता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥

---

१. आश्चर्य, २. झूंठ, ३. जबरदस्ती, ४. शरीर, ५. हाँथ पाँव, ६. कान और आँख, ७. दस्ताना की तरह, ८. लज्जा और निर्लज्जा, ९. बिना हथियारों का प्रयोग किये अर्थात् बिना लड़े।

नट गया, वह नट गया ! नट कर भला जाये कहाँ ।
मुंह तो फेरो ! यह खड़ा हूं, लो ! मुझे पकड़ो कोई ।।
आते आते मुझ तलक, मैं ही तो तुम हो जाओगे ।
आप को जकड़ो ! अगर चाहो मुझे पकड़ो कोई ।।
आतिशे-सोज़ां[1] हूं, मुझ में पुण्य क्या और पाप क्या ।
कौन पकड़ेगा मुझे ? और हां ! मेरा पकड़ेगा क्या ? ।।

(२१७)

ज्ञानी की ललकार (अर्थात् दुनिया की छत पर से ललकार)

१० राग आनन्द भैरवी, ताल धमाली

बादशाह दुनियाँ के हैं मोहरे मेरी शतरंज के ।
दिललगी की चाल हैं सब रंग सुलहो जंग के ।।
रक्से-शादी[2] से मेरे जब कांप उठती है ज़मीं ।
देख कर मैं खिलखिलाता क़हक़हाता[3] हूं वहीं ।।
खुश खड़ा दुनियाँ की छत पर हूं तमाशा देखता ।
गह[4] बगह देता लगा हूं, वहशियों[5] की सी सदा[6] ।।
ऐ मुकाली[7] रेल गाड़ी उड़ गई ! ऐ सिर जली[8] ।
ऐ खरे-दज्जाल[9] ! नखरे बाज़ियों में जूं[10] परी ।।

---

१. जला देने वाली अग्नि, २. प्रसन्नता के नृत्य से, ३. खिल कर हँसाना ४. कभी-कभी, ५. वनचरों, ६. आवाज, घोषणा, ७. काले मुख वाली, ८. जले हुए सिरवाली, अर्थात सिर से धुवाँ निकालने वाली, ९. दज्जाल उस महा झूठे का नाम है जो महात्मा मसीह का शत्रु होगा । उसको अज्ञानता के कारण गदहा कहा है । रेल और गदहा इत्यादि से यहाँ तात्पर्य माया से है जो अज्ञान है और मन को धोका देती और किसी को उसके उद्देश्य पर नहीं पहुँचाती है, १०. परी के समान ।

भोले भाले आदमी भर भर के लम्बे पेट में ।
ले डकारें[1] लोटती हैं रेत में या खेत में ।।
छोड़ धोकेबाज़ियाँ और साफ़ कह, सचमुच बता ।
मंज़िले-मक़सूद[2] तक कोई हुआ तुझ से रसा[3] ।।
पेट में तेरे पड़ा जो वह गया, ! लो वह गया ! ।
लेक[4] हाये ! मंज़िले-मक़सूद पीछे रह गया ।।
ऐ जवाँ बाबू ! यह गरमी क्यों ? ज़रा थम कर चलो ।
बैग लेकर हाथ में सरपट न यों जलदी करो ।।
दौड़ते क्या हो बराते-नूर[5] के मिलने को तुम ? ।
वह न बाहर है, ज़रा पीछे हटो, बातिन[6] को तुम ।।
क्यों हो मुजरिम[7] ! अह्लकारों की खुशामद में पड़े ? ।
यह कचहरी वह नहीं, तुमको रिहाई[8] दे सके ।।
पहनकर पोशाक गहने बुर्क़ा ओढ़े नाज़[9] से ।
चोरी चोरी गुलबदन[10] मिलने चली है यार से ।।
ऐ मुहब्बत से भरी ! ऐ प्यारी बीबी ख़ूबरू[11] ।
चौंक मत, घबरा नहीं, सुनकर मेरी ललकार[12] को ।।

---

१. सीटी अथवा चीख से अभिप्राय है, २. अन्तिम लक्ष्य स्थान, वा असली घर उद्देश, ३. पहुंचा, ४. किंतु, ५. तेज के पुंज या प्रकाश के विवाह में, ६. भीतर, ७. अपराधी, ८. छुटकारा, मुक्ति, ९. नख़रे से, १०. पुष्प के से गातवाली अति कोमल, यहाँ वृत्ति के अभिप्राय है, ११. सुन्दर मुखवाली, १२. आवाज, ध्वनि ।

निकल भागा दिल तेरा, पैरों से बढ़ कर दौड़ में ।
दिल हरम[१] है यार का, साकिन हो गिर, नै[२] दौड़ में ।।
हो खड़ी जा ! बुर्क़ा जामा[३] और बदन तक दे उतार ।
बे हया हो एक दम में, लो अभी मिलता है यार ।।*
दौड़ क़ासिद[४] ! पर लगाकर, उड़ मेरी जाँ ! पेच खाकर।
हर दिलो[५]-हर जाँ में जाकर, बैठ जमकर घर बनाकर ।।
"मैं खुदा हूं", "मैं खुदा हूं" राज़[६] जाँ में फूंक दे ।
हर रगो-रेशे[७] में घुसकर मस्ती-ओ-मुल[८] झोंक दे ।।
गैरबीनी[९] ग़ैरदानी[१०] और ग़ुलामी बंदगी (को) ।
मार गोले दे धड़ाधड़, एक ही एक कूक दे ।।
रौशनी पर कर सवारी, आँख से कर नूर-बारी[११] ।
हर दिलो-दीदा[१२] में जा झंडा अलिफ़[१३] का ठोंक दे ।।

---

१. प्रभु का मन्दिर, २. नहीं, ३. वस्त्र, ४. संदेशा ले जाने वाला, ५. प्रत्येक चित्त और स्थान में, ६. गुह्य भेद, रहस्य, ७. प्रत्येक नस और पठ्ठे में, ८. मस्ती (निजानन्द) और शराब (ज्ञानामृत), ९. द्वैत दृष्टि, १०. द्वैत भावना, ११. नेत्र से आनन्द रूपी प्रकाश की वर्षा, १२. प्रत्येक दिल और नेत्र, १३. यों तो मुराद अद्वैत के झण्डे से है, पर रिसाला (अलिफ़) मासिक पत्र जो ब्रह्मलीन स्वामी राम ने गृहस्थाश्रम के समय केवल अद्वैत प्रतिपादन करने के निमित्त निकाला था, उससे भी अभिप्राय है ।

*यह चीर हरण लीला का रहस्य है ।

(२१८)

ज्ञानी का गंगा-स्नान

राग जङ्गला, ताल तीन

गंगा ! तैथो[1] सद[2] बलिहारे[3] जाऊं । टेक
हाड़ चाम सब वार के फैंकूं ।
येही फूल बताशे लाऊँ ॥१॥ गंगा०
मन तेरे बन्दरन को दे दूं ।
बुद्धि धारा में बहाऊं ॥२॥ गंगा०
चित्त तेरी मच्छली चब जावें ।
अहङ्क[4] गिर[5]-गुहा में दबाऊं ॥३॥ गंगा०
पाप पुण्य सभी सुलगाकर ।
यह तेरी जोत जगाऊं ॥४॥ गंगा०
तुझ में पड़ूं तो तू बन जाऊं ।
ऐसी डुबकी लगाऊं ॥५॥ गंगा०
पिंडे जल थल पवन दशों[6] दिक् ।
अपने रूप बनाऊं ॥६॥ गंगा०
रमण करूं सत[7] धारा माँहि ।
नहीं तो नाम न राम धराऊं ॥७॥ गंगा०

---

१. तुझ पर, २. सौ बार, ३. सदके जाऊँ, कुर्बान जाऊँ, ४. अहंकार, ५. पर्वत की गुफा, ६. दशों ओर अर्थात् सर्व ओर, ७. सत्य की धारा।

(२१९)

राम की गङ्गा-स्तुति

राग सिन्धड़ा, ताल तीन

नदियाँ दी सरदार ! गङ्गा रानी !
छींटे जल दे दें बहार, गङ्गा रानी !
सानूं[1] रख जिदड़ी[2] दे नाल, गङ्गा रानी !
कदे[3] वार, कदे पार, गङ्गा रानी !
सौ-सौ ग़ोते गिन-गिन मार, गंगा रानी !
तेरियाँ लेहराँ **राम** अस्वार, गङ्गा रानी !

(२२०)

राम की कश्मीर में अमरनाथ की यात्रा

(१) पहाड़ों की सैर

राग पहाड़ी, ताल चलन्त

पहाड़ों का यों लम्बी[4] ताने यह सोना ।
वह गुन्जा[5] दरख़्तों का दोशाला[6] होना ।।
वह दामन[7] में सब्ज़े का मख़मल बिछौना ।
नदी का बिछौने की झालर पिरोना ।।

---

१. हमें, २. प्राण, ३. कभी, ४. बेखबर सोना, ५. घने, ६. दोशाला, ओढ़े हुए अर्थात् सरसब्ज़, ७. पर्वत की तलेटी, किनारा पर्वत तलेटी का जंगल, मैदान ।

यह राहत-मुजस्सिम[1], यह आराम मैं हूं ।
वहाँ कोहो[2] दरिया, यहाँ मैं ही मैं हूं ॥१॥

(२) पर्वत पर बादल और वर्षा

यह पर्वत की छाती पै बादल का फिरना ।
वह दम भर में अब्रों[3] से पर्वत का घिरना ॥
गरजना, चमकना, कड़कना, निखरना ।
छमाछम, छमाछम, यह बूंदों का गिरना ॥
अरूसे-फ़लक[5] का वह हंसना, यह रोना ।
मेरे ही लिये है फ़क़त[6] जान खोना ॥२॥

(३) कोसों तक क़ुदरती गुलजार का चले जाना रङ्गा रङ्ग के फूल हर चार सू[7] शिगुफ्ता[8]

यह वादी[9] का रंगी[10] गुलों[11] से लहकना ।
फिज़ा[12] का यह बू से सरापा[13] महकना ॥
यह बुलबुल सा[14] खंदां-लबो[15] का चहकना ।
वह आवाज़ें ने[16] का बहरसू[17] लपकना ॥

---

१. शांतिमूर्ति वा शांतस्वरूप, २. पर्वत और दरिया, ३. बादलों, ४. बादल साफ होना, ५. आकाश रूपी दुल्हन, ६. केवल, ७. चारों ओर, ८. खिले हुए, ९. घाटी, १०. रंग-बिरंगी, ११. पुष्पों, १२. खुला मैदान, १३. सिर से पावों तक अर्थात् एक सिरे से दूसरे तक सुगंधि देना, १४. बुलबुल पक्षी के सदृश, समान, १५. हँसते हुए होठों, १६. बाँसुरी की आवाज, १७. सब ओर ।

गुलों की यह कसरत[1], इरम[2] रूबरू[3] है ।
यह मेरी ही रंगत है, मेरी ही बू है ।।३।।

(४) एक और दिलकश मुक़ाम

जो जू[4] और चश्मा है, नग़मा[5] सरा है ।
किस अन्दाज़[6] से आब[7] बल खा रहा है ।।
यह तकियों पै तकिये हैं, रेशम बिछा है ।
सुहाना[8] समा, मन लुभाना[9] समा है ।।
जिधर देखता हूं, जहाँ देखता हूं ।
मैं अपनी ही ताब[10] और शां[11] देखता हूं ।।४।।

(५) झरनों की बहार

नहीं चादरें, नाचती सीम-तन[12] हैं ।
यह आवाजे पाज़ेब[13] हैं नाराज़न[14] हैं ।।
फुहारों के दाने, ज़मुर्रद[15] फिगन हैं ।
सफाई अहा! रूये[16] मह पुर[17] शिकन हैं ।।

---

१. अधिकता, २. स्वर्ग का बाग़, ३. सामने, ४. नहर, ५. गा रहा है ६. ढंग, ७. जल, ८. दिलपसन्द, ९. मन को मोह लेने वाला, १०. चमक दमक, प्रकाश, तेज, ११. दबदबा, वैभव, मान, १२. चाँदी सी यह जल की धारा नहीं बल्कि सफेद गोरे शरीर वाली सुन्दर नाचने वाली हैं जो नाच रही हैं, १३. पावों का एक जेवर होता है जो चलते समय एक सुन्दर आवाज़ देता है, १४. आवाज दे रही वा शोर कर रही है, १५. एक प्रकार का हरा रत्न है मुराद यह है कि फुहारे जो अपनी बूंदे फेंक रही हैं वह मानों अति सुन्दर रतन बाहर फेंक रही हैं, १६. चन्द्र मुख, १७. बल डाले हुए हैं (अर्थात् चन्द्र भी इस सफाई से ईर्षा वा लज्जा कर रहा है) ।

सबा[1] हूं मैं, गुल चूमता, बोसा लेता ।
मैं शमशाद[2] हूं, झूम कर दाद[3] देता ।।५।।

(६) क़ुद्रती महफ़िल

मेरे सामने एक महफ़िल सजी है ।
हैं सब सीम-सर[4] पीर, पुरसब्ज़[5] जी[6] है ।
शजर[7] क्या हैं, मीना[8] पै मीना धरी है ।
न झरनों का झरना है, क़ुलक़ुल[9] लगी है ।।
लुंढ़ाये यह शीशे कि बह निकली नहरें ।
है मस्ती-मुजस्सिम[10] यह, या अपनी लहरें ।।६।।

(७) श्रीनगर से अनन्त नाग को किश्ती में जाना

खां[11] आबे[12] - दरिया है, किश्ती दवां[13] है ।
सबा[14] नुज़हत-आग़ी[15], सुबहदम[16] वज़ाँ[17] है ।।

---

१. प्रातःकाल की आनन्ददायक वायु, २. सरो वृक्ष सा एक वृक्ष है, ३. सराहना करता, ४. चांदी के सिर वाले अर्थात् सफेद बाल वा सिरवाले, अभिप्राय बर्फ़ के पर्वतों से है, ५. हर भरा, प्रसन्न, ६. चित्त, ७. वृक्ष, ८. बोतल या सुराही शराब से भरी हुई, ९. सुराही या बोतल से शराब निकलते समय जो शब्द होता है, १०. निजानन्द स्वरूप, ११. चल रहा है, १२. दरिया का जल, १३. भाग रही अर्थात् दौड़ रही है, १४. प्रातःकाल की हवा, १५. तरोताजगी से भरी हुई शुद्ध पवित्र वायु, १६. प्रातःकाल, १७. चल रही है, अर्थात् प्रातःकाल की वायु तरोताजगी से भरी हुई सरसर चल रही है ।

यह लहरों पै सूरज का जल्वा[1] अयां[2] है ।
बलन्दी पै बर्फ़ इक तजल्ली-फ़िशां[3] है ।।
ज़हूर[4] अपने ही नूर[5] का तूर[6] पर है ।
पदीद[7] अपनी ही दीद[8] कुल[9] बह्रो बर[10] है ।।७।।

(८) झील डल में इर्द-गिर्द के सुरजीत पर्वतों का प्रतिबिम्ब पड़ना, वायु से जल का हिलना और इसी कारण हलकी वायु के झोंकों से बड़े भारी पर्वतों का हिलते दिखाई देना कितना आश्चर्यजनक दृश्य है। सूर्य डल में वना की तरह हिलता दिखाई देता है और उसी सूर्य की किरणें चप्पों की तरह नाव को चलाने वाली हैं। मैं ही वह सूर्य हूं जो नाव बना हुआ है और मैं ही खेने का औज़ार हूं।

डलकता है डल[11], दीदा[12]-ए-मह-लक़ा सा ।
धड़कता है दिल आईना[13] पुर सफा सा ।।
हिलाता है कोहो[14] को सदमा[15] हवा का ।
खिले हैं कंवल फूल, है इक बला का ।।

---

१. प्रकाश, तेज, २. प्रकट, भासमान, ३. चमक मार रहा है, ४. प्रकाश दृश्य, ५. तेज, ६. उस पर्वत से मुराद है, जहाँ हजरत मूसा से भगवान ने बातचीत की थी अर्थात् जहां उन्हें अनुभव हुआ था ७. दृश्य, प्रकट, सृष्टि, ८. दृष्टि, ९. समस्त, १०. पृथ्वी और समुद्र वा जल थल, ११. सरोवर का नाम, १२. चन्द्रमुखी प्रिया के नेत्र के समान, १३. शुद्ध साफशीशे की तरह, १४. पर्वतों, १५. चोट, टक्कर ।

यह सूरज की किरणों के चप्पे लगे हैं ।
अजब नाव भी हम हैं, ख़ुद खे[1] रहे हैं ॥८॥

(९) श्री अमरनाथ की चढ़ाई

चढ़ाई मुसीबत, उतरना यह मुश्किल ।
फिसलती बरफ तिस पै आफ़त[2] यह बादल ॥
क़यामत[3] यह सरदी कि बचना है बातिल[4] ।
यह बू बूटियों की, कि घबरा गया दिल ॥
यह दिल लेना, जाँ लेना, किसकी अदा[5] है ।
मेरी जाँ की जाँ[6], जिस पै शोखी[7] फ़िदा है[8] ॥९॥

(१०) पर्वत पर पूर्णिमा की रात्रि

अजब लुत्फ़[9] है कोह[10] पर चाँदनी का ।
यह नेचर[11] ने ओढ़ा है जाली दुपट्टा ॥
दिखाता है आधा, छिपाता है आधा ।
दुपट्टे ने जोबन[12] किया है दोबाला[13] ॥
नशे में जवानी के माशूक़े-नेचर[14] ।
है लिपटी हुई **राम** से मस्त होकर ॥१०॥

(११) अमरनाथ का अति विशाल ईश्वरीय हाल[15] जिसे लोग गुफा कहते हैं

---

१. चला रहे हैं, ठेल रहे हैं, २. कष्ट भरी, कठिनता पूर्ण ३. अत्यन्त, भारी, महा प्रलय, ४. झूठ अर्थात् असम्भव, ५. ढंग, ६. शिवजी जो मेरा अन्तर आत्मा है, पुरुष, ७. उमा पार्वती, प्रकृति, ८. कुर्बान, बारे, सदक़े हैं, ९. आनन्द, १०. पर्वत, ११. कुदरत, प्रकृति, १२. सौन्दर्य, १३. द्विगुण, १४. प्रकृति (कुदरत) रूपी प्रिया, १५. बड़ा चौड़ा कमरा ।

बरफ़ जिसमें सुस्ती है जड़ता है, ला-शै[१] ।
अमर-लिंग इस्तादा[२] चेतन की जा[३] है ।।
मिले यार, हुआ वस्ल[४], सब फ़ासिला[५] तै ।
यही रूप दायम[६] अमरनाथ का है ।।
वह आये उपासक, तअय्युन[७] मिटा सब ।
रहा **राम**[८] ही **राम** "मैं" "तू" मिटा सब ।।

(२२१)

उत्तराखंड में गंगातट पर एकान्त निवास स्थान की प्रथम रात्रि*

राग आसा, ताल दादरा

रात का वक़्त[९] है बियाबाँ[१०] है ।
खुश वज़ा[११] पर्वतों में मैदाँ है ।।१।।

---

१. कुछ चीज नहीं, अवस्तु मात्र, २. खड़ा हुआ, ३. स्थान स्थित है, ४. मिलाप, मेल, अभेदता, ५. सब अन्तर, फर्क दूर हुआ, मिट गया, ६. नित्य सर्वदा रहने वाला, ७. भेदभाव, उपाधि, अन्तर, कैद, परिच्छिन्नता, ८. ईश्वर, कवि के नाम से भी मुराद है, ९. समय, १०. जंगल, ११. उत्तम, बनावट वा ढंग वाले पर्वत ।

*स्वामी राम जब अपने कुटुम्ब के साथ उत्तराखंड में पहुंचें, वहाँ रियासत टिहरी की राजधानी के समीप गंगातट पर एक सुन्दर एकान्त स्थान (सेठ मुरलीधर का बग़ीचा) पाया, जिसे राम ने एकान्त निवासार्थ चुना, उस स्थान पर प्रथम रात्रि के समय की शोभा का राम वर्णन करते हैं ।

आस्माँ[1] का बतायें क्या हम हाल ।
मोतियों से भरा हुआ है थाल ॥२॥
चाँद है मोतियों में लाल धरा ।
अब्र[2] है थाल पर रुमाल पड़ा ॥३॥
सर पर अपने उठा के ऐसा थाल ।
रक़्स[3] करती है नेचरे-खुशहाल[4] ॥४॥
बाद[5] को क्या मज़े की सूझी है ।
राम के दिल की बात बूझी है ॥५॥
पास जो बह रही है गंगा जी ।
अबखरें[6] उसके लद लदाते ही ॥६॥
ला रही है लपक के राम के पास ।
क्या ही ठण्डक भरी है गंगा-बास[7]? ॥७॥
फ़ख़्रे-खिदमत[8] से बात है सुर्खन्द[9] ।
जा मिली बादलों से होके बलन्द ॥८॥
अब तो अठखेलियाँ ही करती है ।
दामने-अब्र[10] को उलटती है ॥९॥
लो उड़ाया वह पर्दा - ए - रुमाल ।
आस्माँ दिख रहा है मालामाल ॥१०॥

---

१. आकाश, २. बादल, ३. नाचती है, ४. सुखी वा सुख स्वरूप प्रकृति, ५. वायु, ६. जल की भाप, धुआँ, ७. गंगा जल की सुगन्धि, ८. सेवा के मान से, ९. प्रसन्न, खुश, १०. बादल का पल्ला, किनारा, सिरा ।

शाद[1] नेचर[2] है जगमगाती है ।
आँख हर चार सू[3] फिराती है ॥११॥
क्या कहूं चाँदनी में गंगा है ।
दूध हीरों के रंग रंगा है ॥१२॥
वाह ! जंगल में आज है मंगल[4] ।
सैर कर इस तरफ़ की चल ! चल ! चल! ॥१३॥
ऐ जाँ बया बया कि ई दुनियाये दीगरस्त ।
आबे दिगर हवाये दिगर जाय दीगरस्त ॥१४॥*

(२२२)

निवास स्थान की बहार (ऋतु इत्यादि) का वर्णन

राग आसा, ताल दादरा

आ देख ले बहार कि कैसी बहार है (टेक)
गंगा का है किनार[5], अजब सब्ज़ा-ज़ार है ।
बादल की है बहार हवा खुशगवार[6] है ॥
क्या खुशनुमा[7] पहाड़ पै वह चश्मा[8]-सार है ।
गंगा धुनी सुरीली है, क्या लुत्फ[9] दार है ॥आ०१॥
वक्ते सबाहे[10]-ईद तमाशा तयार है ।
गुलगूना[11] मुंह पै मल के खड़ा गुलइज़ार[12] है ॥

१. ख़ुश, प्रसन्न, २. प्रकृति, ३. चारों ओर, ४. आनन्द, ५. तट, किनारा, ६. मनोहर, आनन्ददायक, ७. रमणीय, ८. धारा बहती है, ९. आनन्ददायक, १०. आनन्द के प्रातःकाल का समय, ११. पाउडर, १२. फूल जैसी गालों (कपोलों) वाला प्यारा ।

*हे प्यारे यहाँ आ कि ये संसार ही दूसरा है यहाँ के जल, वायु, और स्थान कुछ और ही हैं ।

शाहे-फ़लक[1] से याँ जो हुई आँख चार[2] है ।
मारे शरम के चेहरा बना सुर्ख़-नार[3] है ।।आ०२।।
क़तरे हैं ओस के कि दुरों[4] की क़तार हैं ।
किरणों की उनमें, बल[5] बे, नज़ाकत[6] ! यह तार है ।।
मुर्ग़ाने-ख़ुश-नवा[7], तुम्हें काहे की आर[8] है ।
गाओ बजाओ, शब[9] का मिटा दिल से बार[10] है ।।आ०३।।
माशूक़[11] क़द दरख्तों पै बेलों का हार है ।
नै[12] नै ग़लत है, ज़ुल्फ का पेचाँ[13] यह मार[14] है ।।
वाह वा ! सजे सजाये हैं, कैसा श्रृङ्गार है ।
अशजार[15] में चमकता है, ख़ुश आबशार[16] है ।।आ०४।।
अशजार सिर हिलाते हैं, क्या मस्त वार हैं ।
हर रंग के गुलों से चमन लाला-ज़ार[17] हैं ।।
भंवरे जो गूंजते हैं, बड़े ज़र-निगार[18] हैं ।
आनन्द से भरी यह सदा[19] ओन्कार हैं ।।आ०५।।

---

१. सूर्य, २. परस्पर दर्शन, परस्पर मेल, ३. आग की तरह लाल, ४. मोतियों, ५. इस कोमलता पर बलिहारी जाऊँ, कुर्बान जाऊं, ६. कोमलता या नाज़ुक सा धागा, ७. अच्छे गाने वाले पक्षी, ८. शरम, लज्जा, ९. रात्रि, १०. बोझ. (अर्थात् दुःख की रात गई और सुख का प्रातःकाल हुआ), ११. प्रेम मूर्ति वा प्यारे के कद समान, १२. नहीं, नहीं. १३. लिपटा हुआ, १४. साँप, १५. दरख्तों, १६. झरना, १७. सुर्ख़ रंग, १८. सुनहरा रंग जिनके परों पर होता है, १९. ध्वनि वा आवाज ।

गङ्गा के रू सफ़ा[१] से फिसलती न गर[२] नज़र[३] ।
लहरों पै अक्स[४] मेह्र[५] का क्यों बेक़रार[६] है ।।
विष्णू के शिव के घर का असासा[७] यह गङ्ग है ।
यां मौसमे-खिज़ाँ[८] में भी फ़स्ले बहार[९] है ।।आ०६।।
साक़ी[१०] वह मै[११] पिलाता है, तुर्शी[१२] को हार है ।
वाह क्या मज़े से खाने को ग़म का शिकार[१३] है ।।
दिलदारे खुश-अदा तो सदा हम किनार[१४] है ।
दर्शन शराबे-नाब[१५], सुखन[१६] दिल के पार है ।।आ०७।।
बाहर निगाह[१७] कीजे तो गुलज़ार है खिला ।
अंदर सरूर[१८] की तो भला हद कहाँ दिला[१९] ।।
कालिज क़दीम का यह सरे-मू[२०] नहीं हिला ।
पढ़आता मारफत[२१] का सबक़ मेरा यार है ।।आ०८।।
ऐ जां बया बया कि ईं दुनियाये दीगरस्त ।
आबे दिगर हवाये दिगर जाय दीगरस्त[२२] ।।

---

१. शुद्ध रूप, २. अगर, ३. दृष्टि, ४. प्रतिबिम्ब, साया, ५. सूर्य, ६. चंचल, अस्थिर, ७. सम्पत्ति, माल, ८. पतझड़, ९. बसन्त ऋतु, १०. आनन्द रूपी शराब पिलाने वाला अर्थात् ब्रह्मविद् गुरू, ११. प्रेममद १२. खटाई अर्थात् विषय वासना, खटाई से नशा उतरता है मगर ये वो शराब है जिसका नशा उतारने में खटाई भी हार मान गई है, १३. मांस, १४. पास, १५. खालिस शराब, १६. बातचीत, १७. दृष्टि, १८. आनन्द, १९. ऐ दिल, २०. बाल बाँका नहीं हुआ (अर्थात् पढ़ाना बन्द नहीं हुआ) २१. आत्मज्ञान, २२. प्यारे यहाँ आ कि यहां संसार दूसरा है यहाँ का जल, यहाँ की वायु और यहाँ का स्थान ही दूसरा है ।

ख़ुवाने ख्वेश दूर व दर जेह्ल अफ़गनन्द ।
ख़ुबस्तो जेह्ल दूर कुनद जाय दीगरस्त ।।*
साधू फक़ीर का तो इसी पर मदार[1] है ।।आ०९।।
मस्ती मुदाम-कार[2], यही रोज़गार है ।
गुलबीं[3] निगाह पड़ते ही फिर किसका ख़ार[4] है ।।
क्यों ग़म से तू निज़ार[5] है क्यों दिलफगार[6] है ।
जब राम क़ल्ब[7] में तिरे ख़ुद यारे-ग़ार[8] है ।।आ०१०।।

(२२३)

ज्ञानी का घर वा महफ़िल

राग पहाड़ी, ताल धुमाली

सिर पर आकाश का मंडल है, धरती पै सुहानी[9] मख़मल है ।
दिन को सूरज की महफ़िल है, शब[10] को तारों की सभा बाबा ।।
जब झूम के यां घन[11] आते हैं, मस्ती का रंग जमाते हैं ।
चश्मे तंबूर बजाते हैं, गाती है मलार[12] हवा बाबा ।।
याँ पंछी मिलकर गाते हैं, पीतम[13] के संदेश सुनाते हैं ।
याँ रूप अनूप दिखाते हैं, फल फूल और वर्गगिया[14] बाबा ।।

---

१. भरोसा, २. नित्य रहने वाली, ३. पुष्प (गुण) देनेवाली, अर्थात् हंस दृष्टि, ४. काँटा (अवगुण), ५. दुबला, पतला, दुर्बल, ६. घायल चित्त, जख्मी दिल, मन मलीन, ७. अंतःकरण, ८. सच्चा मित्र, ९. दिल को लुभाने वाली, तात्पर्य हरियाली से है, १०. रात, ११. बादलों के समूह, १२. वह रागजिसके गाने से वर्षा हो, १३. प्यारे, १४. घास की पत्ती।

*जो अपने सगे हैं वो दूर हैं और अज्ञान मे पड़े हुए हैं, अच्छा है, यह स्थान कोई और है जो अज्ञान को दूर करता है।

धन दौलत आनी जानी है, यह दुनियाँ राम कहानी है।
यह आलम आलमे-फ़ानी[1] है, बाक़ी[2] है ज़ाते-ख़ुदा बाबा ।।

(२२४)

ज्ञानी को स्वप्न

घर में घर कर

राग कल्याण, ताल तीन

कल ख्वाब एक देखा, मैं काम कर रहा था।
बैलों को हाँकता था, और हल चला रहा था। ।।
मेहनत से सेर[3] होकर, वर्ज़िश से शेर[4] होकर।
यह जी में अपने आई, बस यार घर चलो घर ।।
घर के लिये थी मेहनत, घर के लिये थे बाहर।
झट पट स्नान करके, पोशाक करके दर बर[5] ।।
घर की तरफ़ मैं लपका, पा[6] शौक़ से उठाकर।
तेज़ी से डग[6] बढ़ाकर, जल्दी से गड़ बड़ाकर ।।
कि लो! दौड़ धूप ही ने, यह मचा दिया तहय्युर[7]।
वह ख्वाब[8] झट उड़ाया, यह पाओं घर में आया ।।
बेदार[9] ख़ुद को पाया, ले यार घर में घर कर।
सुपने के घर को दौड़ा, घर जागने में आया ।।

---

१. नाशवान जगत्, २. अमर, सदा रहने वाला, ३. तृप्त, ४. बहादुर, ५. पहन के, ६. पाँव, कदम, पग, ७. आश्चर्य, ८. स्वप्न, ९. जागा हुआ।

क्या खूब था तमाशा, यह ख्वाब कैसा आया।
बन बन में राम ढूंढ़ा, मैं राम खुद बन आया॥
मैं घर जो खोजता था, मेरा ही था वह साया।
अब सब घरों का हूं घर, ऐ राम! घर में घर कर॥

(२२५)

ज्ञानी की सैर (१)

राग बिहाग, ताल तीन

मैं सैर करने निकला, ओढ़े अबर[१] की चादर।
पर्वत में चल रहा था, हवा के बाज़ुओं[२] पर॥
मतवाला[३] झूमता था, हर तरफ़ घूमता था।
झरने नदी-ओ-नाले, पहचान कर पुकारे॥
नेचर[४] से गूंज उट्ठी, उस वेद की ध्वनि की।
"तत्त्वमसि[५], तत्त्वमसि", तू ही है जान सबकी॥
यह नज़ारा[६] प्यारा प्यारा, तेरा ही है पसारा[७]।
जो कुछ भी हम बने हैं, यह रूप बस तो तू है॥
यह सुन जो मैं ने झांका, नीचे को सीधा बाँका।
हर आबशारो[८]-चशमा, गुलो-बर्ग[९] का करिश्मा[१०]॥
अल्वाने-नौअ-दर नौ[११], अशख़ासे-जिन्स[१२] हर नौ[१३]।
हर रंग में तो मैं था, हर संग[१४] में तो मैं था॥

---

१. बादल, २. पंख पर, ३. मस्त, ४. प्रकृति, कुदरत, ५. वह (ब्रह्म) तू है, तू है, ६. दृश्य, ७. फैलाव, तेरी ही है यह सृष्टि, ८. झरना, ९. पुष्प और पत्ते, १०. इशार, ११. भाँति-भाँति के, १२. हर प्रकार के लोग, १३. हर तरह के, १४. प्रत्येक पत्थर में।

माँ[1] ममता[2] की मारी, जाती है वारी न्यारी ।
शौहर[3] को पाके दुलहन[4], सौंपे है अपना तन मन ।।
मुद्दत का बिछड़ा बच्चा, रोता है माँ को मिलता ।
बे इख्तियार मेरा, दिलो-जाँ बहे ही निकला ।।
वह गदाज़े-फ़र्हत आमेज़[5], वह दर्दे दिल दिलावेज़[6] ।।
पुर सोज़े[7] राहते-जां[8] लज्ज़त भरे हैं अर्मा[9] ।।
बहे निकले जेबे-दिल[10] से, वस्ले दवां[11] में बदले ।
मेंह बरसा मोतियों का, तूफ़ान आँसुओं का,
झिम ! झिम ! ! झिम ! ! !

(२२६)

ज्ञानी की सैर (२)

यह सैर क्या है, अजब अनोखा, कि राम मुझ में, मै राम में हूं ।
बग़ैर सूरत अजब है जलवा[12] कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ।।१।।
मुरक्क़ये-हुस्नो-इश्क़[13] हूं मैं, मुझी में नाज़ो-नेयाज़[14] सब हैं ।
हूं अपनी सूरत पै आप शैदा[15], कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ।।२।।

---

१. माता, २. मोह, ३. पति, ४. पत्नी, ५. दिल का आनन्दमय पिघलना, ६. दिलपसन्द दर्द, अर्थात वह दुःख जो दिल को भावे, ७. प्रभाव पूर्ण, ८. ज़िन्दगी का आराम, ९. हौसले, आर्ज़ू, १०. दिल की जेब अर्थात् हृदय की कोठरी से, ११. दवां (दवाम) सदैव रहने वाला मिलाप या आत्म-साक्षाकार, जब आंसू बह निकले तब वह सब दुख दर्द आत्म-साक्षात्कार में बदल गये, १२. दर्शन प्रकट, १३. सुन्दरता और प्रेम के चित्रों की पुस्तक (album), १४. बेपर्वाई प्रिया की और प्रेम जताना प्रीतम का, १५. आशिक़, आसक्त ।

ज़माना आईना[1] राम का है, हर एक सूरत से यह है पैदा।
जो चश्मे-हक़ बीं[2] खुली तो देखा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ।।३।।
वह मुझ से हर रंग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है?
हुबाबो-दरिया[3] का है तमाशा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ।।४।।
सबब बताऊं मैं वज्द[4] का क्या? है क्या जो दरपर्दा[5] देखता हूं।
सदा[6] यह हर साज़ से है पैदा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ।।५।।
बसा है दिल में मेरे वह दिलवर, है आईने में खुद आईना-गर[7]।
अजब तहय्युर[8] हुआ यह कैसा? कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ।।६।।
मुक़ाम पूछो तो लामकाँ[9] था, न राम ही था न मैं वहाँ था।
लिया जो करवट तो होश आया, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ।।७।।
अललतवातुर[10] है पाक जल्वा[11], कि दिल बना तूरे-बर्क़े-सीना[12]।
तड़प के दिल यूं पुकार उट्ठा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ।।८।।
जहाज़ दरिया में और दरिया जहाज़ में भी तो देखिए आ।
यह जिस्म[13] किश्ती[14] है राम दरिया, है राम मुझमें, मैं राम में हूं ।।९।।

(२२७)

ज्ञानी के बाह्याभ्यन्तर वर्षा

(यह कविता रियासत टिहरी के वशिष्टाश्रम अर्थात् बसून वन में उन दिनों लिखी गई थी जबकि राम से अन्त में अपना नाम देना भी छूट गया था।)

---

१. शीशा, दर्पण, २. तत्वदृष्टि का नेत्र, ३. बुलबुला और दरिया, ४. अत्यन्तानन्द, विस्मय, ५. पर्दे के पीछे, ६. ध्वनि, आवाज, ७. दर्पण बनाने वाला, सिकन्दर, यहां सिकन्दर रूपी परमात्मा से अभिप्राय है जिसने दर्पण रूपी दिल बनाया है, ८. आश्चर्य, ९. देश रहित, १०. लगातार, निरन्तर, ११. शुद्ध दर्शन, १२. भीतर की बिजली का अग्नि पर्वत. १३. शरीर, १४. नौका, नाव।

राग बिहाग, ताल दादरा

"चार तरफ से अब्र[1] की वह! उठी थी क्या घटा!
बिजली की जगमगाहटें, राद[2] रहा था कड़कड़ा ।।१।।
बरसे था मेंह भी झूम-झूम, छाजों उमड़[3] उमड़ पड़ा।
झोके हवा के ले गये होशे बदन[4] को वह उड़ा ।।२।।११
हर रगे-जाँ[5] में नूर था, नग़मा[6] था ज़ोरो शोर का।
अब्रे-बर्क़ से था सिवा दिल में सरूर[7] बरसता ।।३।।
आबे-हयात[8] की झड़ी, ज़ोर जो रोज़ो-शब[9] पड़ी।
फ़िक्रो-ख़याल[10] बह गये, टूटी दुई[11] की झोंपड़ी ।।४।।

(२२८)

ज्ञानी की मुबारकबादी

राग भैरवी, ताल चलन्त

नज़र आया है हरसू[12] मह[13]-जमाल अपना मुबारक[14] हो।
"वह मैं हूं" इस खुशी में दिल का भर आना मुबारक हो ।।१।।
यह उरयानी[15] रुख़े-ख़ुरशीद[16] की ख़ुद पर्दा हायल[17] थी।
हुआ अब फ़ाश[18] पर्दा-सितर[19] उड़ जाना मुबारक हो ।।२।।

---

१. बादल, २. बिजली की सड़क, ३. मतलब इस मुहावरे का यह है कि बड़े जोर से वर्षा हुई, ४. शरीर के होश, ५. प्राण के नस-नस में, ६. गाना, ७. आनन्द, ८. अमृत वर्षा, ९. दिन रात जो ज़ोर से पड़ी, १०. चिन्ता और शोक, ११. द्वैत की झोपड़ी जो दिल में स्थित थी सब बह गई, १२. हर तरफ़, १३. चन्द्रमुख या चन्द्र जैसा सौन्दर्य १४. वधाई, खुशी, १५. नंगापन, स्पष्ट प्रकट होना, १६. सूर्यमुख अर्थात् अपने प्रकाश स्वरूप आत्मा की, १७. बीच में आ जाना, ढके हुए थी, १८. खुला, प्रकट, १९. पर्दा।

यह जिस्मो[1] इस्म का काँटा जो बेढब सा खटकता था ।
ख़लिश[2] सब मिट गई, काँटा निकल जाना मुबारक हो ॥२॥
तमसखुर[3] से हुए थे क़ैद साढ़े तीन हाथों में ।
वले[4] अब वुसअते फ़िक्रो-तख़य्युल[5] से भी बढ़ जाना मुबारक हो ॥३॥
अजब तसख़ीरे-आलमगीर[6] लाई सल्तनत-आली[7] ।
महो-माही[8] का फरमाँ[9] का बजा[10] लाना मुबारक हो ॥४॥
न खदशा[11] हर्ज का मुतलक़[12], न अंदेशा-खलल[13] बाक़ी ।
फूरेरे[14] का बुलन्दी पर यह लहराना मुबारक हो ॥५॥
तअल्लुक़[15] से बरी[16] होना हुरूफ़े[17] राम के मानिन्द[18] ।
हर इक पहलू[19] से नुक्तये-दाग़[20] मिट जाना मुबारक हो ॥६॥

(२२६)

ज्ञानी का आशीर्वाद

राग भैरवी, ताल दादरा

बदले है कोई आन[21] में अब रंगे ज़माना[22] ॥ (टेक)
आता है अमन[23] जाता है अब जंगे-ज़माना[24] ॥१॥

---

१. नाम और रूप, २. खटका, झगड़ा, चोट, ३. ठट्ठे से, हंसी से ४. किन्तु, ५. फ़िक्र और ख्याल अर्थात् सोच विचार की सीमा वा अंदाज़, ६. समस्त संसार को जीतने वाली विजय, ७. भारी राज्य, ८. पाताल से आकाश तक, ९. आज्ञा, १०. आज्ञा मानना, ११. डर, १२. बिलकुल, नितान्त, १३. फ़साद वा बिगाड़ की फ़िक्र, १४. झंडा, १५. सम्बन्ध वा आसक्ति, १६. मुक्त, निरासक्त, १७. राम के वर्ण, अक्षर (र, आ, म,) १८. सदृश, १९. तरफ़, २०. बिन्दु का चिन्ह, २१. घड़ी, २२. समय का रंग ढंग, २३. सुख चैन, २४. युद्ध का समय ।

ऐ जेहल[1] ! चलो, दर्द उड़ो, दूर हटो हस्द[2] ।
कमज़ोरी मरो डूब, बस ऐ नंगे-ज़माना[3] ॥२॥

ग़म दूर, मिटा रश्क[4], न ग़ुस्सा, न तमन्ना ।
पलटेगा घड़ी पल में नशा ढंगे-ज़माना ॥३॥

आज़ाद है, आज़ाद है, आज़ाद है हर एक ।
दिलशाद[5] है क्या खूब उड़ा तंगे-ज़माना[6] ॥४॥

"लो[7] काठ की हंडियाँ से निभे भी तो कहाँ तक ।
अग्नि तो जला ज्ञान की दे संगे ज़माना" ॥५॥

आती है जहाँ में शहे-मशरिक़[8] की सवारी ।
मिटता है सियाही का अभी ज़ंगे-ज़माना[9] ॥६॥

वह ही जो इधर खार[10] उधर है गुले-खन्दाँ[11] ।
हो दंग जो यूं जान ले नैरंगे-ज़माना[12] ॥७॥

देता है तुम्हें **राम** भरा जाम[13] यह पी लो ।
सुनवायेगा आहंग[14] नये - चंगे - ज़माना[15] ॥८॥

---

१. अविद्या, २. ईर्ष्या, ३. निर्लज्जता का समय, ४. ईर्ष्या, द्वेष, ५. प्रसन्न चित्त, ६. समय की तंगी, मुसीबत, ७. काठ की हंडिया को अग्नि पर रखने से क्या लाभ होगा यदि कुछ जलाना चाहते हो तो ज्ञानाग्नि पर समय का गम रूपी पत्थर रखकर उसे फूंक दो, ८. सूर्य, ज्ञान के सूर्य से तात्पर्य है, ९. समय की कलंक, दाग, जंगार, अज्ञान, १०. काँटा, ११. खिला हुआ पुष्प, १२. समय की विचित्रता, १३. निजानन्द की मस्ती का वा प्रेम का प्याला, १४. स्वर, १५. समय के बाजे का।

(२३०)

बीमारी में ज्ञानी की व्यवस्था

राग भैरवी, ताल शूल

वाह वा, ऐ तप ओ रेंज़िश ! वाह वा ।
हब्बज़ा[1], ऐ दर्दो-पेचिश ! वाह वा ॥१॥
ऐ बलाये-नागहानी[2] ! वाह वा ।
वेल्कम[3], ऐ मर्गे-जवानी[4] ! वाह वा ॥२॥
यह भंवर, यह क़ह्र[5] बरपा ? वाह वा ।
बह्रे -मेहरे-राम[6] में क्या वाह वा ॥३॥
खाँड का कुत्ता, गधा, चूहा, बिला[7] ।
मुंह में डालो ज़ायक़ा[8] है खाँड का ॥४॥
पगड़ी, पाजामा, दुपट्टा, अंग्रखा ।
ग़ौर से देखा तो सब कुछ सूत था ॥५॥
दामनी तोड़ी व माला को गढ़ा ।
पर निगाहे-हक़[9] में है वह ही तिला[10] ॥६॥

---

१. बहुत अच्छा, बहुत खूब, २. अचानक आने वाली आफत, ३. तुझे स्वागत हो, ४. तरुणाई अर्थात् युवावस्था में मृत्यु ५. ईश्वरीय कोप वा रोष, ६. सूर्य रूपी राम के समुद्र में, अर्थात् राम के प्रकाश स्वरूप सिन्धु में यह सब नाम रूप प्रपञ्च मानो भंवर और लहरें हैं, ७. बिलोटा, ८. स्वाद, ९. तत्व दृष्टि, १०. स्वर्ण, सोना ।

मोतियाबिन्द दिल की आँखों से हटा ।
मर्ज़ो-सेहते[1] ऐन[2] राहते-**राम**[3] था ।।७।।

(२३१)

राम का नाच

राग नट-नारायण, ताल दीपचंदी

नाचूं मैं नटराज रे ! नाचूं मैं महाराज । (टेक)
सूरज नाचूं, तारे नाचूं, नाचूं बन महताब[4] रे ! ।।१।। नाचूं०
तन तेरे में मन हो नाचूं, नाचूं नाड़ी नाड़ रे ! ।।२।। नाचूं०
बादर[5] नाचूं, वायु नाचूं, नाचूं नदी अरु नाव[6] रे ! ।।३।। नाचूं०
ज़र्रा[7] नाचूं, समुद्र नाचूं, नाचूं मोघरा[8] काज रे ! ।।४।। नाचूं०
मधुआ[9] लब बदमस्ती वाला, नाचूं पी पी आज रे ! ।।५।। नाचूं०
घर लागो रंग, रंग घर लागो, नाचूं पापा बाज रे ! ।।६।। नाचूं०
राग गीत सब होवत हरदम, नाचूं पूरा साज रे ! ।।७।। नाचूं०
राम ही नाचत, **राम** ही बाजत, नाचूं हो निर्लाज रे ! ।।८।। नाचूं०

(२३२)

ज्ञानौ की होली

रागनी जैजैवन्ती, ताल चाचर, वा यमन कल्याण, ताल चलन्त

---

१. रोग और निरोग, २. ठीक, निश्चय पूर्वक, ३. राम की शांत दशा, आनन्दावस्था, ४. चांद, ५. बादल, ६. जहाज, बेड़ा, किश्ती, ७. परमाणु, अणु, ८. भारी, ९. प्रेम रूपी मदिरा का प्याला ।

उड़ा रहा हूं मैं रंग भर भर, तरह तरह की यह सारी दुनियाँ ।
चे[1] ख़ूब होली मचा रखी थी पै अब तो हो ली[2] यह सारी दुनिया ।।१।।

मैं साँस लेता हूं रंग खुलते हैं, चाहूं दम में अभी उड़ा दूं ।
अजब तमाशा है रंग रलियाँ, है खेल जादू यह सारी दुनिया ।।२।।

पड़ा हूं मस्ती में ग़र्क़ों-बेख़ुद, न ग़ैर[3] आया चला न ठहरा ।
नशे में ख़र्राटा सा लिया था, जो शोर बर्पा है सारी दुनिया ।।३।।

भरी है ख़ूबी हर इक ख़राबी में, ज़र्रा-ज़र्रा है मेह्र[4] आसा ।
लड़ाई शिकवे में भी मज़े हैं, यह ख्वाब चोखा[5] है सारी दुनिया ।।४।।

लिफाफा देखा जो लम्बा चौड़ा, हुआ तहय्युर[6], कि क्या ही होगा ।
जो फाड़ देखा, ओहो ! कहूं क्या ? हुई ही कब थी यह सारी दुनिया ।।५।।

यह **राम** सुनियेगा क्या कहानी, शुरू न इसका, ख़तम न हो यह ।
जो सत्य पूछो ! है **राम**[7] ही **राम**, यह महज़[8] धोखा है सारी दुनिया ।।६।।

(२३३)

ज्ञानी की (उदारता) लापरवाही

राग पीलू, ताल दीपचंदी

न है कुछ तमन्ना[9] न कुछ जुस्तजू[10] है ।

---

१. क्या खूब, २. हो गई, खतम हो गई, ३. दूसरा, अन्य, ४. सूर्य जैसा, ५. अजीब आश्चर्य, ६. हैरान, विस्मित, ७. राम कवि के नाम से मुराद है, ८. केवल, ९. इच्छा, १०. जिज्ञासा ।

कि वहदत[1] में साक़ी[2] न साग़र[3] न बू है ।।१।।
मिली दिल को आँखें जभी मारिफ़त[4] की ।
जिधर देखता हूं सनम[5] रूबरू[6] है ।।२।।
गुलिस्ताँ[7] में जा कर हरइक गुल[8] को देखा ।
तो मेरी ही रंगत ओ मेरी ही बू है ।।३।।
मेरा तेरा उट्ठा हुए एक ही सब ।
रही कुछ न हसरत[9] न कुछ आरज़ू[10] है ।।४।।

(२३४)

ज्ञानी का प्रण (मुसम्मिम[11] इरादा)

जो वुसअते मुहब्बत के बढ़ जाने से आरिफ कामिल[12] से बह निकलता है ।

राग जंगला, ताल चलन्त

हम रूखे टुकड़े खायेंगे । भारत पर वारे जायेंगे ।।
हम सूखे चने चबायेंगे । भारत की बात बनायेंगे ।।
हम नंगे उम्र बितायेंगे । भारत पर जान मिटायेंगे ।।
सूलों पर दौड़े जायेंगे । कांटों को राख बनायेंगे ।।
हम दर दर धक्के खायेंगे । आनन्द की झलक दिखायेंगे ।।
सब रिश्ते नाते तोड़ेंगे । दिल इक आतम संग जोड़ेंगे ।।
सब विषयों से मुंह मोड़ेंगे । सर सब पापों का फोड़ेंगे ।।

---

१. एकता, २. शराब पिलाने वाला, ३. पियाला, ४. आत्मज्ञान की, ५. प्यारा (अपना स्वरूप), ६. सन्मुख, ७. बाग, ८. पुष्प, ९. शोक, अफ़सोस, १०. आशा, ख्वाहिश, ११. दृढ़ संकल्प, १२. पूर्ण ज्ञानी

(२३५)

ज्ञानी का हौसला (निश्चय व हिम्मत)

राग परहज, ताल ग़ज़ल

अगरचे क़ुतुब[1] जगह से टले तो टल जाये ।
अगरचे बह्र[2] भी जुगनू[3] की दुम से जल जाये ।।
हिमालय बाद[4] की ठोकर से गो फिसल जाये ।
और आफ़ताब[5] भी क़ब्ले-उरूज[6] ढल[7] जाये ।।
मगर न साहबे - हिम्मत[8] का हौसला टूटे ।
कभी न भूले से अपनी जबीं[9] पै बल आये ।।

(२३६)

*अब्र कोहसार में ज्ञानी की हालत

ग़ज़ल

बन के गेसू[10] रुखे-हस्ती पै बिखर जाता हूं ।
शानए[11] मौजे[12] सरासर से संवर जाता हूं ।।१।।

---

*इसको श्रीस्वामी राम ने अपने एकान्त स्थान वासिष्ठाश्रम से लिखकर रावलपिंडी की सनातन धर्म सभा को उसके पत्र के उत्तर में भेजी थी जो तत्पश्चात् अनेक पत्रों में प्रकाशित हुई थी । इसके लक्ष्यार्थ गूढ होने से प्रत्येक पद का भावार्थ नीचे दिया जाता है :—

(१) अस्तित्व, वस्तु वा आतम के मुख पर मैं तम या अविद्या रूपी

---

१. ध्रुव तारा, २. समुद्र, ३. रात को चमकने वाला कीड़ा जो उड़ता भीहै, ४. वायु, ५. सूर्य, ६. चढ़ने से पहिले, ७ अस्त हो जाय, ८. हिम्मत वाला पुरुय, धैर्यवान्, ६. पेशानी, मस्तक, १० जुल्फ, सिर के बाल, ११. कंघी, १२. तरंग।

सैर करता हुआ जिस दम लबे-जू[१] आता हूं ।
बालियां नह्र को गिरदाब[२] की पहनाता हूं ।।२।।
सर पे सब्ज़े के खड़े हो के कहा क़ुम[३] मैंने ।
ग़ुञ्च-ए-गुल[४] को दिया ज़ौक़े-तबस्सुम[५] मैंने ।।३।।
है मुझे दामने कोहसार[६] में सुनने का मज़ा ।
आबशारों[७] के वह खुशनग़मा[८] तराने[९] की सदा[१०] ।।४।।

काले काले बाल बनकर बिखर जाता हूं । इस प्रकार मेरा असली रूप अविद्या से ढक जाता है । फिर मैं ही विद्या रूपी आंधी के झोकों की कंघी से उन बिखरे हुए बालों अर्थात् अविद्या को हटाकर उन्हें संवार लेता हूं जिससे आतम रूपी मुखारविन्द का प्रकाश हो जाता है ।

(२) टहलता हुआ जिस समय मैं नहर के तटपर आता हूं, तो मैं भँवर की बालियां नहर को पहनाता हूं, अर्थात् नहर में जो भंवर पड़ते है वह भी मेरे ही कारण से होते हैं ।

(३) हरियाली पर खड़े होकर जो मैंने 'क़ुम' अर्थात् खड़े हो, कहा तो हरियाली लहलहा आई । और मैने ही पुष्प की कली को खिलने का आनन्द दिया । अर्थात् पुष्प की कली भी मेरी उपस्थिति से मेरे संकेत पर खिलने लग गई ।

(४) मुझे पर्वत की तलेटी पर झरनों के सुन्दर राग और सुरों को सुनने का बहुत स्वाद वा आनन्द आता है ।

---

१. नहर का तट, २. भंवर, ३. खड़ा हो, ४. पुष्प की कली, ५. खिलने का आनन्द, ६. पर्वत की तलेटी, ७. झरना, ८. सुन्दर ध्वनि, ९. सुर, अलाप, १०. आवाज़ ।

वह सरे-कोह[1] से थम-थम के उतरना मेरा ।
गाह[2] मशरिक़[3] कभी मग़रिब[4] को यह फिरना मेरा ।।५।।

हर घड़ी पल में नया रूप बदलना मेरा ।
जामए - सूरते - नौ[5] पहन निकलना मेरा ।।६।।

हाथ पर दूध की ठिलिया को उठाते आना ।
गाह हंसते हुए गह आँखें दिखाते आना ।।७।।

दौड़ते दूर से वह अश्क[6] बहाते आना ।
और थम - थम के उतरते हुए गाते आना ।।८।।

कौन कह सकता है क्या मेरा निशाँ, मेरा पता ।
हश्र[7] ढाती है यह अलबेली[8] ख़िरामी की अदा[9] ।।९।।

---

(५) वह झरनों के रूप में पर्वत की चोटी से मेरा थम-थम के उतरना और कभी पूर्व और कभी पश्चिम की ओर मेरा इस प्रकार फिरना ।

(६) प्रति घड़ी और पल में मेरा नाम अर्थात् झरनों को नया-नया रूप बदलना क्या है (झरनों के इन) नये-नये रूप के वस्त्र पहन कर मेरा निकलना ।

(७) कभी दूध की ठिलिया हाथ पर उठाते आना, कभी हंसते हुए और कभी आँखें दिखाते आना ।

(८) दौड़कर दूर से अश्रुपात करते आना और धीमे-धीमे नीचे उतरते हुए गाते आना ।

(९) मेरे इन पारस्परिक भिन्न और नाना रूपों को देखकर कौन मेरा

---

१. पर्वत की चोटी, २. कभी, ३. पूर्व, ४. पश्चिम, ५. नये रूप का वस्त्र, ६. अश्रु, ७. कयामत ढाती है अर्थात् प्रलय लाती है, ८. यह बांकी चाल, ९. नख़रा, छवि ।

मुझे से चलने में न होगा कोई ग़ाफिल बढ़कर ।
गिर पड़े हैं मेरे दामन[1] की गिरह खुल के गुहर[2] ।।१०।।

(२३७)

ज्ञानी की समदृष्टि

राग सोरठ (महल्ला ६)

जो नर दुःख में दुःख नहि माने ! टेक
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कञ्चन माटी माने ।।१।।
नहि निन्दा नहि अस्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना ।
हर्ष शोक से रहे नयारो, नाहिं मान अपमाना ।।२।।
आशा, मनसा, सकल तियागे, जग से रहे निराशा ।
काम क्रोध जेहिं परसे[3] नाहिं तैं[4] घट ब्रह्म निवासा ।।३।।

ठीक-ठीक निशान वा पता दे सकता है बल्कि मेरी यह विचित्र, सुन्दर बाँकी चालें क़यामत ढाती अर्थात् प्रलय लाती हैं ।

(१०) चलने में मुझसे बढ़कर कोई भी आलसी वा सुस्त न होगा (अर्थात् मैं नितांत अचल हूं) और मेरा चलना मानों ऐसा है कि जैसे मेरे वस्त्र के पल्ले में जो मोती बंधे हुए थे, उस पल्ले की गांठ के खुल जाने से मोतियों का गिर पड़ना । तात्पर्य यह कि मैं स्वयं तो चलने का कोई संकल्प न करता हूं, और न रखता हूं, अलबत्ता किसी के अदृष्ट उदय होने पर मेरे भीतर यदि फुरना उठ जाय और उस फुराने से मेरे अचल रहने की ग्रंथी खुल जाय, तो मैं मोतियों के गिरने के समान चला भी आता हूं ।

---

१. पल्ला, २. मोती, ३. स्पर्श करे, ४. उस ।

गुरु कृपा जेहि[1] नर को कीनी, तेहि[2] यह जुगत[3] पिछानी ।
नानक लीन भयो गोविंद स्यों, ज्यों पानी संग पानी ।।४।।

(२३८)

मुक्त के चिन्ह

राग गौड़ी वा धनासरी, ताल धुमाली (महल्ला ६)

साधो ! रामशरण विश्रामा । टेक
वेद पुराण पढ़े को यह गुण, सुमिरे हरि को नामा ।।१।।
लोभ मोह माया ममता पुनि, अरु विषयन की सेवा ।
हर्ष शोक परसे[4] जेहि नाहीं, सो मूरत है देवा ।।२।।
स्वर्ग नरक अमृत विष ये सब, त्यों कञ्चन अरु पैसा ।
उस्तति निन्दा यह सम जाके, लोभ मोह पुनि तैसा ।।३।।
दुःख सुख यह बांधे जेहि नाहीं, तैं तुम जानो ज्ञानी ।
नानक मुक्त ताहि तुम मानों, यहि विधि को जो प्राणी ।।४।।

(२३९)

ज्ञानी की व्यापक दृष्टि

गज़ल, राग पीलू

जिधर देखता हूं, जहाँ देखता हूं ।
मैं अपना ही जल्वा[5] अयां[6] देखता हूं ।।१।।

---

१. जिस, २. तिसने, ३. युक्ति, ४. जिसे स्पर्श न करे, ५. प्रकाश, विभूति, ६. प्रकट, व्यक्त ।

न तन देखता हूं, न जां देखता हूं !
खुद ही को निहाँ[1] और अयां[2] देखता हूं ॥२॥

यह जो कुछ कि पैदा है सब ही तो मैं हूं ।
मैं कुल बहरे-हस्ती[3] की शां देखता हूं ॥३॥

अगर कोई अपने बिना जगत जाने ।
तो उसको मैं धोखा[4] रसां देखता हूं ॥४॥

कहूं किससे अब मैं यह राजे-हक़ीक़त[5] ।
यह आलम[6] सरापा गुमां[7] देखता हूं ॥५॥

(२४०)

मैं अगम अगोचर निर्विकार,
सब सूक्ष्म तत्व का परम सार ।
पावक में ज्वाला मम विकास,
रवि शशि ग्रह गण में मम प्रकाश ॥
मैं बहता हूं नित पवन संग,
लहराता हूं सहजल तरंग ।
मैं नर हूं पुनि मैं सुभग नारि,
मैं बालक हूं मैं ही कुमारि ॥

---

१. गुप्त, छुपा हुआ, अव्यक्त, २. स्पष्ट, प्रकट, व्यक्त, ३. अस्तित्व का समुद्र, ४. धोखा खाया हुआ, ५. असली रहस्य, भेद, ६. समस्त संसार, ७. भ्रम मात्र, भ्रम रूप ।

मैं ही हूं पुनि नवजात बाल,
मरणोन्मुख बूढ़ा अति विहाल।
मैं श्याम मक्षिका सिंह काल,
मैं हरित कीर दृग लाल लाल॥
मैं ही हूं जल में जलज मीन,
मैं ही तृण, मैं हूं तरु नवीन।
चंचल चपला घन घटा बीच,
मेरी ही छवि कवि रहे खींच॥
मैं ही सब ऋतु मैं हूं समुद्र,
मुझ में ही हैं सब वृहत् क्षुद्र।
मुझमें यह दृश्यादृश्यमान,
करते सुआदि मध्यावसान॥

फ़क़ीरी (त्याग)

(२४१)

काफी दीपचन्दी

मेरो मन लगा फ़क़ीरी में (टेक)
डंडा कुंडा लिया बग़ल में, चारों चक जागीरी में ।। मे० १
मंग तंग के टुकड़ा खाँदे, चलें चाल अम्मीरी में ।। मे० २
जो सुख देख्यो राम संगत में नारी है वज़ीरी में ।। मे० ३

(२४२)

जंगल का जोगी (योगी)

राग भैरवी, ताल तीन

हर हर ओ३म्, हर हर ओ३म् (टेक)

*यह कविता सन् १६०६ में टिहरी के वासिष्ठाश्रम के वन में उन दिनों बही थी जब राम से अन्त में अपना-नाम देने का स्वभाव भी छूट गया था ।

जङ्गल में जोगी बसता हैं, गह रोता है गह[1] हंसता है ।
दिल उसका कहीं न फंसता है, तन मन में चैन बरसता है ।। १ ।।
हर हर ओम् हर हर ओम्

ख़ुश फिरता नंग-मनंगा है, नैनों में बहती गंगा है ।
जो आ जाये सो चंगा है, मुख रंग भरा मन रंगा है ।। हर० २

गाता मौला[2] मतवाला[3] है, जब देखो भोला भाला है ।
मन मनका[4] उसकी माला है, तन उसका एक शिवाला है ।। हर० ३

नहिं पर्वा मरने जीने की, है याद न खाने पीने की ।
कुछ दिन की सुधि न महीने की, पवन रुमाल पसीने की ।। हर० ४

पास उसके पंछी[5] आते हैं, और दरिया गीत सुनाते हैं ।
बादल अशनान कराते हैं, वृछ[6] उसके रिश्ते नाते हैं ।। हर० ५

गुलनार[7] शफ़क़[8] वह रंग भरी, जोगी के आगे है जो खड़ी ।
जोगी की निगह[9] हैरां गहरी, को तकतीं रह रह कर है पड़ी ।। हर० ६

वह चाँद चटकता गुल जो खिला, इस मेहर[10] की जोत से फूल झड़ा !
फ़व्वारा फ़रहत[11] का उछला, फूहार[12] का जग पर नूर[13] पड़ा ।। हर० ७

(२४३)

अलविदा

---

१. कभी, २. ब्रह्मज्ञानी, आत्मवेत्ता, ३. मस्त, ४. माला का दाना, ५. पक्षी, ६. वृक्ष, दरख्त, ७. अनार के रंगवाली, ८. लाली जो आकाश में सूर्य के उदय व अस्त समय होती है, ९. दृष्टि, १०. सूर्य, ११. खुशी, आनन्द, १२. बौछार, बाछड़, १३. प्रकाश, तेज ।

राग पीलू, माल दीपचन्दी; वा राग भैरों, ताल शूल

अल्विदा[१], मेरी रियाज़ी[२] ! अल्विदा ।
अल्विदा ए प्यारी रावी[३] ! अल्विदा ।। १ ।।
अल्विदा, ऐ अहले-ख़ाना[४] ! अल्विदा ।
अल्विदा, मासूमे[५] नादां ! अल्विदा ।।२ ।।
अल्विदा, ऐ दोस्तो-दुश्मन[६] ! अल्विदा ।
अल्विदा, ऐ शीतो-ऊशन[७] ! अल्विदा ।। ३ ।।
अल्विदा, ऐ कुतबो-तद्रीस[८] ! अल्विदा ।
अल्विदा, ऐ ख़ुब्सो-तक़दीस[९] ! अल्विदा ।।४ ।।
अल्विदा, ऐ दिल[१०] ! ख़ुदा ! ले अल्विदा ।
अल्विदा-राम अल्विदा[११], ऐ अल्विदा ।। ५ ।।

(२४४)

त्याग का फल*

(महाभारत के कुछ श्लोकों का भावार्थ)

---

१. रुखसत हो, तुझे नमस्कार हो, २. गणित शस्त्र, ३. रावी एक दरिया का नाम है जो लाहौर में बहती है और जहां स्वामी जी रोज़ जाया करते थे, ४. घर के लोगों, अर्थात् स्त्री, ५. निष्पापी नादान बच्चे, ६. मित्र और शत्रु, ७. सर्दी और गर्मी, ८. पुस्तक और पढ़ाना, ९. बुरा भला, १०. ऐ चित्त ! तुझको और हे ईश्वर तुझको भी रुखसत (नमस्कार) हो, ११. ऐ रुखसत के शब्द तुझको भी रुखसत हो।

*यह कविता भी राम भगवान से सन् १९०६ में उन दिनों में बही थी जब अन्त में अपना नाम देना भी उनसे छूट गया था।

राग भैरवी, ताल दादरा, या राग जंगला, ताल धमाली, वा राग विहाग, ताल चलन्त

अपने मज़े की ख़ातिर गुल[1] छोड़ ही दिये जब ।
रूये-ज़मीं[2] के गुल्शन मेरे ही बन गये सब ।। १ ।।
जितने ज़ुबाँ[3] के रस थे कुल तर्क कर दिये जब ।
बस ज़ायके, जहाँ[4] के मेरे ही बन गये सब ।। २ ।।
ख़ुद के लिये जो मुझसे दीदों[5] की दीद[6] छूटी ।
ख़ुद हुस्न[7] के तमाशे मेरे ही बन गये सब ।। ३ ।।
अपने लिये जो छोड़ी ख्वाहिश[8] हवाख़ुरी की ।
बादे-सबा[9] के झोंके मेरे ही बन गये सब ।। ४ ।।
निज[10] की ग़रज से छोड़ा सुनने की आरज़ू[11] को ।
अब राग और बाजे मेरे ही बन गये सब ।। ५ ।।
जब बेहतरी के अपनी फ़िक्रो-ख़याल[12] छूटे ।
फ़िक्रो-ख्याले-रंगीं[13] मेरे ही बन गये सब ।। ६ ।।
आहा ! अजब तमाशा, मेरा नहीं है कुछ भी ।
दावा नहीं ज़रा भी इस जिस्मो-इस्म[14] पर ही ।। ७ ।।
यह दस्तों-पा[15] हैं सबके, आँखें यह हैं तो सबकी ।
दुनियाँ के जिस्म[16] लेकिन, मेरे ही बन गये सब ।। ८ ।।

---

१. पुष्प, फूल, २ पृथ्वी भर के बाग, ३. जिह्वा, ४. संसार भर के, ५. नेत्रों की, ६. दृष्टि, ७. सौन्दर्य, ८. इच्छा, ९. पूर्वा वायु, १०. अपनी वा स्वार्थ दृष्टि से, ११ इच्छा, १२. शोक, चिन्ता, १३. आनन्ददायक या भाँति-भाँति के विचार, १४. नाम व रूप, १५. हाथ-पैर, १६. शरीर।

(२४५)

राग शंकराभरण, ताल धमाली

घर मिले उसे जो अपना घर खोवे है ।
जो घर रक्खे सो घर घर में रोवे है ।।
जो राज तजे, वह महाराज करे है ।
धन तजे तो फिर दौलत से घर भरे है ।
सुख तजे तो फिर औरों का दुःख हरे है ।
जो जान तजे वह हर्गिज़ नहीं मरे है ।।
जो पलंग तजे वह फूलों पै सोवै है ।
जो घर रक्खे वह घर घर में रोवे है ।। १ ।।
जो परदारा[२] को तजे, वह पावे रानी ।
अरु झूठ वचन दे त्याग, सिद्ध हो वाणी ।
जो दुर्बुद्धी को तजे, वही है ज्ञानी ।
मन से त्यागी हो, ऋद्धि[३] मिले मन मानी ।।
जो सर्व तजे उसका ही सब कुछ होवे है ।
जो घर रक्खे सो घर में रोवे है ।।२।।
जो इच्छा नहीं करे, वह इच्छा पावे ।
अरु स्वाद तजे फिर अमृत भोजन खावे ।।
नहिं मांगे तो फल पावे जो मन भावे ।
है त्याग में तीनों लोक, वेद यही गावे ।।

---

१. दूर करे है, २. दूसरे पुरुष की स्त्री, ३. ऋद्धि सिद्धि, ऐश्वर्य और चमत्कार ।

जो मैला होकर रहे, वह मल धोवे है ।
जो घर[1] रक्खे वह घर घर में रोवे है ।। ३ ।।

(२४६)

लावनी राग धनासरी, ताल धमाली

नाहि मिले हरि धन के त्यागे, नाहि मिले राम जान तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो तन का अभिमान तजे ।। टेक
सुत दारा[2] या कुटुम्ब त्यागे, या अपना घर बार तजे ।
नाहि मिले है प्रभु कदापि जग का सब व्यवहार तजे ।।
कंद मूल फल खाय रहे, और अन्न का भी व्यवहार तजे ।
कपड़ा त्यागे नग्न हो रहे, और पराई नार तजे ।।
तो भी हरि नहिं मिले यह त्यागे, चाहे अपने प्राण तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो मन का अभिमान तजे ।। १ ।।
तजे पलङ्ग फूलों का और हीरे मोती लाल तजे ।
ज़ात की इज्ज़त, नाम तेज अरु कुल की सारी चाल तजे ।।
वन में निशिदिन[3] बिचरे और दुनिया का जंजाल तजे ।
देह को अपनी चाहे जलावे, शरीर की भी खाल तजे ।
ब्रह्मज्ञान नहीं हो तौ भी, चाहे वह अपनी शान तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो तन का अभिमान तजे ।। २ ।।
रहे मौन बोले नहिं मुख से, अपनी सारी बात तजे ।
बालापन से योग ले चाहे, तात[4] तजे या मात तजे ।।

---

१. घर से अभिप्राय वही परिच्छिन्न घर वा अहंकार से है, २. पुत्र, स्त्री,
३. रात दिन, सदा, ४. पिता ।

शिखा सूत्र त्याग जो करदे और अपनी उत्तम ज़ात तजे ।
कभी जीव को मारे ना और घात तजे अपघात[1] तजे ।।
इतना तजे तो क्या होवे जो तन का नहीं गुमान तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो तन का अभिमान तजे ।।३।।
रहे रात दिन खड़ा न सोवे, पृथ्वी का भी शैन[2] तजे ।
कष्ठ उठावे रहे दुखी नित, सुख और सारा चैन तजे ।।
मीठा होकर बोले सब से कड़वे अपने बैन[3] तजे ।
इतना त्यागे और देह अभिमान नहीं दिन रैन[4] तजे ।।
बनारसी नहिं मिले उसे हरि, चाहे सकल जहान तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो तन का अभिमान तजे ।।४।।

(२४७)

राग सोहनी, ताल ग़ज़ल

फ़क़ीरी ख़ुदा को प्यारी है, अमीरी कौन बिचारी है । टेक
बदन पर ख़ाक, सो है अकसीर फ़क़ीरों की है यही जागीर[5] ।
हाथ बाँधे हैं खड़े अमीर, बादशाह हो या हो वज़ीर ।
सदा[6] यह सच्च हमारी है, गदा[7] की ख़ुदा से यारी है ।।१।।
है उनका नाम सुनो दरवेश[8], कोई नहीं पावे उनसे पेश ।
ख़ुदा से मिले रहें हमेश, कोई नहीं जाने उन का भेष ।
कभी तो गिरिया-ओ-ज़ारी[9] है, कभी चश्मो[10] में ख़ुमारी[11] है ।।२।।

---

१. हत्या, धोखा, २. सोना, बिछौना, ३. शब्द, वाणी वाक्य, ४. रात, ५. रसायन, सबसे बढ़कर धन, ६. आवाज, ७. ध्वनि, ८. फ़क़ीर, ९. रोना पीटना, १०. नेत्र, आँख, ११. मस्ती ।

है उनका रुतबा बहुत बलन्द, ख़ुदा के तयीं हुआ पसन्द ।
बादशाह से भी है दोचन्द, उन्हें मत बुरा कहो हरचन्द ।
उनकी दिल पे सवारी है, ऐसी कहाँ तय्यारी है ? ॥३॥
चीथड़े शाल से हैं, आला[1], चश्म हर ताल से हैं आला ।
चने भी दाल से हैं आला, चलन हर चाल से हैं आला ।
ज़ख्म जो दिल पर कारी[2] है, वह ख़ुद मरहम बिचारी है ॥४॥
पावों में पड़ा जो है छाला, वह है मोतियों से भी आला ।
हाथ में फूटा सा प्याला, जामे-जमशेद[3] से भी आला ।
अगर कोई हफ़्त-हज़ारी[4] है, वह भी उन का भिखारी है ॥५॥
मकाँ लामकाँ[5] फक़ीरों का, निशाँ बे निशाँ फक़ीरों का ।
फ़ुक्र[6] है निहां[7] फक़ीरों का, ख़ुदा है ईमां फ़क़ीरों का ।
ताक़ते सब्र वह भारी है, मौत भी उन से हारी है ॥६॥
बढ़ गये बाल तो क्या परवाह, उतर गई खाल तो क्या परवाह ।
आ गया माल तो क्या परवाह, हुए कङ्गाल तो क्या परवाह ।
ख़ुदा ही जनाबे[8] बारी है, फुक्र की यही[9] क़रारी[9] है ॥७॥

(२४८)

आनन्द भैरवी, ताल ग़ज़ल

न ग़म दुनिया का है मुझको, न दुनिया से किनारा[10] है ।

---

१. उत्तम, २. सख्त, भारी, ३. जमशेद बादशाह का प्याला ४. एक पद वा खिताब होता है जिससे सात हजार सिपाहियों का अफसर अभिप्रेत है, ५. देश रहित, ६. त्याग दशा या त्यागपन, ७. गुप्त, छिपा हुआ, गुह्य, ८. बारा ताला अर्थात् भगवान की ड्योढ़ी ९. स्थिति, धैर्य, निष्ठा, १०. पृथकता, उदासीनता, अलहृदगी ।

न लेना है, न देना है, न हीला[1] है, न चारा[2] है ।।१।।
न अपने से मुहब्बत है, न नफ़रत ग़ैर[3] से मुझको ।
सभों को ज़ाते-हक़[4] देखूं, यही मेरा नज़ारा है ।।२।।
न शाही में मैं शैदा[5] हूं, गदाई[6] में न ग़म मुझ को ।
जो मिल जावे सोई अच्छा, वही मेरा गुज़ारा है ।।३।।
हूं कुफ्र इस्लाम से फ़ारिग़, न मिल्लत[7] से ग़रज़ मुझ को ।
न हिन्दू गिब्रवो[8]-मुसलिम हूं, सभों से पंथ न्यारा है ।।४।।

(२४६)

जोगी (साधु) का सच्चा रूप (चरित्र)

प्यारो ! क्या कहूं अहवाल[9] की अपने परेशानी ।
लगा ढलने मेरी आँखों से एक दिन ख़ुद ब ख़ुद पानी ।
यकायक आ पड़ी उस दम, मेरे दिल पर यह हैरानी ।
कि जिसकी हो रही है यह जो हर इक जा[10] सनाख्वानी[11] ।
किसी सूरत से उसको देखिये "कैसा है वह जानी[12]" ।।१।।
चढ़ा इस फिक्र का दरिया, भरा इस जोश में आकर ।
कि इक इक लहर उसकी ने, उड़ाया ले हवा ऊपर ।
क़रारो होशो-अक़्लो-सब्रो-दानिश[13] बह गये यक्सर[14] ।

---

१. बहाना, २. उपाय, इलाज, ३. दूसरों से, ४. ब्रह्मस्वरूप, ५. आसक्त, मोहित, ६. फ़क़ीरी, ७. मत, मतान्तर, ८. आग पूजने वाला, पारसी, ९. दशा, अवस्था, १०. जगह, देश, ११. स्तुति, १२. प्यारा, दिलवर, १३. स्थिरता, धैर्य, बुद्धि, सँतोष और समझ, १४. इकट्ठे, एक साथ ।

अकेला रह गया आजिज़[1], ग़रीबो[1] बेकसो[1] बेपर[1]।
लगा रोने कि इस मुश्किल की हो अब कैसे आसानी? ॥२॥

यह सूरत थी, कि जी[2] में, इश्क़ ने यह बात ला डाली।
मंगा थोड़ा सा गेरू और वहीं कफ़नी रंगा डाली।
बिना मुद्रे*, गले के बीच सेली[3] वरमला डाली।
लगा मुंह पर विभूत और शक्ल जोगी की बना डाली।
हुआ अवधूत जोगी, जोगियों में आप गुरु-ज्ञानी ॥३॥

उठाई चाह[4] की झोली, पियाला चश्म[5] का खप्पर।
बनाकर इश्क़ का कण्ठा, तलब[6] का सिर पै रख चक्कर।
मुण्डासा[7] गेरुआ बाँधा, रक्खा तिरशूल कान्धे पर।
लगा जोगी हो फिरने ढूंढ़ता उस यार को घर घर।
दुकाँ बाज़ार-ओ-कूचा ढूंढ़ने की दिल में फिर ठानी ॥४॥

लगी थी दिल में इक आतिश[8], धुआँ उठता था आहों का।
तमाशे के लिए हलक़ा[9] बंधा था साथ लोगों का।
तलब थी यार की और गर्म था बाज़ार बातों का।
न कुछ सिर की ख़बर थी और न था कुछ होश-पाओं का।
न कुछ भोजन का अन्देशा[10] न कुछ फ़िक्रे-अमल[11]-पानी ॥५॥

---

१. असहाय, अधीन, और निर्बल वा लाचार, २. दिन, ३. साधु बेष, कन्था, ४. भगवान से मिलने की इच्छा, ५. नेत्र, ६. जिज्ञासा, ७. सिर पर फ़क़ीरी पगड़ी, ८. आग, ९. घेरा (लोगों का समूह) जमाव, १०. ख्याल, सोच, फ़िक्र, ११. भांग गांजे की चिन्ता को फ़िक्रे-अमल पानी कहते हैं। * बटन और काज।

फिर ऐसे जोग का ठहरा अजब कुछ आन कर नक़्शा।
जो आया सामने मेरे, तो कहता उससे सुनता जा।
"कहो प्यारे! हमारे यार को तुम ने कहीं देखा ?"।
जो कुछ मतलब की वह बोला, तो उससे और कुछ पूछा।
वगर[1] यूं ही लगा कहने, तो फिर देना अनाकानी[2] ॥६॥

कभी माला से कहता था, लगाकर जप से "ऐ माला।
हुआ हूं जब से मैं जोगी, तू ही उस यार को बतला"।
कभी घबरा के हंसता था, कभी ले स्वाँस रोता था।
लबों से आह, आँखों से बहा पड़ता था दरिया सा।
अजब जंजाल में, चक्कर में डाले है परेशानी ॥७॥

कोई कहता था "बाबाजी! इधर आओ, इधर बैठो।
पड़े फिरते हो ऐसे रात दिन, टुक बैठो, सुस्ताओ।
जो कुछ दरकार हो मेवा मिठाई हुक्म फ़रमाओ"।
न कहना उससे "ले आओ", न कहना उसे "मत लाओ"।
खबर हरगिज न थी कुछ उस घड़ी अपनी, न बेगानी[3] ॥८॥

बड़ी दुविधा में था उस दम, कहाँ जाऊं! कहाँ देखूं?।
किसे देखूं? किसे पूछूं? किधर जाऊं? कहाँ ढूंढूं?।
करूं तदबीर क्या? जिससे मैं उस दिलदार को पाऊं।
निशाँ हरगिज़ न मिलता था, पड़ा फिरता था जूं मजनूं[4]।

---

१. और अगर, २. टाल मटोल करना, ३. दूसरे की, ४. मजनू (आदर्श आशिक़) की तरह।

अजब दरियाए वहशत की हुई थी आ के तुग्यानी[1] ।।६।।

उसी को ढूंढ़ता फिरता हुआ मसजिद में जा पहुंचा ।
जो देखा वाँ[2] भी है रोज़ा-नमाज़ों का ही इक चर्चा ।
कोई जुब्बे[3] में अटका है, कोई दाढ़ी में है उलझा ।
तसल्ली कुछ न पाई जब, तो आखिर वाँ से घबराया ।
चला रोता हुआ बाहर व अहवाले - परेशानी[4] ।।१०।।

यही दिल ने कहा "टुक मदरसे को झांकिए चलकर ।
भला शायद उसी में हो नज़र आ जाय यह दिलवर" ।
गया जब वां तो देखी, वाह वा ! कुछ और भी बदतर[5] ।
किताबें खुल रहीं हैं, मच रहा है शोरो-गुल यक्सर ।
हर इक मसले पै फ़ाज़िल कर रहे हैं बहसे-नफ़सानी[6] ।।११।।

चला जब वाँ से घबरा कर, तो फिर यह आ गयी जी[7] में ।
कि यह जगहा तो देखी, अब चलो टुक दैर[8] भी देखें ।
गया जब वाँ तो देखा, मूर्ति और घण्टों की झंकारें ।
पुकारा तब तो रोकर "आह ! किस पत्थर से सिर मारें ?" ।
कहीं मिलता नहीं वह शोख़, काफ़िर दुश्मने-जानी ।।१२।।

कहा दिल ने कि "अब टुक तीरथों की सैर भी कीजे ।
भला वह दिलरुबा[9] शायद उसी जगहा पै मिल जावे" ।

---

१. बाढ़ तूफान, २. वहां, ३. चोगा, लबादा, फ़क़ीरी लिबास, ४. परेशानी की अवस्था में, उद्विग्न, ५. और भी बुरी अवस्था ६. व्यक्तिगत वाद-विवाद, वा अपने-अपने ख्याल पर झगड़ा, ७. चित्त, ८. मन्दिर, ९. प्यारा, माशूक ।

बहुत तीरथ मनाये और किये दर्शन भी बहुतेरे ।
तसल्ली कुछ न पाई तब तो हो लाचार फिर वाँ से ।
मुहब्बत छोड़कर बस्ती की, ली राहे वियावानी[१] ।।१३।।

गया जब दश्तो-सहरा[२] में, तो रोया आह ! क्या करिये ?
कहाँ तक हिज्र[३] में उस शोख के रो रो के दिन भरिये ?
किधर को जाइये, और किसके ऊपर आसरा धरिये ?
यही बेहतर है अब तो डूबिये या ज़हर खा मरिये ।
भला जी जान के जाने में शायद आ मिले जानी ।।१४।।

रहा कितने दिनों रोता फिरा हर दश्त में नालाँ[४] ।
ग़रीबो-बेकसो-तनहा मुसाफिर बे वतन हैरां ।
पहाड़ों से भी सिर पटका, फिरा शहरों में हो गिरियाँ[५] ।
फिरा भूखा पियासा ढूंढ़ता दिलवर को सरगर्दां[६] ।
न खाने को मिला दाना, न पीने को मिला पानी ।।१५।।

पड़ा था रेत में और धूप में सूरज से जलता था ।
लगी थीं दिल की आँखें यार से, और दम निकलता था ।
उसी को देखने के ध्यान में हर दम निकलता था ।
वले महबूब[७] से कुछ हाय ! मेरा बस न चलता था ।
पड़े बहते थे आँसू लाला गूं[८] लाले-बदखशानी[९] ।।१३।।

---

१. जंगल का मार्ग, २. वन और जंगल का उजाड़, ३. बिरह, बियोग ४. रोते हुए, ५. रोता हुआ, रुदन करता हुआ, ६. परेशान, हैरान, अशांत, ७. प्यारा माशूक (अंतरात्मा) ८. लाल (सुर्ख) पुष्प की तरह, ९. बदखशां देश का जवाहर, हीरा ।

जब इस अहवाल को पहुंचा, तो वह महबूब बे पर्दा ।
वहीं, सौ बेक़रारी से मेरे बालीं[1] पै आ पहुंचा ।
उठाकर सर मेरा ज़ानूं[2] पै अपने रख के फ़रमाया ।
कहा "ले देख ले जो देखना है अब मुझे इस जा[3]" ।
अयां[4] करते हैं तुझ पे इस घड़ी यह भेद पिनहानी[5] ।।१७।।

यह सुन रख "पहले हम आशिक़ को अपने आज़माते हैं ।
जलाते हैं, सताते हैं, रुलाते बिलबिलाते हैं ।
हर इक अहवाल में जब ख़ूब साबित[6] उसको पाते हैं ।
उसी से आ के मिलते हैं, उसी को मुंह दिखाते हैं ।
उसे पूरा समझते हैं हम अपने ध्यान का ध्यानी" ।।१८।।

सदा[7] महबूब की आई, ज्युं ही कानों में वाँ[8] मेरे ।
वदन में आ गया जी और वहीं दुःख दर्द सब टेरे[9] ।
फिर आंखें खोल कर दिलवर के मुंह पर टुक नज़र करके ।
ज़मीनों-आस्मां[10] चौदह तबक़[11] के खुल गये परदे ।
मिटी इक आन में सब कुछ खराबी और परेशानी ।।१९।।

हुई जब आ के यकताई[12], दुई[13] का उठ गया पर्दा ।

---

१. सिरहाना, तकिया, २. घुटने, ३. जगह, ४. प्रकट करना, खोल देना, ५. गुह्य, छिपा रहस्य, ६. पक्का, पुखता, ठीक, सच्चा, ७. आवाज, ८. वहां, उस स्थान पर, ९. दूर हो गए, नष्ट हो गये, १०. पृथ्वी और आकाश, ११. चौदह लोक, १२. अभेदता, १३. द्वैत ।

जो कुछ वह्मो-गुमाँ[1] थे, उड़ गये इकदम में हो पारा[2] ।
नज़ीर[3] उस दिन से हमने फिर जो देखा खूब हर इक जा ।
वही देखा, वही समझा, वही जाना, वही पाया ।
बराबर हो गए हिन्दू मुसलमाँ गिब्रो-नसरानी[4] ॥२०॥

(२५०)

राग सोहनी, ताल दीपचन्दी

हर आन[5] हंसी, हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक़ मस्त फ़क़ीर हुए, फिर क्या दिलगीरी[6] है बाबा ॥ टेक
हैं आशिक़ और माशूक़[7] जहाँ, वहाँ शाह वज़ीरी है बाबा ।
ना रोना है, ना धोना है, ना दर्दे-असीरी[8] है बाबा ।
दिन रात बहारें चुहलें हैं, और इश्क़-सफ़ीरी[9] है बाबा ।
जो आशिक़ होय सो जाने हैं, यह भेद फ़क़ीरी है बाबा ॥१॥ हर०
है चाह फक़त इक दिल्वर की, फिर और किसी की चाह नहीं ।
इक राह उसी से रखते हैं, और किसी से राह नहीं ।
यां[10] जितना रंज-तरद्दुद[11] है, हम एक से भी आगाह[12] नहीं ।
कुछ मरने का सन्देह[13] नहीं कुछ जीने की परवाह नहीं ॥२॥ हर०

---

१. धोखा और भ्रम, २. पारा, धातु जैसे हवा में रखने से धूप से उड़ जाता है, वैसे प्यारे के दर्शन के तेज से धोखा या भ्रम इत्यादि सब दूर उड़ गए, ३. कवि का नाम, ४. पारसी लोग व ईसाई लोग, ५. समय, ६. उदासी, ७. प्रेमी और प्यारा दिलवर, ८. कैद होने का दर्द, ९. जैसे बुलबुल पक्षी पुष्प का प्रेमी (आशिक) है और प्रेम में बोलता रहता है, ऐसे ही अपने दिल्वर के नाम रटने वाला इश्क (प्रेम), १०. इस संसार में, ११. चिन्ता, १२. परिचित, सचेत, १३. डर ।

कुछ ज़ुल्म नहीं, कुछ ज़ोर नहीं, कुछ दाद[1] नहीं, फ़रियाद नहीं।
कुछ क़ैद नहीं, कुछ बन्द नहीं, कुछ जब्र[2] नहीं, आज़ाद नहीं।
शागिर्द नहीं, उस्ताद नहीं, वीरान नहीं, आबाद नहीं।
हैं जितनी बातें दुनिया की, सब भूल गये, कुछ याद नहीं ॥३॥ हर०

जिस सिम्त[3] नज़र भर देखे हैं, उस दिल्बर की फुलवारी है।
कहीं सब्ज़े की हरियाली है, कहीं फूलों की गुलकारी[4] है॥
दिन रात मगन ख़ुश बैठे हैं, और आस[5] उसी की भारी है।
बस आप ही वह दातारी[6] है और आप ही वह भंडारी है ॥४॥ हर०

नित इशरत[7] है, नित फ़रहत[8] है, नित राहत[9] है, नित शादी[10] है।
नित[11] मेहरो-करम[12] है दिल्बर[13] का नित ख़ूबी ख़ूब मुरादी[14] है।
जब उमड़ा दरिया उल्फ़त[15] का, हर चार तरफ़ आबादी है।
हर रात नई इक शादी है, हर रोज़ मुबारकबादी है ॥५॥ हर०

है तन तो गुल के रंग बना, और मुंह पर हर दम लाली है।
जुज़[16] ऐशो-तरब[17] कुछ और नहीं, जिस दिन से सुरत[18] संभाली है।
होठों में राग तमाशे का, और गत पर बजती ताली है।
हर रोज़ बसन्त और होली है, और हर इक रात दिवाली है ॥६॥

---

१. न्याय, इंसाफ़, २. सख्ती, मजबूरी, ३. तरफ़ ओर, ४. बेल बूटी को लगाना, ५. आशा, ६. सब कुछ देनेवाला, सबका दाता, ७. विषयानन्द, रंगरलियाँ, ८. ख़ुशी, आनन्द, ९. आराम, चैन, १०. आनन्द, ख़ुशी, ११. सर्वदा, हमेशा, १२. अनुग्रह और कृपा, १३. प्यारा, १४. आशापूर्ति, सत्य संकल्प, १५. प्रेम, १६. सिवाय, १७. ख़ुशदिली, आनन्द, राग रंग, १८. होश।

हम आशिक़ ऐसे सनम[1] के हैं, जो दिल्बर सबसे आला[2] है ।
उसने ही हम को जी[3] बख्शा, उसने ही हम को पाला है ।।
दिल अपना भोला भाला है, और इश्क़ बड़ा मतवाला है ।
क्या कहिये और नज़ीर[4] आगे ? अब कौन समझने वाला है ।।७।। हर०

(२५१)

राग यमन कल्याण, ताल चलन्त

न बाप बेटा, न दोस्त दुश्मन, न आशिक़ हैं हम सनम[5] किसी के ।
अजब तरह की हुई फ़राग़त[6] न कोई अपना, न हम किसी के । टेक

न कोई तालिब[7] हुआ हमारा, न हमने दिल से किसी को चाहा ।
न हमने देखीं खुशी की लहरें, न दर्दो-ग़म से कभी कराहा[8] ।
न हमने बोया, न हमने काटा, न हमने जोता, न हमने गाहा ।
उठा जो दिल से भरम का पर्दा, तो उसके उठते ही फिर, अहाहा ।१। टेक

यह बात कल की है जो हमारा, कोई था अपना, कोई बेगाना ।
कहीं थे नाती, कहीं थे पोते, कहीं थे दादा, कहीं थे नाना ।
किसी पै फटका, किसी पै कूटा, किसी पै पीसा, किसी पै छाना ।
उठा जो दिल से भरम का थाना,[9] तो फिर जभी से यह हमने जाना ।२। टेक

---

१. प्यारे, २. उत्तम, ३. प्राण, जिन्दगी, ४. दृष्टांत, मिसाल, कवि का नाम भी है, ५. प्यारा, माशूक, ६. फ़ुरसत, ७. जिज्ञासु, चाहने वाला, ८. आह भरना, ९. डेरा, अस्तित्व ।

अभी हमारी बड़ी दुकाँ थी, अभी हमारा बड़ा कसब था।
कहीं खुशामद, कहीं दरामद, कहीं तवाज़ो[1] कहीं अदब[2] था।
बड़ी थी ज़ात और बड़ी सिफात और बड़ा हसब[3] और बड़ा नसब[4] था।
खुदी[5] के मिटते ही फिर जो देखा, न कुछ हसब था न कुछ नसब था। ३
अभी यह ढब था किसी से लड़िये, किसी के पाओं में जाके पड़िये।
किसी से हक़[6] पर फसाद करिये, किसी से नाहक लड़ाई लड़िये।
अभी यह धुन[7] थी हमारे दिल में "कहीं बिगड़िये, कहीं झगड़िये।"
दुई के उठते ही फिर जो देखा कि अब जो लड़िये तो किससे लड़िये ॥४

(२५२)

राग धनासरी, ताल धमाली

वाह वा रे मौज फक़ीरां दी[8]। टेक
कभी चबावें चना चबेना, कभी लपट लें खीरां दी ॥
वाह वा रे ॥ १ ॥
कभी तो ओढ़े शाल दुशाला, कभी गुदड़िया लीड़ां दी ॥
वाह वा रे ॥ २ ॥
कभी तो सोवें रंग महल में, कभी गली अहीरां[9] दी ॥
वाह वा रे ॥ ३॥
भंग तंग के टुकड़े खान्दे, चाल चलें अमीराँ दी ॥
वाह वा रे ॥ ४ ॥

---

१. अनेक सत्कार, २. खातिरदारी, ३. कुल, उच्चपद से भी अभिप्राय है, ४. कुल खानदान, नसल, ५. अहंकार, ६. सच्चाई, ७. विचार, ख्याल, ८. की, ९. छोटी जाति के लोग।

(२५३)

राग पहाड़ी, ताल दारा

पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं। (टेक)
जो फ़ुक्र[1] में पूरे हैं, वह हर हाल में ख़ुश हैं।
हर काम में, हर दाम[2] में, हर चाल में ख़ुश हैं॥
गर माल दिया यार ने, तो माल में ख़ुश हैं।
बेज़र[3] जो किया, तो उसी अहवाल[4] में ख़ुश हैं॥
इफ़लास[5] में, अदबार[6] में इक़बाल[7] में ख़ुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में ख़ुश हैं॥१॥
चेहरे पै है मलाल[8] न दिल में असरे - ग़म[9]।
माथे पै कहीं चीन[10], न अब्रू[11] में कहीं खम[12]।
शिकवा[13] न ज़ुबाँ पर न कभी चश्म[14] हुई नम[15]।
ग़म में भी वही ऐश[16] अलम[17] में भी वही दम।
हर बात, हर औक़ात[18], हर अफ़आल[19] में ख़ुश हैं॥२॥ पूरे०
गर यार की मर्ज़ी हुई, सर जोड़ के बैठे।
घर बार छुड़ाया, तो वहीं छोड़ के बैठे।

---

१. त्याग, फ़कीरी, २. मूल्य, स्थिति वा चाल, ३. निर्धन, गरीब, ४. अवस्था, हालत, ५. गरीबी, निर्धनता, ६. अभाग्य, ७. जगत का वैभव, मान, प्रतिष्ठा, ८. रंज, उदासी, ९. फिक्र, गम का प्रभाव, १०. बल, बट, त्योरी, ११. भ्रू, भृकुटी, १२. टेढापन, तिरछापन, १३. उलाहना, शिकायत, १४. नेत्र, १५. भीगे हुए, आँसू भरना, अश्रुपात, १६. प्रसन्नता, खुशदिल, १७. रंज, दुखावस्था, १८. समय, काल, १९. काम।

मोड़ा उन्हें जिधर, वहीं मुंह मोड़ के बैठे ।
गुदड़ी जो सिलाई, तो वही ओढ़ के बैठे ।
और शाल उढ़ाई, तो उसी शाल में ख़ुश हैं ।।३।। पूरे०

गर उसने दिया ग़म, तो उस ग़म में रहे ख़ुश ।
मातम[1] जो दिया, तो उसी मातम में रहे ख़ुश ।
खाने को मिला कम, तो उसी कम में रहे ख़ुश ।
जिस तरह रखा उसने, उस आलम[2] में रहे ख़ुश ।
दुःख दर्द में, आफ़ात[3] में, जंजाल में ख़ुश हैं ।।४।। पूरे०

जीने का न अन्दोह[4], न मरने का ज़रा ग़म ।
यक्साँ है उन्हें ज़िन्दगी और मौत का आलम ।
वाक़िफ़ न बरस से, न महीने से वह इक दम ।
शब[5] की न मुसीबत, न कभी रोज़[6] का मातम ।
दिन रात, घड़ी पहर, महो-साल[7] में ख़ुश हैं ।।५।। पूरे०

गर उसने उढ़ाया, तो लिया ओढ़ दोशाला[8] ।
कम्बल को दिया तो वहीं काँधे पै संभाला ।
चादर जो उढ़ाई तो वही हो गयी बाला[9] ।
बंधवाई लंगोटी तो वही हंस के कहा, "ला" ।
पोशाक में, दस्तार[10] में, रुमाल में ख़ुश हैं ।।६।। पूरे०

---

१. रोना, पीटना २. अवस्था, हालत, ३. मुसीबत, दुःख, विपत्ति, ४. गम, शोक, ५. रात्रि, ६. दिन, ७. मास और वर्ष, ८. सुन्दर वस्त्र, ९. सुन्दर, १०. पगड़ी ।

गर खाट बिछाने को मिली, खाट में सोये ।
दूकाँ में सुलाया, तो उसी हाट में सोये ।
रस्ते में कहा "सो", तो वही बाट में सोये ।
गर टाट बिछाने को दिया, टाट में सोये ।
और खाल बिछा दी, तो उसी खाल में खुश हैं ।।७।। पूरे०

पानी जो मिला, पी लिया जिस तौर का पाया ।
रोटी जो मिली, तो किया रोटी में गुज़ारा ।
गर कुछ न दिया यार ने, तो भूख को मारा ।
दिल शाद रहे, करके कड़ाके पै कड़ाका[1] ।
और छाल चबाई, तो उसी छाल में खुश हैं ।।८।। पूरे०

गर उसने कहा "सैर करो जाके जहाँ की" ।
तो फिरने लगे जंगलो-बर[2] मार के झांकी ।
कुछ दश्तो-बियाबां[3] में खबरतन की न जाँ की ।
और फिर जो कहा, "सैर करो हुस्नेबुतां[4] की ।
तो चश्मो-रुखो-जुल्फोखतो-खाल[5] में खुश हैं ।।९।। पूरे०

कुछ उनको तलब[6] घर की, न बाहर से उन्हें काम ।
तकिया की न ख्वाहिश, न है बिस्तर से उन्हें काम ।
अस्थल[7] की हवस[8] दिलमें, न मन्दिर से उन्हें काम ।

---

१. निराहार, उपवास, २. वन और देश वा बस्ती, ३. जंगल और उजाड़, ४. सुन्दरता, ५. नेत्र, मुख, बाल और वज़ाक़ता में, ६. आवश्यकता, जिज्ञासा, ७. फकीरों के रहने की जगह, (खानकाह), ८. लालच, इच्छा, शोक ।

मुफलिस[1] से न मतलब, न तवङ्गर[2] से उन्हें काम ।
मैदान में, बाज़ार में, चौपाल[3] में ख़ुश हैं ।।१०।। पूरे०

(२५४)

राग धनासरी (महल्ला ६)

काहे रे वन खोजन जाई । टेक ।
सर्व निवासी, सदा अलेखा[4], तोहि[5] संग रहत सदाई ।।१।।
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, दर्पण में ज्यों छाई ।
तैसे ही हरि बसत निरन्तर, घट ही में खोजो भाई ।।२।।
बाहिर भीतर एको मानो, यह गुरु ज्ञान बताई ।
जन नानक बिन आपा[6] चीन्हें मटे न भ्रम की काई ।।३।।

---

१. निर्धन, गरीब, २. धनी, अमीर, ३. मंडप जहां गाँवों में सब बैठते हैं, ४. जो लखा अर्थात् देखा न जाय, ५. तेरे साथ, ६. अपने आपको पहचाने बिना ।

भजनों की वर्णानुक्रमणिका

—:०:—

भजन

द

ध

न

प

फ

स

ह

इति वर्णानुक्रमणिका समाप्त:

स्वामी रामतीर्थ ग्रन्थावली

		रु० पै०
१—अन्तरात्मा	...	३.००
*२—सफलता का रहस्य	...	६.२५
३—आत्मानुभव	...	४.००
४—विश्वानुभूति	...	४.००
५—धर्मतत्व	...	३.००
६—वेदान्त शिखर से	...	३.००
७—भारतमाता	...	३.००
८—अरण्य संवाद	...	३.००
९—सुलह कि ज़ंग : गंगा तरंग	...	७.००
१०—भक्तियोग–रहस्य	...	३.००
११—व्यावहारिक वेदान्त	...	३.००
*१२—रामहृदय	...	३.००
१३—राम-पत्र	...	३.००
*१४—राम वर्षा भाग १ [भजनावली]	...	६.२५
*१५— ,, भाग २ ,,	...	६.२५
*१६—राम जीवन कथा	...	१०.००
१७—नकद धर्म	...	०.६०
१८—राम के चुने हुए पद तथा वचन	...	०.५०
१९—उपासना	...	०.७५
२०—सुधार	...	०.३५
२१—हिन्दू समाज और समाजवाद	...	०.५०

वेदान्त के चार अपूर्व ग्रन्थ
आत्मदर्शी बाबा नगीनासिंह वेदी कृत

		रु० पै०
१—वेदानुवचन (नवीन संस्करण मुद्रण अवस्था में)	...	१२.५०
२—आत्म साक्षात्कार की कसौटी	...	३.००
३—भगवद्ज्ञान के विचित्र रहस्य	...	३.००
४—जगजीत प्रज्ञा	...	१.००

उर्दू

१—मयारूल मकाशफा	...	२.००
२—नारायण चरित्र	...	१.५०
३—साधारण धर्म	...	१.००

*नवीन संस्करण

List of Works
of
SWAMI RAMA TIRTHA

In Woods of God-Realization

Library Edition :

Size Demi Octavo in five volumes containing about 2,000 pages.

Price of Vol. I	Rs.	17.50
" " Vols. II & III each	Rs.	10.00
" " Vol. IV	Rs.	13.60
" " " V	Rs.	16.00

Popular Edition :

		Rs. P.
1.	The Pole Star Within	3.00
2.	The Fountain of Power	3.00
3.	Aids to Realization	3.00
4.	Cosmic Consciousness	3.50
*5.	The Spirit of Religion	6.25
*6.	Sight-seeing from the Hill of Vedanta	6.25
7.	India, the Motherland	3.50
*8.	Forest Talks	6.25
9.	Mathematics and Vedanta	3.00
10.	Snapshots and Impressions	3.00
11.	Upasana	1.25
12.	Reality of Religion	2.00
13.	Peace or War	2.00
14.	Rama's Thoughts & Ecstasy	1.75
15.	Flashes from the Himalayan Heights	1.75

Other Books (Concerning 'Rama's Life and Works) :

		Rs. P.
1.	Rama—His Note Book	6.00
2.	Rama—His Life by Sri B. N. Sharga	7.00
3.	Legacy of Swami RAMA by Sri B. N. Sharga	5.75
4.	Parables of RAMA	6.00
5.	Various aspects of RAMA	2.00
6.	Heart of RAMA	2.00
7.	Poems of RAMA	1.50
8.	Practical Vedanta	1.00
9.	Swami Rama Tirtha by S. R. Sharma	3.00
10.	Story of RAMA by S. Puran Singh	15.00
11.	Thus Spake Rama	1.25
12.	Swami Rama Tirtha : Great Mystic Poet of the Modern India	1.25

*New Edition